छोटा प्रदेश : पुनर्जन्म

लियोनिद इलिच ब्रेझनेव

शब्दकार, दिल्ली

प्रथम संस्करण

1978

मूल्य

दस रुपये

प्रकाशक

शब्दकार

2203, गली डकौतान

तुर्कमान गेट, दिल्ली-110006

मुद्रक

भारती प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

आवरण

अशोक धीमान

आवरण-मुद्रक

परमहंस प्रेस, नयी दिल्ली-110006

पुस्तक-बन्ध

खुराना बुक बाइंडिंग हाउस, दिल्ली-110006

प्रस्तावना

मैंने द्वितीय विश्व-युद्ध विषय से सम्बन्धित अनेक ग्रंथ पढ़े हैं, लेकिन किसी भी पुस्तक में उन इन्सानों की दिव्य आत्मा के दर्शन मुझे नहीं हुए, जिन्होंने इस युद्ध में भाग लिया और विजय प्राप्त की। लेकिन लियोनिद ब्रेझनेव के युद्ध विषयक संस्मरणों में उन इन्सानों की आत्मा की हृदयग्राही छवि के दर्शन पूर्ण रूप से होते हैं। किसी भी अन्य पुस्तक में युद्धोत्तरकालीन पुनर्निर्माण का इतना सजीव और वेगवान स्वरूप प्रकट नहीं होता, जितना कि ब्रेझनेव की इस पुस्तक में उपलब्ध, जिसका शीर्षक उचित ही "पुनर्जन्म" है।

सोवियत संघ ने युद्ध के दौरान जो प्रयास किये उनका विशाल आयाम केवल कुछ ही आंकड़ों के स्मरण मात्र से हो जायेगा। हिटलर की कुल सेना का तीन-चौथाई भाग सोवियत संघ के विरुद्ध सन्नद्ध रहा। इस युद्ध के दौरान 1 करोड़ जर्मन सैनिक व अधिकारी खेत रहे। सोवियतसंघ में जर्मन सेना के 500 डिवीजन और जर्मनी के मित्रों की सेनाओं के 100 डिवीजन खेत रहे जबकि मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने 176 जर्मन डिवीजन मौत के घाट उतारे। 16 मई 1942 को जनरल मैकार्थर के नाम लिखे अपने पत्र में राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने लिखा था कि "मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने कुल मिलाकर जितने शत्रु सैनिकों को मारा होगा और शत्रु-सामग्री नष्ट की होगी, उससे कहीं अधिक सैनिकों और माल को रूसी सेनाओं ने किया होगा।" चर्चिल ने कहा था कि रूसी सेना ही थी जिसने "जर्मन युद्ध-तंत्र को नेस्तनाबूद कर दिया।"

ये वक्तव्य और आंकड़े प्रभाव डालने वाले हैं, लेकिन यह सब किसी ऐसे व्यक्ति के मुंह से सुनना जो स्वयं युद्ध भूमि में संघर्षरत रहा हो, जो युद्ध में पहले ही दिन से लेकर अन्तिम दिन तक लड़ा हो, यथा एल० ब्रेझनेव, तब तो इनका महत्त्व ही कुछ और हो जाता है। उनकी "मालाया जेम्लिया" नामक पुस्तक में इस युद्ध के वीरतापूर्ण प्रकरणों के सस्मरण अंकित हैं।

मालाया जेम्लिया—"छोटा प्रदेश"—यही प्रिय नाम था, जो सोवियत सैनिकों ने उस छोटे-से भूखण्ड को दिया था, जिसे उन्होंने श्याम सागर के तट पर अपने अधिकार में ले लिया था। उस समय लगभग सम्पूर्ण देश-भूमि पर, जिसमें क्रीमिया, काकेशस, उक्रइन और रूस के कुछ भाग शामिल हैं, जर्मनों का अधिकार था। क्रीमिया के एक सेनेटोरियम में मैंने स्वयं 1957 में वह बर्तन और चम्मच-कांटे देखे थे, जिनपर स्वस्तिक चिन्ह अंकित थे तथा लिखा हुआ था : इन्हें नाजी भागते समय छोड़ गये थे। इससे पता चलता है कि नाजियों को यह दृढ़ विश्वास था कि वे क्रीमिया में सदा निवास करते रहेंगे।

मालाया जेम्लिया निर्जन पहाड़ी इलाका था, इसकी लम्बाई 24 किलोमीटर

थी, लेकिन इसको अधिकार में बनाये रखना इसलिए आवश्यक था क्योंकि क्रीमिया और काकेशस को आक्रामक चंगुल से छुड़ा लेने का श्याम सागर तट पर यही एकमात्र प्रवेशद्वार था। इसी ने काकेशस और ईरान होकर एशिया पर आक्रमण के लिए तैयार किये गये "वार्बारोज़ा योजना" को अमली रूप दे पाने में हिटलर का मार्ग अवरुद्ध किया हुआ था। मगर इस पदाधार को अपने अधिकार में किए रहना अत्यन्त दुष्कर कार्य था।

शीघ्र ही मालाया ज़ेम्लिया को भूमिगत दुर्ग के रूप में तब्दील कर दिया गया। यहाँ पर भूमिगत गोला-बारूद का भण्डार, भूमिगत अस्पताल और भूमिगत बिजली स्टेशन थे। इस पर शत्रु ने लगातार बमबारी की। शत्रु यहाँ से कुछ ही मीटरों की दूरी पर तो था। लोगों को न जाने कितने दिनों तक लगातार खाइयों में ही रहना पड़ा। सैनिकों को अनिर्वचनीय कठिनाइयों को झेलना पड़ा। वह मुख्यभूमि से बिलकुल ही कट गये और कभी-कभी तो नमक और पावरोटी तक की कमी आयी। फिर भी लोगों ने हौसला नहीं हारा। वे हँसी-मज़ाक करते रहे, समाचारपत्र निकालते रहे, सभाएँ करते रहे, शतरंज के टूर्नामेंट आयोजित करते रहे, जन्म-दिवस मनाने वाली पार्टियाँ और गीत एवं नृत्य प्रतियोगिताएँ करते रहे।

इन लोगों की वीरतापूर्ण भावनाओं का प्रतिबिम्ब इस वक्तव्य में मिलता है, जिसका मसौदा ब्रेझनेव ने तैयार किया था और जिस पर हज़ारों सैनिकों के अपने ही रक्त से हस्ताक्षर करके जोसेफ स्तालिन को भेजा था :

"हमने शत्रु से नोवोरोसिस्क के निकट धरती के जिस छोटे से टुकड़े को जीत लिया है, उसे हमने "मालाया ज़ेम्लिया" नाम दिया है। यद्यपि यह भूमि लघु है, फिर भी हमारी भूमि, सोवियत भूमि तो है। यह हमारे स्वेद एवं रक्त से आप्लावित है। हम यह भूमि किसी भी शत्रु को नहीं जीतने देंगे। हम अपने सैन्य-चिह्नों की सौगन्ध लेते हैं, अपने बीवी-बच्चों, अपनी प्यारी मातृभूमि की सौगन्ध लेते हैं, हम सौगन्ध लेते है कि हम शत्रु के विरुद्ध आगामी युद्धों में चट्टान की तरह अड़े रहेंगे, हम उसके सैनिकों के छक्के छुड़ा देंगे और तामान को नारकीय फासिस्टों से विहीन कर देंगे। हम इस छोटे-से धरती के टुकड़े को हिटलरियों के लिए विशाल श्मशान बना देंगे।"

"निष्ठा, घातक खतरों, अकल्पनीय कठिनाइयों और निस्वार्थ शौर्य" के 225 दिनों के बाद श्याम सागर के तट पर छिड़े युद्ध में पाँसा सोवियत संघ की तरफ पलटने लगा। जर्मनों को खदेड़ दिया गया और नोवोरोसिस्क नगर पर अधिकार प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस नगर पर नाज़ियों ने अधिकार जमा लिया था और इसे अभेद्य दुर्ग के रूप में परिवर्तित कर लिया था, लेकिन उन्हें केवल छह दिनों के भीतर ही मार भगाया गया।

ब्रेझनेव ने लिखा है, "आज लगभग एक तिहाई सदी पर यह सोचकर कि हमारी सेना के सैनिकों, कमाण्डरों और राजनीतिक अधिकारियों को क्या-कुछ झेलना पड़ा, ऐसे क्षण स्मरण आते हैं जब यह विश्वास करना असंभव प्रतीत होता है कि क्या वह सब-कुछ सचमुच ही घटा था। और क्या वह सब-कुछ उन्होंने

सचमुच ही झेला था। लेकिन ऐसा हुआ। उन्होंने सब-कुछ झेला, हर परिस्थिति में से गुज़रे, फ़ासिस्टों को कुचला और विजय हासिल की।"

और यही भावना रूसियों को उस दौर में भी अनुप्राणित करती रही, जब उन्होंने बिलकुल ध्वस्त भूमि के पुनर्निर्माण का कार्य सम्पन्न किया। उस समय की दशा, विध्वंस-वीरानी का वर्णन ब्रेझनेव के इन शब्दों मे सजीव हो उठा है :

"टेढ़े-मेढ़े गर्डरों और मलबे के नीचे से घास के तिनके सिर उठा रहे थे। कहीं दूर से इक्का-दुक्का कुत्ते के भौंकने की आवाज आती रहती थी। सब ओर विनाश ही विनाश दिखाई पड़ता था। जीवन का एकमात्र चिह्न कौओं के काले-काले घोंसले थे, जो युद्धाग्नि मे झुलसे पेड़ों की बची-खुची शाखों पर लटके थे।"

ब्रेझनेव ने अपना "पुनर्जन्म" शीर्षक प्रबन्ध इसी प्रकार प्रारम्भ किया है। इस पुस्तक में उन्होंने ज़ापोरोझ्ये-द्नीपर-पेत्रोव्स्क क्षेत्र के युद्धोत्तर पुनर्निर्माण का वर्णन किया है, जहाँ पर उन्हें युद्ध के तत्काल बाद प्रथम सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। झापोरोज्ये में 74 स्कूल, 24 अस्पताल, 2 तकनीकी संस्थान, 5 सिनेमाघर, 239 दूकानें और एक हज़ार विशाल भवन नष्ट किये जा चुके थे। द्नीपर बिजलीघर और झापोरोज्ये लौह एवं इस्पात कारखाने खण्डहर हो चुके थे। रूसियो के लिए इनका भावनात्मक महत्व ठीक उसी तरह से था, जिस प्रकार भारतीयों के मन मे भिलाई और भाखडा-नांगल के बारे मे भावनाएँ है।

जर्मनी के पराजित जनरल स्टुल्पनागेल ने जो युद्ध के दौरान द्नीपर क्षेत्र के कमाण्डर थे, हिटलर को यह कहकर आश्वासन दिया कि जो कुछ ध्वस्त हो चुका उसके पुनर्वासन में रूस को कम-से-कम 25 वर्ष दरकार होंगे। जब कि सच यह है कि रूस को ऐसा करने में 25 महीने से भी कम लगे।

लियोनिद ब्रेझनेव ने सौंपे गये कर्तव्य की पूर्ति के लिए अपनी अपूर्व ऊर्जा, उत्साह और युक्ति से कार्य किया। कहा जाता है कि शान्ति काल में भी युद्ध में अर्जित विजय से कुछ कम शानदार जीतें अर्जित नहीं की जाती। इस कथन का उत्कृष्ट उदाहरण ज़ापोरोझ्ये और द्नीपरपेत्रोव्स्क का पुनर्निर्माण है। इस विजय का रहस्य यह तथ्य है कि शान्ति और युद्ध दोनों ही में जनता को उन बलिदानों के महत्व का ज्ञान था, जो उनसे अपेक्षित थे।

ब्रेझनेव ने लिखा है, "हिटलरी सैनिको के पास युद्ध के लिए ज़रूरी सभी चीजें और साज़-सामान था, लेकिन फिर भी हमी जीते। इसका कारण यही था कि हम और हमारे नेतृत्व मे लड़ने वाले सैनिकों को उस ध्येय की गहन समझ थी, जिससे अनुप्राणित होकर हम भीषण गोलाबारी के बीच भी शत्रु की किलेबन्दियो पर प्रहार कर रहे थे।" क्षेत्रीय पार्टी के प्रथम सचिव के रूप मे ब्रेझनेव के कर्तव्यों में जनता मे इस गहरी समझ को उत्पन्न एवं विकसित करना था कि सोवियत संघ का आदर्श क्या है। यह कुछ कम कठिन उत्तरदायित्व नही था। इस कार्य में वे आज भी सोवियत संघ के राष्ट्रपति एवं पार्टी के महासचिव के रूप में राष्ट्रव्यापी पैमाने पर संलग्न हैं।

ब्रेझनेव इससे भी महत्वपूर्ण कार्य में भी संलग्न है। ब्रेझनेव ने लिखा है,

"यदि आज मुझसे कोई पूछे कि मैं उस युद्ध से, जिसमें मैं आदि से अन्त तक व्यस्त रहा सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष क्या निकालता हूँ तो मैं यही कहूँगा : और युद्ध कभी न हो। फिर युद्ध कभी न हो।" यही वह मूलभूत कर्तव्य है जिसके परिपालन मे महाशक्तियों के बीच और केवल महाशक्तियों के ही बीच नही बल्कि सामान्यतया तनाव शैथिल्य का यह महान शिल्पी संलग्न है।

ब्रेझनेव की रचनाएँ अत्यन्त रुचिकर इसलिए है क्योंकि वह मानव इतिहास के लोमहर्षक युग का चित्रण प्रस्तुत करती है। साथ ही वे उस इंसान के दिल और दिमाग की खूबसूरती की झाँकी भी प्रस्तुत करती है, जिसने हमारे युग के इतिहास मे केन्द्रीय भूमिका अदा की है और आज भी अदा कर रहा है।

हमारे देश मे ब्रेझनेव की रचनाओं के संस्करण का प्रकाशन हमारे यहाँ के लोगो के लिए अत्यन्त गहन, रुचिकर घटना है क्योंकि हमारे लिए ब्रेझनेव मात्र विश्व राजनेता अथवा अत्यन्त शक्तिशाली देश के शीर्षस्थ नेता ही नही, बल्कि हमारे देश के दीर्घकालिक मित्र हैं। भारत-सोवियत मित्रता के सुदृढीकरण मे उनका सहयोग काफी अर्से से और सतत रहा है।

हमारे देश मे वे पहली बार 1961 मे आये थे। उस समय जाग्रत एवं आत्म-विश्वास से परिपूर्ण भारत देश ने अपनी धरती से पुर्तगाली बस्तियों की मुक्ति के लिए दृढ कदम उठाये। भारत की इस कार्यवाही की पश्चिमी शक्तियों ने "आक्रमण" बताकर आलोचना की, लेकिन ब्रेझनेव ने अपने देश की ओर से भारत के इस मुक्ति-प्रयास के लिए उत्साहपूर्ण समर्थन में बिलकुल देर नही की।

1973 मे लियोनिद ब्रेझनेव ने इन देश की पाँच दिवसीय यात्रा की। इसके सुपरिणाम भारत और सोवियत सघ के बीच प्रमुख आर्थिक समझौतों के रूप में सामने आये। इन समझौतों ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग मे नया आयाम जोडा और इसे दीर्घावधि स्वरूप प्रदान किया।

तब से ब्रेझनेव भारत के साथ अपने देश के सम्बन्धो के महत्व पर बल देने का कोई भी अवसर नही चूके हैं। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की 25वीं कांग्रेस के समक्ष अपने प्रमुख भाषण मे उन्होने भारत के साथ राजनैतिक और आर्थिक सहयोग को सोवियत संघ की "स्थायी नीति" बताया।

दिल्ली मे 1973 मे आयोजित नागरिक स्वागत समारोह मे ब्रेझनेव ने जो कहा वह भारत-सोवियत मित्रता के स्थायी स्वरूप की समुचित व्याख्या है। मैं यहाँ पर उनके कुछ आश्वासन-पूर्ण एवं प्रेरणाप्रद शब्दो को उद्धृत करने का लोभ संवरण नही कर पा रहा।

उन्होंने कहा था, "भारत के साथ मैत्री एवं सहयोग सोवियत संघ की विदेश नीति का अभिन्न अंग है। हम भारत के लिए कठिन एवं दुर्धर्ष वर्षो में आपके साथ थे। हम तब भी आपके साथ थे जब विभिन्न विदेशी शक्तियाँ आपके देश पर दबाव डालने की चेष्टा कर रही थी, और आपका देश जीवन्त हितों का समर्थन कर रहा था। हम आपके आनंद में साथ होगे और विपत्ति के समय भी।"

के० पी० एस० मेनन

छोटा प्रदेश

छोटा प्रदेश

मैंने यद्यपि युद्ध के दिनों की डायरी नहीं रखी, परंतु 1418 जलते दिनों और रातों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उन दिनों ऐसी घटनाएँ घटीं, ऐसी मुठभेड़ें हुईं, ऐसी लड़ाइयाँ लड़ी गयी और ऐसे क्षण आये जो, जैसा कि अग्रिम पाँत के सभी सैनिकों के लिए सच है, कभी मेरी याद से नहीं मिटेंगे।

मैं आपको युद्ध के अपेक्षाकृत एक छोटे हिस्से में ले जाना चाहूँगा जिसे हमारे सैनिक और नाविक मालाया जेम्लिया (छोटा प्रदेश) कहते थे। यह सचमुच "छोटा" ही है—30 किलोमीटर से भी कम। लेकिन यह महान है, क्योंकि एक इंच जमीन भी निस्स्वार्थ वीरों के रक्त से सराबोर हो कर पवित्र बन जाती है। पाठक उस परिस्थिति का मूल्यांकन कर सकें, इसलिए मैं यह कह सकता हूँ कि जो व्यक्ति खाड़ी को पार कर सका और मालाया जेम्लिया पर पाँव रख सका उसे पदक से विभूषित किया गया। मुझे फ़ौजियों के पार उतरने की ऐसी कोई घटना याद नहीं है, जब फ़ासिस्टों ने हमारे सैकड़ों आदमियों को खत्म नहीं किया, या मौत के घाट नहीं उतारा। और फिर भी समुद्र-तट पर उस स्थान पर जिसे हमने शत्रुओं से छीन कर अपने कब्जे में कर लिया था, 12000-15000 सोवियत सैनिक मौजूद रहे।

17 अप्रैल, 1943 को मुझे पुनः मालाया जेम्लिया जाना पड़ा। मुझे वह तारीख़ अच्छी तरह याद है और मैं नहीं समझता कि जो व्यक्ति वहाँ उस समय मौजूद था, इसे कभी भुला पायेगा। यह वही दिन था जब हिटलरी दरिंदों ने "आपरेशन नेप्च्यून" (समुद्री कार्रवाई) शुरू किया था। यह नाम स्वयं उनकी योजनाओं का संकेत देता था—वे हमें समुद्र में खदेड़ देना चाहते थे। हम लोग गुप्तचर रिपोर्टों द्वारा इससे परिचित थे। हम जानते थे कि वे जिसकी योजना बना रहे थे वह साधारण हमला नहीं था, बल्कि सामान्य-रूप में निर्णायक आक्रमण

की योजना थी।

और मेरी ज़िम्मेदारी थी कि मैं नोवोरोसिस्क की बगल मे त्सेमेस्काया खाडी में, मालाया जेमिलया के संकीर्ण सागर-तट पर जो अंतरीप के समान उभरा हुआ था, अग्रिम मोर्चे पर उपस्थित रहूँ।

अप्रैल मे 18वीं सेना के राजनीतिक-विभाग के प्रधान के रूप मे मेरी बहाली हुई। चूँकि आगे युद्ध होने वाला था, अत: 18वीं सेना को उतरने वाली सेना के रूप मे पुनर्गठित किया गया था और दो पैदल दस्ते, दो डिविजन, कई रेजिमेंट और एक टैंक-ब्रिगेड की नयी कुमुक उसमें शामिल की गयी थी। कृष्ण सागर के जल-बेडे के नोवोरोसिस्क जल सैनिक अड्डे को इसकी फ़ौजी कमान के अधीन कर दिया गया।

युद्ध मे कोई लडने की जगह का चुनाव नहीं करता है, परंतु मैं यह स्वीकार करूँगा कि मैं अपनी बहाली से खुश हुआ था। 18वीं सेना को हमेशा सबसे बडे क्षेत्रो मे भेजा जाता था, इस पर हमेशा ध्यान देने की ज़रूरत होती थी और यह कहा जा सकता है कि मैं वहाँ दिन-रात लगा रहता था। मैं और सेना के कमाण्डर के० एन० लेसेलिद्ज़े तथा सैनिक परिषद के सदस्य एस० वाई० कोलोनिन एक-दूसरे को लंबे अर्से से समझने लगे थे। इसलिए मोर्चे के राजनीतिक-विभाग से इस सेना मे मेरा तबादला महज़ वास्तविक परिस्थिति को नियमित करना था।

पार करने का काम रात में ही होता था। जब मैं गेलेन्दझिक नगर के पोत-घाट पर या ओस्वोदोव्स्काया, जैसा कि पोतघाट को कहा जाता था, पहुँचा तो लंगर स्थान मे कही खुली जगह नही थी। हर प्रकार के पोत सारी जगह घेरे हुए थे। और लोग उन पर सवार थे तथा माल लदे हुए थे। मैं "सेइने-नेत्तेर" जहाज पर सवार हुआ। यह एक पुराना साधारण पोत था जिसमे हर जगह मछलियों की बू निकल रही थी। इसकी सीढ़ियाँ चरमराती थीं। बगल की और डेक की छडें छिल गयी थीं और धब्बेदार हो गयी थी और गोलों के टुकड़े और बुलेट से डेक में सुराख-ही-सुराख हो गये थे। यह स्पष्ट था कि इसे युद्ध के पहले समुद्र मे उतारा गया था और आज भी यह कठिन समय से गुज़र रहा था।

सागर से ताजा हवा के झोंके आ रहे थे और यह ठण्डी थी। सामान्यतया जाडे के मौसम मे उत्तर की अपेक्षा दक्खिन में रहना अधिक कठिन होता है। इसका कारण मेरी समझ में नही आता है परंतु बात यही है। सेइने-नेत्तेर को "ठहराया" जा रहा था जैसा कि मैंने देखा। जवान लोग विभिन्न बिंदुओं और स्तरो पर मशीनगन और टैंकरोधी राइफल खड़ी कर रहे थे। हर आदमी कमोबेश सुरक्षित स्थान की खोज कर रहा था, चाहे वह पतले तख्ते की दीवार ही क्यों न हो जिससे कि उससे सागर की हवा से हिफाज़त होती रहे। एक फ़ौजी चालक शीघ्र डेक पर आया और उसके बाद हर चीज़ हरकत में आ गयी।

यह अनपेक्षतया एक विचित्र दृश्य था। ऐसा प्रतीत हुआ कि अव्यस्वथा में ही जहाज़ पोताश्रय की ओर बढ़ रहे हैं। पर यह स्थिति प्रथम कुछ मिनटों के लिए ही थी। हर पोत अपने सही स्थान को जानता था। रित्ज़ा ने इस जुलूस का नेतृत्व किया और उसके पीछे मोटर-बोट, जिन्हें हम नं० 7 और 9 कहते थे, छक-छक करते आ रहे थे। सेइने-नेत्तेर उन्हें खींच रहा था। शेष डोरी से बँधे एक क़तार में 400-500 मीटर के अंतर पर खिंचे चले आ रहे थे और हम लोग मालाया जेम्लिया के लिए रवाना हुए। वहाँ हमारी रक्षा करने के लिए पीछा करने वाली पनडुब्बियाँ भी थीं।

मैंने अपनी तीन घंटे की यात्रा के दौरान नये लोगों से बातचीत करने की योजना बनायी। उनके बारे मे और अधिक जानना चाहता था। परंतु मैं उन्हें एक साथ जमा नही कर सका। सेना की टुकड़ी डेक पर बैठ चुकी थी और मैंने उन्हें उठाना मुनासिब नही समझा। इसलिए मैंने हर एक टोली मे जाना तय किया। किसी टोली से एक सवाल पूछ लेता, दूसरी जगह कुछ बातें कर लेता, अक्सर लंबे अर्से तक बातचीत करने के लिए बैठ जाता। मैंने देखा कि अधिकांश लोग युद्ध की आग मे तप चुके हैं और लड़ने की मुद्रा में हैं। मैंने पूरी तरह महसूस किया कि सैनिकों के साथ बातचीत करना आवश्यक था, परंतु मैं यह भी जानता था कि अक्सर सैनिकों के साथ बातचीत करने की अपेक्षा उनका यह अनुभव करना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि उनके अलावा राजनीतिक कर्मी, राजनीतिक नेता उनके साथ हैं और उतनी ही कठिनाई और खतरे बर्दाश्त कर रहे हैं। और, मुकाबले की स्थिति जितनी अधिक सख्त होती है, उतना ही यह अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

बहुत आगे नोवोरोसिस्क का आकाश चमक रहा था। तोपों की गरज गूंजती थी पर ध्वनि परिचित थी। हमारी बायीं ओर खासी दूर पर समुद्री लड़ाई हो रही थी। जैसा कि मुझे बाद में बताया गया, हमारे टारपीडो जहाज़ों और जर्मन टारपीडो जहाज़ों में सीधी टक्कर हो गयी थी। मैं जहाज के अधिकारियों के लिए निर्धारित ऊँचे स्थान पर चालक की बगल में जलयान के दक्षिण पार्श्व में खड़ा था; जहाँ तक मुझे याद है, उनका नाम सोकोलोव था।

उन्होंने कहा, "सैनिक एक बार उतरते हैं पर जहाजों का प्रबंध करने वाले लोग हर रात उतरते हैं। और हर रात एक लड़ाई होती है। वे शीघ्र इसके आदी हो जाते है। हम चालक प्रत्येक व्यक्ति के लिए ज़िम्मेवारी की विशेष भावना महसूस करते हैं। वस्तुत: हमें अक्सर पोत चालन करते हुए अपने मार्ग को 'महसूस' करना पड़ता है। स्थल पर सफरमैना सुरंग का क्षेत्र निर्धारित करते है, कुछ गलियों को साफ करते हैं और इसके बाद साहसपूर्वक सैनिकों को उस रास्ते से ले जाते है। परंतु जर्मन लोग हमारे मार्गों पर निरंतर सुरंगें बिछा रहे है—

वे विमान और जहाज दोनों ही मार्गों पर यह काम कर रहे हैं। हम लोग शायद कल किसी सुरक्षित जगह पर चले गये होते, परंतु आज हम उसी रास्ते पर बढ़ें तो हो सकता है कि किसी सुरंग से टकरा जायें।"

हम लोग त्सेमेस्काया खाड़ी पर आये, युद्ध की गरज और अधिक ज़ोरदार हो गयी। सागर-तट पर अक्सर रात में बमबारी नहीं होती है, परंतु अब शत्रु के बम-वर्षक विमान सागर की ओर लहरों के समान आ रहे थे, विस्फोट की गर्जन ने उनके इंजनों की घरघराहट को डुबो दिया। और इस प्रकार ऐसा प्रतीत हुआ कि विमान कोई आवाज किये बिना सरक रहे है। वे गोता लगाते और चक्कर काटते हुए तत्काल उड़ कर जाते। हमारे सैनिक मुस्तैद हो गये, उनके चेहरे अधिक कठोर हो गये और शीघ्र ही हम लोगों ने भी अपने को प्रकाश तरंग में पाया।

खाडी पार करते समय रात का अँधेरा आमतौर पर सिर्फ कहने के लिए था। जर्मन सर्चलाइटें किनारे से पानी मे रोशनी फेंक रही थीं, और हवाई जहाजों से फेंकी गयी रोशनी निरंतर हमारे ऊपर मँडराती रही। शत्रु की दो विध्वंसक नौकाएँ एकाएक कहीं से हमारे जहाज के दक्षिण पार्श्व की ओर प्रकट हुईं और हमारी पीछा करने वाली पनडुब्बियों ने तेज़ गोलीबारी करते हुए उनका मुकाबला किया। फासिस्टों के विमान तटवर्ती स्थानों पर भी बमबारी कर रहे थे।

बम लगातार गिर रहे थे, कभी काफी दूर और कभी एकदम नजदीक। उससे विशाल जलराशि की हिलोरें उठती जो सर्चलाइटों और बहुरंगी ट्रेसर गोलियों से रोशन होकर इंद्रधनुष के सभी रंगों से आलोकित हो उठती। हम हर क्षण गोली लगने की आशंका कर रहे थे, लेकिन फिर भी जब हमारे ऊपर प्रहार हुआ तो हम उसके लिए तैयार नहीं थे। शुरू मे मैं समझ नहीं सका कि क्या हुआ था। आगे कहीं तेज धमाका हुआ, आग की एक लपट ऊपर उठी और ऐसा लगा कि जहाज मे विस्फोट हो गया है। और सचमुच यही हुआ था : हमारा सेइने-नेत्तेर एक सुरंग से टकरा गया था। चालक और मैं अगल-बगल खड़े थे, और विस्फोट के कारण हम दोनो ही हवा मे उछाल दिये गये थे।

मुझे किसी पीड़ा की अनुभूति नहीं हुई, और मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि मेरे मन मे मृत्यु का विचार भी नहीं आया। मौत अपने नाना रूपों में मेरे लिए कोई नयी चीज़ नहीं थी और यद्यपि कोई सामान्य व्यक्ति उसके प्रति कभी आसक्त नहीं हो सकता, फिर भी युद्ध उसे निरंतर यह सोचने के लिए विवश कर देता है कि मौत उसके पास तक भी पहुँच सकती है।

आप कभी-कभी पढते हैं कि ऐसे मौकों पर आदमी अपने सभी प्रियजनों को याद करता है, उसकी पूरी जिंदगी उसके आगे कौंध जाती है और वह अपने बारे में कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण चीज समझ लेने मे भी कामयाब होता है। शायद

कुछ मामलों से ऐसा हो, लेकिन उस समय मेरे दिमाग मे एकमात्र विचार यह कौंधा कि मुझे अब फिर अपने जहाज़ के डेक पर नहीं गिरना चाहिए।

सौभाग्यवश मैं सेइने-नेत्तेर से काफ़ी दूर पानी में गिरा और जब मैं सतह पर उतराया तो देखा कि जहाज़ डूब रहा था। कुछ लोग मेरी ही तरह विस्फोट के कारण पानी में उछाल दिये गये थे, और दूसरे पानी मे कूद पडे थे। मैं बचपन से ही अच्छा तैराक था—आखिर मैं द्नीपर में बड़ा हुआ था—और पानी में अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहा था। मेरी साँस थम गयी, मैंने इधर-उधर निगाह दौड़ायी और देखा कि दोनों मोटर-नौकाओं ने अपनी टो-लाइन्स खोल दी थीं और धीरे-धीरे हमारी ओर बढ रही थी।

मैंने अपने आपको नौका नं० 9 के नजदीक पाया। चालक सोकोलोव भी तैर कर उसके पास आ गये। गार्ड रेलिंग को पकड़े हुए हमने सबसे पहले उन लोगों को नाव पर चढने में मदद की जो हथियारों और गोलाबारूद के वज़न के कारण सतह पर तैरते रहने में असमर्थ थे। नाव पर सवार दूसरे लोगो ने उन्हें ऊपर खीचा। मुझे बिलकुल ठीक-ठीक याद है, उनमें से किसी ने भी अपने हथियार नहीं फेंके।

सर्चलाइटो की रोशनी ने हमें खोज लिया था, और मनहूस मौत की तरह हमारे ऊपर ही मँडराती रही। इसके साथ ही मिसखाको के पश्चिम में शिरोकाया दर्रे से जर्मन तोपखाने ने हमारे ऊपर गोलाबारी शुरू करदी। उनके निशाने ठीक नहीं बैठ रहे थे लेकिन धमाकों के कारण नाव इधर-उधर हिल रही थी। तब एकाएक, यद्यपि गड़गड़ाहट बंद नही हुई थी, हमारे आसपास गोले फटने बंद हो गये। शायद हमारी बदूकों का निशाना दुश्मन के तोपखाने पर जा लगा था। उसी क्षण, मैंने किसी के नाराजी से चिल्लाने की आवाज़ सुनी :

"तुम बहरे हो या कोई और बात है ? हमे अपना हाथ पकड़ाओ।"

जैसा कि बाद मे पता चला, यह मँझले अफ़सर (द्वितीय श्रेणी) जिमोदा थे, जो मेरी ओर हाथ बढाकर चिल्लाये थे। वह पानी में मेरे कंधे की पट्टियाँ नही देख पाये थे, लेकिन उस समय इससे कोई खास फर्क नही पड़ता था। धावा बोलने वाली नौकाओं के लिए बहुत गहराई की ज़रूरत नही होती और वे पानी के ऊपर काफी नीची होती है। मैं गार्ड रेलिंग पकड़ कर झटके से ऊपर उठा और मज़बूत हाथों ने मुझे ऊपर खीच लिया।

इसके बाद ही मैंने महसूस किया कि मुझे कँपकँपी छूट रही थी। कृष्ण सागर मे भी तैरने के लिए अप्रैल सबसे अच्छा महीना नही होता। सेइने-नेत्तेर डूब चुका था। सैनिक अपने कपड़े उतारते हुए धीमी आवाज़ में कोस रहे थे : "लानत है उस बुरे फ़िट्ज पर !" वे सभी धीरे-धीरे शांत हो गये, और सन्दूकों और गाँठो के पीछे अपनी-अपनी जगह बना ली। कुछ मुड़-तुड़कर या टाँगें पसार कर लेट

गये, मानो यह स्थिति उन्हे कोई सुरक्षा प्रदान कर रही हो। लेकिन हमारा असली काम तो आगे था। मुख्य चीज वह लड़ाई थी जिसमे हमे भाग लेना था।

और उस विकट स्थिति मे भी, विस्फोटों और ट्रेसर गोलियों की रोशनी में एकाएक एक गीत फूट पडा। एक नाविक जो, मुझे याद है, बहुत लम्बे क़द का था, गाना गाने लगा। यह मालाया जेम्लिया में जन्मा गीत था; यह हमारी नाव पर सवार लोगो के समान योद्धाओं की शक्ति और अदम्य साहस के बारे में था। मैं इस गीत को जानता था, लेकिन मुझे लगा कि यह गीत मैंने वहीं पहली बार सुना। उसकी एक कडी तो मुझे अब तक याद है: "इन काठ की खोलों में सफर करते है लोहे के आदमी।"

धीरे-धीरे लोग सिर उठाने लगे। जो लोग डेक पर लेटे थे वे बैठ गये, जो बैठे थे उठ कर खडे हो गये, और तब दूसरे लोगों ने भी गीत मे साथ देना शुरू कर दिया। मुझे वह क्षण कभी नही भूल सकता। गीत ने उन्हे फिर से अपने कंधे सीधे करने के लिए प्रेरित किया। अभी-अभी वे जिस विपत्ति से गुजरे थे उसे मानो भूल कर हर आदमी पहले से अधिक विश्वास से भर उठा और लड़ाई के लिए सन्नद्ध हो गया।

नाव जल्दी ही तली को छूने लगी और हम कूदकर किनारे पर उतरने लगे। सैनिक आदेशों के स्वर गूंजे, और सिपाहियों ने हथियार-बक्सों को उतारना शुरू किया, जबकि दूसरे उन्हे कंधों पर लाद कर सुरक्षित स्थानों की ओर भागने लगे—उनसे कुछ कहने की जरूरत नहीं थी, निरंतर हो रही गोलाबारी ने उन्हे खुद इसके लिए विवश कर दिया। एक बोझ उतार कर ज़मीन पर रखने के बाद ही वे दूसरे के लिए दौड़ पड़ते, और यह सारा काम गोलियों की बौछारों के बीच, लगातार बमबारी के बीच किया गया। इस बीच घायल सैनिकों को, जिनकी जगह लेने के लिए हमारे सैनिक आये थे, हटाने की तैयारी की जा चुकी थी और उन्हे स्ट्रेचरो पर लाद कर तट से हटाने का काम शुरू कर दिया गया था।

किनारे की ढलवाँ पट्टी कंकरीली थी, और उसके परे एक पहाड़ी के गड्ढे और खाइयाँ सुरक्षित स्थान का काम दे सकती थीं। सैनिकों को गोलीबारी से बचने के लिए वहीं पहुँचना था, और तब 15 मीटर और चढकर एक खाई मे कूदना था जो मालाया जेम्लिया के मध्य भाग तक ले जाती थी। और मैं फिर कह रहा हूँ कि, यद्यपि असली काम अभी भी आगे था, तथापि हमारे आदमी जब तक इस स्थल पर पहुँचे, उनकी उत्तेजना शांत हो चुकी थी। यहाँ से संचार संबंध क़ायम करने वाली खाइयों में आगे बढते हुए तट पर लड़ाई में संलग्न किसी भी यूनिट के पास तक और संभवत: किसी भी सब-यूनिट तक पहुँचा जा सकता था।

पार करना हमेशा जोखिम का काम था। समुद्र से यात्रा करना अपने आप

मे ही ख़तरनाक था, और उसी तरह सामान उतारना, हिफ़ाज़त की जगहों पर पहुँचना और पहाडी पर चढना भी। लेकिन जब भी मैं मालाया जेम्लिया लौटता एक खास विचार मेरे ऊपर हावी होता जाता—यह कि हमारे सैनिक यहाँ पहली बार किस तरह उतरे थे, जब जर्मन मशीनगनें ठीक वही तैनात थीं जहाँ वर्तमान जीवनरक्षक स्थल बने हुए थे और हिटलरी दरिंदे सब-मशीनगनों और हथगोलों से लैस होकर, हमारी तट पर उतरती सेना की नजरों से ओझल इन्हीं संचार क़ायम करने वाली खाइयों में दौड लगा रहे थे। हर कोई जिसने एक क्षण के लिए भी यह सोचा कि पहले यहाँ उतरने वाली सेना के लिए सब कुछ कितना कठिन था, वह अपने-आपको शायद कहीं अधिक ताकतवर महसूस करने लगा।

कुछ भी हो, हमने मालाया जेम्लिया पर अपना क़ब्ज़ा उतने दिनों तक जमाये रखा जितना कि सोवियत कमान की योजना के अनुसार ज़रूरी था, अर्थात 255 दिनों तक। हमने ये दिन किस तरह बिताये, यही मैं आपसे बताना चाहता हूँ।

□ □

हमे युद्ध की जरूरत नही थी। लेकिन जब यह शुरू ही हो गया तो महान सोवियत जनता आक्रमण के विरुद्ध लोहा लेने के लिए उठ खड़ी हुई। मुझे याद है कि 1940 में द्नीप्रोपेत्रोव्स्क की क्षेत्रीय पार्टी समिति ने एक बार प्रवक्ताओं (लेक्चरर्स) का एक सम्मेलन बुलाया। उन दिनों मैं सेना संबंधी व देशभक्तिपूर्ण प्रचार-कार्य में खास ध्यान देता था, और हम वहाँ इसी के बारे में बात कर रहे थे। हमने जर्मनी के साथ एक अनाक्रमण संधि संपन्न की थी। अखबारों मे मोलोतोव और हिटलर की, रिबनट्राप और स्तालिन की मुलाकातों के फोटो छापे गये थे। इस संधि से हमे साँस लेने के लिए, देश की रक्षा-व्यवस्था निर्मित करने के लिए कुछ समय मिल गया जो बहुत जरूरी था। लेकिन हर कोई इसे समझता नही था। मुझे याद है, मानो सब कुछ अभी कल की ही बात हो, कि कैसे सम्मेलन मे एक आदमी, जिसका नाम माख्नो था और जो एक प्रवक्ता था, उठा और कहा :

"कामरेड ब्रेझनेव, हमे अनाक्रमण संधि के बारे में लोगों को समझाना है कि यह सच्ची भावना से की गयी है, और जो कोई भी यह विश्वास नही करता वह उकसावे की बातें कर रहा है। लेकिन लगता है, लोगों को इसमें अधिक विश्वास नहीं है। इसलिए हम क्या कर सकते हैं? हमें इसके बारे में लोगों को समझाना चाहिए या नहीं?"

यह एक कठिन क्षण था। सभा-भवन में चार सौ लोग बैठे थे और सभी मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस मामले पर अधिक सोचने का समय नहीं था।

"हाँ, हमें जरूर समझाना चाहिए," मैंने उत्तर दिया, "और साथियो, हम तब तक समझाते रहेंगे जब तक कि हम फ़ासिस्ट जर्मनी को धूल में नहीं मिला देते।"

उस समय मैं दनीप्रोपेत्रोव्सक में क्षेत्रीय पार्टी समिति में प्रतिरक्षा उद्योग के मामलों से संबधित सचिव था। और यद्यपि ऐसे कुछ दूसरे लोग ही हो सकते थे जो अपने आपको आत्मसंतोष दे सकते हों, लेकिन मुझे बराबर यह सोचना पडता कि आगे क्या होने वाला था। मेरे ऊपर कई महत्वपूर्ण और आवश्यक मामलों की ज़िम्मेदारी थी, ये मामले उस शक्तिशाली प्रतिरक्षा समुच्चय के—जैसा कि उन दिनों दक्षिण उक्रइन, खासतौर से दनीपर का तटवर्ती क्षेत्र बना हुआ था—संगठन और समन्वय से संबधित थे।

वे कारखाने जो केवल शांति-काल में काम आने वाली वस्तुएँ बनाया करते थे, सैन्य उत्पादन के कारखानों में बदल गये, धातुकर्मी विशेष प्रकार के इस्पात बनाना सीखने लगे। मुझे कई जन-कमिसारियतों से संपर्क बनाये रखना पड़ता, मास्को तक की उड़ानें भरनी पड़ती और क्षेत्र के एक छोर से दूसरे छोर तक अंतहीन यात्राएँ करनी पड़ती। हमारे लिए कोई अवकाश का दिन न होता, और मुझे अपने परिवार के लोगों से मिलने का समय तो मुश्किल से ही मिल पाता। मुझे याद है कि 21-22 जून 1941 की रात को मैं क्षेत्रीय समिति के कार्यालय में देर तक काम करता रहा, फिर मोटर से एक सैनिक हवाई-अड्डे तक गया जो दनीप्रोपेत्रोव्स्क के पास बन रहा था। यह हवाई अड्डा सैनिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था और इसे केंद्रीय कमेटी की देखरेख में बनाया जा रहा था। काम रात-दिन चला करता और मैं वहाँ से सुबह के करीब ही लौट सका।

घर के निकट पहुँचते-पहुँचते मैंने फाटक की बगल में एक कार खडी देखी। यह के० एस० ग्रुशेवोई की थी, जो उस समय क्षेत्रीय समिति के कार्यकारी प्रथम सचिव थे। मैंने तुरंत ही समझ लिया कि कोई ख़ास बात हो गयी थी। खिडकी से बाहर छनती रोशनी सुबह के उजाले में कुछ अटपटी लग रही थी। उन्होंने खिड़की से बाहर झाँका, मुझे ऊपर आने का इशारा किया और सीढियाँ चढ़ते हुए मैं समझ गया कि कुछ गड़बड़ी थी। लेकिन तब भी "युद्ध" शब्द सुनकर मैं चौंक पड़ा। और उसी क्षण, एक कम्युनिस्ट के रूप में मैंने दृढतापूर्वक और अडिग रूप से यह तय कर लिया कि मुझे कहां होना चाहिए। मैंने केंद्रीय समिति के पास अनुरोध भेजा कि मुझे मोर्चे पर भेज दिया जाये—और मेरा अनुरोध उसी दिन स्वीकृत हो गया। मुझे दक्षिणी मोर्चे के सदर मुकाम के अधीन काम करने के लिए भेज दिया गया।

मैं पार्टी की केंद्रीय-समिति का शुक्रगुजार हूँ कि उसने युद्ध के शुरुआती दिनों से ही मोर्चे की सेना के साथ रहने की मेरी इच्छा को समझा। मैं इस बात के लिए कृतज्ञ हूँ कि 1943 मे जब हमारे देश का कुछ हिस्सा मुक्त किया जा चुका था तब पार्टी ने मेरी इस इच्छा को स्वीकार किया कि अग्रिम मोर्चे के कई अन्य पार्टी कार्यकर्ताओ के साथ, जो प्रशासनिक कार्य के लिए पृष्ठ प्रदेशों मे भेजे जा रहे थे, मुझे वापस न बुलाया जाये। मैं इस बात के लिए भी कृतज्ञ हूँ कि पार्टी ने मेरा यह अनुरोध स्वीकार कर लिया कि मेरी पदोन्नति, जो मुझे सीधे सैनिक कार्रवाई के मोर्चे से अलग कर देती, न की जाये और मुझे युद्ध खत्म होने तक 18वीं हमलावर सेना के साथ ही रहने दिया जाये। इन सबमें मेरा एकमात्र मार्ग-दर्शक विचार था अपने देश की रक्षा करना, शत्रु के विरुद्ध प्राण-पण से युद्ध करना, युद्ध के खत्म होने तक, पूर्ण विजय तक लड़ाई को जारी रखना। एकमात्र यही रास्ता था जिससे धरती पर फिर से शांति स्थापित हो सकती थी।

मेरी मोर्चे की जिंदगी 18वीं सेना के साथ जुड़ी हुई है जो मेरे लिए सदा के वास्ते एक प्रिय और निकट की चीज़ बन गयी है। 18वीं सेना के साथ ही मैंने काकेशस मे जहाँ हमारे देश के भाग्य का फ़ैसला हो रहा था, युद्ध मे भाग लिया, इसी के साथ मैंने उक्रइन के मैदानों में लड़ाई लड़ी, कार्पेथियाई पर्वतों को पार किया, और पोलैण्ड, रूमानिया, हंगरी और चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति मे भाग लिया। इसी सेना के साथ मैं मालाया जेम्लिया में भी था जहाँ इसने नोवोरोसिस्क और संपूर्ण प्रायःद्वीप को मुक्त करने में बहुत बड़ी भूमिका निभायी।

कभी-कभी आदमी अपने आपको ऐसी स्थिति मे पाता है जब वह एक ही वर्ष में इतना सीख लेता है, इतना झेल लेता है, जो किसी दूसरी स्थिति में पूरे जीवन के अनुभव से भी ज्यादा होता है। इस तटवर्ती प्रदेश पर जो घटनाएँ घटीं वे इतनी घनीभूत थी, और लड़ाई इतनी भयानक और घमासान, कि लगता था मानो वह 255 दिन तक ही नही बल्कि अनन्त काल तक चलती रही। और हमने यह सब कुछ झेला।

भौगोलिक रूप से मालाया जेम्लिया का अस्तित्व नगण्य है। जो कुछ हुआ उसे समझने के लिए तटवर्ती सूखे, चट्टानी जमीन के टुकड़े की कल्पना कीजिए जो आगे की ओर छह किलोमीटर लम्बी और साढे चार किलोमीटर चौड़ी एक सँकरी पट्टी थी। हमें उसकी हर हालत मे रक्षा करनी थी।

जमीन का यह खास टुकडा ही तट का रक्षित स्थान क्यों बना? नोवोरो-सिस्क त्सेमेस्काया खाड़ी के किनारे पर है जो पर्वतों मे दूर तक चला गया है। वहाँ दो सीमेंट कारखाने हैं, प्रोलितारी और ओक्त्याब्र। इसके एक ओर हम लोग थे और दूसरी ओर जर्मन। 1943 के शुरू मे सारा बायाँ किनारा दुश्मन के कब्जे मे था, उस ऊँचे स्थल से वह हमारे बेडे की गतिविधियों को नियंत्रित कर रहा था।

उसकी यह लाभजनक स्थिति खत्म करनी थी। इसी कारण वहाँ एक हमलावर सेना उतारने और नोवोरोसिस्क के सीमांत क्षेत्र को दुश्मन के हाथ से छीन लेने का विचार पैदा हुआ। यह सिर्फ एक ऐसी भरोसेमंद जगह ही नहीं थी जहाँ से दुश्मन को खाड़ी मे प्रवेश करने से रोका जा सकता था, बल्कि वहाँ से हमारी आगे की कार्रवाइयाँ काफी आसान हो जाती थी।

हिटलरी सेना भी इस बात को अच्छी तरह समझती थी। मैं कोशिश करूँगा कि बहुत ज्यादा आँकड़े न दूँ, लेकिन इस समय एक आँकड़ा देना जरूरी है; हमने जब तटवर्ती ऊँचे स्थल को कब्जे में ले लिया तो फासिस्ट उस पर लगातार बमबारी और गोलाबारी करने लगे और हमारे ऊपर बम-गोलों की जबर्दस्त बारिश की, सब-मशीनगनों और मशीनगनों से की जाने वाली गोलियों की बौछार की तो चर्चा ही क्या की जाये। अनुमानतः मालाया जेम्लिया के प्रत्येक रक्षक के लिए 1250 किलोग्राम बम गोले बरसाये गये।

18वीं सेना का लगभग दो-तिहाई हिस्सा इस तट पर लड़ रहा था और मैं अपना अधिकांश समय मालाया जेम्लिया पर ही बिताता था। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि गोले-बारूद की इस भारी बौछार मे कुछ तो मेरी ओर निर्देशित थे ही।

मेरा विचार है कि मालाया जेम्लिया पर सेना का उतरना और वहाँ लड़ी गयी लड़ाइयाँ युद्ध-कौशल के एक उदाहरण का काम दे सकती हैं। हमने सावधानी से आदमियों का चुनाव किया और उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया। हमलावर टोलियों को गेलेन्द्झिक मे तोनकिइ अंतरीप पर प्रशिक्षित किया गया जहाँ उन्हें मशीनगनों के साथ पानी मे कूदना, पहाड़ पर चढ़ना, असुविधाजनक स्थलो से हथ-गोले फेंकना सिखाया गया। उन्होंने कब्जा किये गये हर प्रकार के हथियार चलाना, चाकू फेंकना, बंदूक के कुंदों को गदा की तरह इस्तेमाल करना, घाव पर मरहम-पट्टी करना और खून बहना रोकना भी सीखा। उन्होने पहले से तय संकेत याद किये, आँख पर पट्टी बाँधकर सरलतापूर्वक सब-मशीनगनों मे गोलियाँ भरना और धमाके की आवाज से यह निश्चित करना भी सीखा कि गोली किधर से चलायी गयी है। इन सभी चीजों में निपुणता पाये बिना साहस के साथ सेनाएँ उतारने, खासकर रात के समय किये गये पहले धावे के बारे मे सोचा भी नही जा सकता था, क्योंकि सब कुछ अँधेरे में, टटोल-टटोलकर करना था।

पहली टोली जिसे विशेष कार्य-भार वाला दस्ता कहा गया, पूरी तरह केवल स्वयंसेवकों की थी और ये लोग भी उनमें से चुने गये थे जिन्हें वीरता के प्रशंसा-पत्र मिल चुके थे। मेजर टी० के० कुनिकोव को लैंडिंग कमांडर नियुक्त किया गया। इस बुद्धिमान और ताकतवर आदमी ने इसके पहले ही लड़ाइयों में मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया था, जब वह एक समुद्री बटालियन की कमान कर रहे

थे। सीनियर-लैफ़्टिनेंट एन०वी० स्तारशिनोव डिप्टी लैंडिंग कमांडर थे, जिनकी देख-रेख में राजनीतिक मामले थे, और सेनाध्यक्ष मेजर एफ० याई० कोतानोव। उन्होंने भी लड़ाई के दौरान बहुत अच्छे सैनिक गुणों का परिचय दिया था। इन तीनों को 'सोवियत संघ के वीर' की उपाधि दी गयी—कुनिकोव को मरणोपरांत, क्योंकि वह अवतरण के चार दिनों बाद ही मार डाले गये थे, और स्तारशिनोव और कोतानोव को मालाया जेम्लिया के काफी बाद, आगे हुई लड़ाइयों में यह उपाधि मिली।

उनके लैंडिंग दस्ते के गठन के लिए उन्हें नोवोरोसिस्क के नौसैनिक आधार की किसी भी यूनिट से अपने आदमी चुनने का अधिकार दे दिया गया। निश्चित ही यह एक असाधारण अधिकार था, लेकिन जरूरत का यही तकाजा था। हम समझते थे कि इस तरह सेना उतारने में सचमुच हर सैनिक को एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस तरह उतारी जाने वाली सेना की पाँच टोलियाँ चुनी गयी और 250 सैनिकों का एक अवतरण दस्ता बना दिया गया। इस कठिनतम परीक्षा मे उतरने वाले वे पहले लोग थे और सचमुच उन्होने अपना कर्त्तव्य बड़ी खूबी के साथ निभाया।

जब मैं 1974 में नोवोरोसिस्क संग्रहालय देखने गया तो कुछ देर के लिए एक बड़ा दिलचस्प दस्तावेज देखकर रुक गया। यह सीनियर-लैफ़्टिनेंट वी०ए० बोतीलेव की रिपोर्ट थी जो उस रात को घटनास्थल पर थे। उन्होंने लिखा था : "पहली हमलावर टोली के मारे गये लोगों के बारे में रिपोर्ट—एक मारा गया, सात घायल। इनमें से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का उम्मीदवार सदस्य मारा गया—एक, सो० सं० क०पा० (बो०) के सदस्य घायल—चार, *कोम्सोमोल सदस्य घायल—दो, गैर-पार्टी सदस्य घायल—एक*। कमान की ओर से सौंपा गया आदेश पूरा हुआ। टोली का मनोबल ऊँचा।"

यहाँ शायद यह याद करना समीचीन होगा कि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के मोर्चों पर तीस लाख कम्युनिस्टों ने वीरतापूर्वक अपने प्राणों की आहुति दी। युद्ध के वर्षों के दौरान पचास लाख सोवियत देशभक्त पार्टी के सदस्य बन गये। मैं ये शब्द लगभग हर लड़ाई के पहले सुना करता जो अब आख्यानिक बन गये हैं, कि "मैं लड़ाई में एक कम्युनिस्ट की हैसियत से भाग लेना चाहता हूँ।" और लड़ाई जितनी ही कठिन होती ये शब्द उतनी ही अधिक बार सुनायी पड़ते। किसी दुर्धर्ष विनाशकारी लड़ाई के एक दिन पहले पार्टी-सदस्य बनकर कोई किस विशेष सुविधा की आशा कर सकता था? या पार्टी उसे कौन-सा अधिकार दे सकती थी? केवल एक विशेष सुविधा, केवल एक अधिकार, केवल एक कर्त्तव्य : यह कि धावा बोलने मे उसे सबसे पहले आगे बढ़ना है, सब कुछ आत्मसात कर लेने वाली युद्ध की प्रचंड अग्नि मे उसे सबसे आगे बढ़कर मुकाबला करना है।

वास्तविक अवतरण के पहले दस्ते ने एक शपथ ली। कम्युनिस्ट कुनिकोव ने सभी सैनिकों को क़तार मे खड़ा किया और उन्हें एक बार फिर यह याद दिलाया कि कार्रवाई बहुत ही खतरनाक होगी, उसमें उनके जीवन का भी खतरा हो सकता था, और अगर किसी को अब यह लग रहा हो कि वह इसका मुकाबला नही कर सकता तो वह इसमे भाग न ले। कुनिकोव ने उनसे पंक्ति से तीन कदम आगे आने के लिए नही कहा। उनकी प्रतिष्ठा का सम्मान करते हुए उन्होंने धीरे से कहा :

"ठीक 10 मिनट बाद आप लोग फिर कतार में खड़े हों। जो लोग कुछ निश्चित न कर पायें वे न आयें। उन्हे एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा कर लेने वालों के रूप मे उनकी यूनिटों मे वापस भेज दिया जायेगा।"

जब दस्ता फिर एकत्र हुआ तो सिर्फ दो लोग नही आये। आज भी, जब कई दशक बीत चुके है, उस शपथ को याद कर जो उन्होंने समुद्र मे जाने के पहले ली थी, कोई गहन रूप से अभिभूत हुए बिना नही रह सकता। उन्होंने शपथ ली थी : "हम अपने देश की शपथ लेते है कि हमारे जीवन के लिए चाहे जितना बड़ा खतरा हो, शत्रु पर विजय पाने के लिए हम तेज़ी से और साहस के साथ कार्य करेंगे। हमारा सकल्पबल, हमारी शक्ति, हमारे रक्त की अंतिम बूंद तक सभी कुछ हमारी जनता की खुशी के लिए, हमारे प्रिय देश के लिए निछावर है। हम आगे बढ़ेंगे और बढते रहेंगे, यही नियम हमें निर्देशित करता है और करता रहेगा।"

जब कभी अपनी कल्पना मे मैं उन तूफानी दिनों मे लौटता हूँ और जब मुझे उस गंभीर प्रतिज्ञा के शब्द याद आते है तो मैं गहरे उत्साह और गर्व की भावना से भर उठता हूँ। इतिहास में व्यक्तिगत वीरता के अनेक उदाहरण है, लेकिन केवल हमारे देश मे, केवल हमारी महान पार्टी के नेतृत्व में सोवियत जनता ने यह दिखाया कि वह सामूहिक रूप मे भी महान वीरता के कार्य कर सकती है।

□ □

और तब अततः वह रात आ पहुँची जब हमें सेनाएँ उतारनी थीं। घाट पर सैनिकों मे जो उत्साह था उसकी मुझे अच्छी तरह याद है। मुझे उदासी का एक भी चिह्न नही नजर आया। वास्तव मे लोगों मे खुशी थी, उनके चेहरों पर अधीरता के भाव थे। नाविक दौडते हुए पेटियाँ लाद रहे थे और बीच-बीच में चिल्ला पडते, "पोलुंद्रा!" मुझे याद है कि मैंने एक नाविक से पूछा था : "पोलुंद्रा

क्या है ?" उसने अर्थ बताया—"सिर ऊँचा रखो !" और इस तरह मुझे इस शब्द का अर्थ मालूम हुआ।

3 फरवरी, 1943। रात का घोर अंधकार! धावा बोलने वाली नौकाएँ निःशब्द सरकती हुई गेलेन्द्झिक से बाहर निकलकर त्सेमेस्काया खाडी की ओर बढ़ी। वहाँ से जो लामबंदी का स्थल था, वे संकेत गोलों के दगने के साथ किनारे की ओर बढ़ने लगीं। उसी समय हमारा तोपखाना पूर्व-निश्चित तटवर्ती पट्टी पर गोले दागने लगा। "कात्यूशा" तोपों से दगे गोले (युद्ध में यह पहला मौका था जब एक ट्रालर जहाज "स्कुम्ब्रिया" पर राकेट प्रक्षेपक बिठाया गया था) लपटें फेंकते हुए गर्जनमय विस्फोट कर रहे थे। हमारी दो पनडुब्बी नौकाएँ तेजी से धावा बोलने वाली नौका का रास्ता काटती हुई निकल गयीं। अपने पीछे-पीछे वे धुएँ का एक पर्दा-सा बनाती गयीं जिसने किनारे से हो रही दुश्मन की गोलाबारी को ढँक लिया। एक गश्ती नौका ने उस क्षेत्र पर गोला दागा जहाँ मछली की कैनरी थी, इसने उन हथियार-स्थलों को भी निष्क्रिय बना दिया जो हमारे तोपखाने के हमले से बच रहे होंगे। ज्योंही कुनिकोव के सैनिक किनारे पर पहुँच गये, हमारी तोपों ने गोलाबारी बंद कर दी।

युद्ध में सब कुछ योजना के अनुसार ही नहीं चलता। अक्सर लड़ाई की दिशा सदर मुकामों में बनायी गयी योजनाओं से भिन्न और कभी-कभी बहुत ही भिन्न होती है। यही वह समय होता है जब प्रत्येक कमाण्डर और राजनीतिक अफसर की, प्रत्येक सैनिक और नाविक की जवाँमर्दी, वफ़ादारी और पहलकदमी अमूल्य बन जाती है। युद्ध के इतिहासकार जानते हैं कि एक अन्य स्थल—हमारी जगह से 30 किलोमीटर दूर युझनाया ओजेरेइका के पास—एक दूसरे तटवर्ती स्थल पर कब्जा करने की कोशिश की गयी थी। मुख्य रूप से सेनाएँ वहीं उतारी जाने वाली थीं, लेकिन तभी आँधी चल पड़ी और सेना उतारने वाली नौकाओं की रवानगी में देर हो गयी। स्थल सेना भी प्रारम्भ बिंदु पर देर से पहुँची। लेकिन कुनिकोव के सैनिकों का धावा, जिससे दुश्मन भौचक रह गया, असाधारण रूप से सफल रहा और हमने तुरंत इसका फ़ायदा उठाया।

प्रायोगिक रूप से सैनिकों को उतारना पहले एक सहायक कार्रवाई और फिर मुख्य कार्यवाही बन गयी। सेना का यही अवतरण मालाया जेम्लिया के वीरतापूर्ण युद्ध का प्रारम्भ-स्थल बन गया। गोलों की बौछार को वेध कर हमारा अवतरण दस्ता जमीन के एक टुकड़े पर अधिकार करने में सफल रहा। यह बहुत छोटा टुकड़ा था, लेकिन यह नोवोरोसिस्क के सीमांत पर स्तानिच्की के निकट-वर्ती समुद्र तट का एक बहुत महत्वपूर्ण सेक्टर था। करीब एक हजार फासिस्ट मार गिराये गये और चार तोपों पर कब्जा कर लिया गया, जिनसे तुरंत दुश्मन पर गोलाबारी शुरू कर दी गयी। नब्बे मिनट बाद एक दूसरी टोली तट पर पहुँच

गयी और उसके बाद एक और टोली जिससे अवतरण सेना की संख्या 800 हो गयी।

दुश्मन ने अपनी यूनिटों को इस स्थल की ओर बढाया, फ़ासिस्ट विमानों ने उस पर बमबारी की, भारी तोपों ने इस पर गोले दागने शुरू किये और एक के बाद एक जल्दी-जल्दी जी-तोड प्रतिरोधी हमले किये। लेकिन उनके लिए बहुत देर हो चुकी थी। हमारी सेनाओ ने मजबूती से पंजा जमाने की जगह ले ली थी। उन्होंने स्तानिच्की मे कई ब्लाकों और तीन किलोमीटर रेलवे लाइन पर कब्ज़ा कर लिया था। और यद्यपि उन्हें काफी नुकसान उठाना पडा, फिर भी उनके कदम पीछे नही हटे। सैनिकों और नाविकों ने अपना वचन निभाया, वे जानते थे कि जब तक मुख्य सेना नहीं पहुँच जाती तब तक उन्हे अपनी जगह पर डटे रहना था। उनमे एक सफल अवतरण की प्रसन्नतापूर्ण उत्तेजना अभी भी महसूस की जा सकती थी—मेरी स्मृति मे यह सब इसी रूप मे अंकित है।

कई रातों के दौरान दो नौ-सेना ब्रिगेड, एक पैदल ब्रिगेड, एक टैंकवेधी लडाकू रेजीमेंट और कुछ दूसरी यूनिटें उस तटवर्ती आधार-भूमि पर पहुँच गयीं। किनारे पर सैकडों टन गोलाबारूद और रसद पहुँच गयी। पांच दिन बाद स्तानिच्की और मिसखाको के आसपास 17000 सैनिक थे, जो सब-मशीनगनों, मोर्टारों, बंदूकों और टैंकवेधी तोपो से लैस थे। उसके बाद पांच छापामार दस्ते —"जा रोदिन्" (अपने देश के लिए), "ग्रोजा" (तूफान), "नोर्दोस्त" (उत्तर पूर्व), "नोविय" (नया) और "यास्त्रेबोक" (छोटा बाज) भी मालाया जेम्लिया पहुँच गये।

यहाँ मैं छापामारों को सलाम करने का अवसर लेना चाहूँगा। जो लोग उन्हे सिर्फ शत्रु के पृष्ठप्रदेश मे काम करने वाली अलग-थलग टुकड़ियाँ ही मानते है, बिलकुल गलत समझते है। बहुत-से दस्ते सचमुच आप से आप पैदा हो गये, लेकिन उनकी कार्रवाइयाँ पार्टी के नेतृत्व वाले केन्द्रो से समन्वित की जाती थी। कभी-कभी वे नियमित यूनिटों की कमान योजनाओ के साथ पूरी तरह तालमेल बना कर बडी सैनिक कार्रवाइयाँ भी करते थे। मालाया जेम्लिया की स्थिति ऐसी थी जहाँ इन सभी पाँचो दस्तो का निर्देशन नोवोरोसिस्क नगर पार्टी समिति के सचिव पी॰ आई॰ वासेव करते थे जो हमारे सदर मुकाम के साथ घनिष्ठ संपर्क में कार्य करते थे।

मैं यहाँ फिर दुहराना चाहूँगा कि मालाया जेम्लिया में सेनाओं का अवतरण अनेक प्रकार से युद्ध-कौशल के एक उदाहरण का काम दे सकता है। पहले हमलावर दस्ते का सफल अवतरण, और दुश्मन की मजबूत किलेबंदी और सुरंगों के जाल से पटी तटवर्ती भूमि पर लडाई के लिए सेना का जमाव और दस्तों का बढाव—ये सभी ऐसी कार्रवाइयाँ थी जिनके लिए स्थल सेना, इंजीनियरिंग

यूनिटों, नाविकों और तोपखानों के बीच घड़ी के पुर्जों जैसे तालमेल की ज़रूरत थी। तोपखाना कोई भी गलती करने का जोखिम नहीं उठा सकता था, कई स्थलों पर हमारी यूनिटें दुश्मन से सिर्फ एक हथगोले की दूरी पर थीं। हमारे विमानचालकों के लिए और भी कठिनाई थी। मुझे याद है कि हमारे सैनिक हमारे हवाई हमलों के पहले अपनी अग्रिम पंक्तियों का संकेत देने के लिए किस तरह अपनी गंजियाँ खाइयों के बाहर लटका देते थे।

उल्लेखनीय है कि सैन्य-तंत्र के अनुसार हमारी स्थिति ज़रा भी अच्छी नहीं थी। हमारे कब्ज़े में समुद्र तट की एक पतली पट्टी मात्र थी—लंबी, सपाट और ऊसर, जबकि सभी ऊँची जगहें और जंगल जर्मनों के कब्ज़े में थे। यहाँ एक सवाल उठता है: अगर हमारे ऊपर सैंकड़ों टन बम गोले बरसाये जा रहे थे, अगर दुश्मन सैन्यबल में हमसे बहुत अधिक था और अगर चारों ओर की ऊँची जगहों से मालाया जेम्लिया आसानी से दिखायी दे रहा था तो हमारे आदमी कैसे बच सके? हमने अपने विपरीत इन सभी चीज़ों का मुकाबला अनुभव, धैर्य, चातुरी और निरंतर कठिन श्रम से किया।

यहीं मुझे सबसे पहले यह पता चला कि और सभी चीज़ों के अलावा युद्ध एक ऐसी चीज़ है जिसके पीछे बहुत अधिक श्रम, कल के इस्पात-कर्मियों, फिटरों, खनकों, किसानों, कम्बाइन-आपरेटरों, पशु-पालकों, निर्माण-कर्मियों और बढ़इयों का भारी श्रम होता है। हमारे पीछे उस संपूर्ण जनता का श्रम था जिसने सैनिकों की वर्दी पहन ली थी। यह न सिर्फ साहस और निष्ठा का बल्कि महान आत्मानुशासन, धैर्य, योग्यता और उपलब्धियों का प्रदर्शन था।

सारा मालाया जेम्लिया एक भूमिगत किले में बदल गया था। 230 गुप्त पर्यवेक्षण चौकियाँ इसकी आँखें थीं और 500 ऐसे गड्ढे जिनमें तोपें बिठायी गयी थीं, इसकी लोहे की मुट्ठियाँ। दर्जनों किलोमीटर लंबी संपर्क खाइयाँ, हज़ारों गड्ढे, शस्त्र-स्थापक और सँकरी खंदकें खोदी गयीं। हमें चट्टानी ज़मीन में रास्ते खोदने पड़े, भूमिगत शस्त्र भंडार, भूमिगत अस्पताल और भूमिगत बिजलीघर आदि बनाने पड़े। हम सिर्फ खाइयों से होकर आ-जा सकते थे। यह आसान नहीं होता। आपका सिर ज़रा-सा ऊपर निकला नहीं कि बस खात्मा। लंबे समय तक लगातार बैठे रहना पड़ता और बाद में फासिस्टों को पीछे हटने के लिए बाध्य कर दिया गया तो हमारे कुछ सैनिक "बैठकी बीमारी" से ग्रस्त हो चुके थे। इंजीनियरों की निर्माण-कुशलता सचमुच अद्भुत थी। सैपरों ने गोला लगने से बने गड्ढों को जिन्हें 'क्रेटर' कहा जा सकता था, खाइयों से जोड़ दिया और वे छिपने के स्थलों का काम दे सकते थे। मालाया जेम्लिया के इस छोटे-से भूमि-खंड पर एक-दूसरे से एक-एक किलोमीटर दूर तीन रक्षा-पंक्तियां बनायी गयीं और हर एक के समानांतर सुरंगें बिछा दी गयीं। हमारे पास सुचारु रूप से काम करने

वाली भूमिगत संचार लाइनें भी थीं।
मीटर गहराई में बनायी गयी थी, सं
हो, सेनाएँ भेज सकती थी।

स्तानिच्की क्षेत्र मे "अनधिकृत भ
या 20 मीटर की दूरी पर थे। लेकि
मोर्चे का वह हिस्सा जहाँ ख़तरा और
सुरंगों से अटा पड़ा था, जिसे बाधाअ
गया था। यह सब करने के लिए ह
करना पड़ता।

वह तट आधार, जिसकी अच्छी
का किला-नगर बन गया। यहाँ तक
गोस्पितलनाया (अस्पताल), सेप्यो
मात्रोस्काया (मल्लाह)। सड़कें इन
जानता था कि ये नाम किसने दिये,
नाया शत्रु-प्रहार से पूरी तरह सुरक्षि
पहाड़ी मार्ग पर थी जहाँ शत्रु आसा
उधर से जाता वह अवसर वहाँ से सी
कोई मशीनें नहीं थीं, और न कोई ि
ने चतुराई से काम लेते हुए ज़मीन
था। जिस किसी ने भी इस गढ़ी के

मुझे पुराने सैपरों की विशेष
दुश्मन की नाक के नीचे सुरंगें बिछा
"पुराने कर्मी" थे जो ऊपर से एक
निकट गेलेन्द्झिक से कई किलोमीट
बनाते और रात में उन्हें मालाया
कठिन काम था यह! जैसा कि मैंने
न होती। दुश्मन के तोपख़ाने निहर
जवाब नहीं दे सकते थे और न वे
सकते। इसलिए वे ठंडे पानी में उत
ओर बढ़ते रहते। जब कोई गोला
तैरते हुए फिर जोड़ लेते ताकि एक
खो न सकें। अगर खींचने वाली
सिगनल दाग देते और दूसरी मोट
ये "पुराने लोग"!

कमान-चौकी जो एक पहाड़ पर साढ़े छह
नर्क खाइयों से जहाँ कहीं स्थिति ख़तरनाक
मि" नहीं थी। दुश्मन के ठिकाने हमसे 15
न हर बार जब मैं वहाँ गया तो पाया कि
जोखिम कभी समाप्त न होते—विस्फोटक
ं और कँटीले तारों के लच्छों से ढँक दिया
मारे सैपरों को कभी-कभी हाथों-हाथ द्वन्द्व

तरह किलेबंदी की जा चुकी थी, एक प्रकार
ि कि वहाँ सड़कें भी वजूद में आ गयीं—जैसे
रनाया (सैपर), पेख़ोतनाया (सिपाही) और
ं से किसी पर कोई घर नहीं था और कोई नहीं
लेकिन ये हवा मे नहीं पैदा हो गये। सेप्योर-
त एक घाटी थी, जबकि गोस्पितलनाया एक
नी से प्रहार कर सकता था, और जो कोई
धे अस्पताल ही पहुँचाया जाता। हमारे पास
नर्माण-सामग्री। लेकिन हमारे कुशल सैनिकों
में ऐसी माँदें बना ली जहाँ रहा जा सकता
निर्माण में भाग लिया वह वीर था।
स्नेह के साथ याद आती है। उन्हें यहाँ सीधे
ने के लिए नहीं भेजा गया था। हमारे पास ऐसे
ांतिपूर्ण काम मे लगे हुए थे। वे दुश्मनखोई के
र तक पेड़ काटते उनके लट्ठों को बाँध कर बेड़ा
जेम्लिया की ओर तैरा देते। लेकिन कितना
पहले कहा है, त्समेस्काया खाड़ी मे रातें अँधेरी
थे बेड़ों पर गोले बरसाने लगते। सैपर उनका
अपने बेढंगे बेड़ों को इधर-उधर घुमा-फिरा
र जाते, और बेड़ों को पकड़-पकड़ किनारे की
किसी बेड़े पर लग जाता तो वे उसे पानी में
भी लट्ठा, जो हमारे लिए बहुत कीमती था,
नावों पर गोला लगता तो वे संकेत देने वाला
र-बोट आने तक इतज़ार करते। ऐसे थे हमारे

पाठक को ऐसा लग सकता है कि तट आधार पर हम हज़ारों लोगों का जीवन हर समय हमलों, बमबारियों और आमने-सामने की हाथो-हाथ लड़ाइयों मे बीतता था। लेकिन नही, ऐसा नही था। वहाँ लंबी अवधि मे हमारे जीवन मे वह सभी कुछ था जो मनुष्य के जीवन को पूर्ण बनाते हैं। हम अख़बार निकालते और पढते, पार्टी की बैठकें करते, छुट्टियाँ मनाते और वक्तृताओं मे भाग लेते। हमने एक शतरंज टूर्नामेंट भी आयोजित किया। सेना और नौसेना की संगीत और नृत्य मण्डलियो ने कार्यक्रम दिये और कलाकारों वी० प्रोरोकोव, वी० टिसगाल और पी० किर्पिचेव ने वहाँ काम करते हुए प्रतिरक्षा के वीरो की एक लंबी चित्रमाला तैयार की।

मुझे याद है कि वहाँ किस तरह केन्द्रीय समिति की ओर से एक दल आया। वे लोग हमारे इलाके में पहली बार आये थे। उन्होंने मुझसे कहा कि क्या मैं उन्हे मालाया ज़ेम्लिया के वीरों से मिला सकता हूँ। हम एक पनडुब्बी नौका पर रवाना हुए। ज्यों ही हम चले, हमारी मौजूदगी की सूचना देने का एक संकेत दागा गया। ज्यों-ज्यों हम अपने उतरने के स्थल की ओर बढते रहे, जर्मन लगातार गोलाबारी करते रहे। उनके पास ऊँचे कोण की तोपें थीं, इसलिए हमारे लिए ज़रूरी था कि हम किनारे से सटे हुए आगे बढें। तभी फिर हमारे बिलकुल पास गोले फटने लगे। लेकिन सामने दृश्य इतना सुन्दर और मोहक था कि एक क्षण को हम भूल गये कि वे गोले हमें निशाना बनाकर छोड़े जा रहे थे। तट आधार पर लंबी मार करने वाली एक तोप थी जो ज़ार-कोलोकोल (ज़ार का घंटा—यह एक विशाल घंटा है जिसे रूसी कारीगरों ने 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध मे ढाला था और जो मास्को के क्रेमलिन मे एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप मे रखा हुआ है।)की तरह लग रही थी। इसे एक कमान-चौकी में बदल दिया गया था और गोलों की बौछार में हमें उसी जगह पहुँचना था। मैं ऐसी स्थितियों का अभ्यस्त था, लेकिन मेरे विचार में हमारे अतिथियों पर इसका काफी प्रभाव पडा। मुझे याद है कि कोई नाटे कद का ख़लासी मानो अचानक अँधेरे मे प्रकट हुआ। वह कोई भारी चीज लिये था।

"दोस्त, ज़रा इसे ढोने में मदद करो," उसने कहा, "यह चीज़ हर किसी के लिए है।"

हमारी सेना के सैनिकों, कमाण्डरों और राजनीतिक अफसरो को जो कुछ सहना पड़ा, उसके बारे में आज लगभग तीन दशक बाद सोचते हुए, कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते है जब विश्वास करना कठिन होता है कि यह सब सचमुच घटित हुआ था, कि उन्होने सचमुच यह सब सहा था। लेकिन उन्होंने यह किया। उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की, वे यह सब झेलते हुए ज़िंदा रहे, फासिस्टों को कुचल दिया, और विजय की ओर आगे बढे।

उस दिन मास्को से आये नये लोगों को मालाया जेम्लिया ले जाते हुए, मैंने वह सब कुछ जो मेरे लिए परिचित था, मानो नयी दृष्टि से देखा। मैंने यह सभी कुछ पहले देखा था, लेकिन मानो आज ही मैं इस बात के प्रति सचेत हुआ कि हम किस भीषण, घातक खतरे के बीच रह रहे थे, हमारे लड़ाकू सैनिक किन विकट कठिनाइयों का मुकाबला कर रहे थे और कैसी निस्स्वार्थ वीरता प्रदर्शित कर रहे थे।

कभी-कभी स्थिति सचमुच बहुत कठिन हो उठती। हम मुख्य भूमि से कटे हुए थे, हमारे पास नमक की कमी थी, और कभी-कभी हमें रोटियों के लाले पड़ जाते। पूरी-की-पूरी यूनिटों को जंगली लहसुन जमा करने के लिए वनों में भेज दिया जाता। और, हमारी तकलीफ इस बात से और बढ़ जाती कि छिपने के लिए जो तहखाने बनाये गये थे, उनमें सीलन थी। रात में उनमें आदमी ठिठुर जाते। राजनीतिक विभाग के अफसरों को उन्हें गरम रखने का इंतजाम करना पड़ता। इसके लिए जाड़े के चूल्हों का आर्डर देना पड़ता और जलावन लकड़ी इकट्ठी करनी पड़ती। लेकिन तब भी मालाया जेम्लिया, यह तथाकथित "छोटा प्रदेश" सोवियत धरती बना रहा, और यहां रहने वाले लोग आदमी बने रहे। वे योजनाएं बनाते, मजाक करते, हंसते और यहां तक कि जन्मदिन पार्टियां भी आयोजित करते। 15 फरवरी को, पहली बार हमारी सेना के यहां पहुंचने के ग्यारहवें दिन, एक फौजी जान्या तातारात्रिको 23 साल का हो गया। उसके जिगरी दोस्त प्योत्र वेरेश्चागिन ने उसे अपनी सब-मशीनगन की 23 गोलियां उपहार में दी। यह बहुत ही मूल्यवान उपहार था, क्योंकि हमारे पास गोलाबारूद की कमी थी और दुश्मन का हमला सन्निकट था।

मोर्चे की बिलकुल बगल में हम जो जिंदगी जी रहे थे उसमें बहुत कुछ ऐसा था जो युद्ध की स्थिति को ध्यान में रखें तो, पहली दृष्टि में एकदम अप्रासंगिक लगेगा। 255वें समुद्री ब्रिगेड के राजनीतिक विभाग के प्रधान आई० दोरोशेन्को ने एक बार जिक्र करने के बाद पाया कि ब्रिगेड में 15 नगर, जिला और ग्राम सोवियतों के प्रतिनिधि थे, उनकी एक बैठक बुलाना तय हुआ। वे कौन-सी समस्या सुलझाते? वे ही जो वे शांतिकाल में सुलझाया करते थे, यानी लोगों की आवश्यकताएं, सार्वजनिक सेवाएं। उनका पहला निर्णय एक स्नानघर बनाने के बारे में था और यह बना लिया गया। एक बहुत अच्छा स्नानघर बनाया गया और जैसा कि मैं कहूंगा "बाढ़ के खंडों" अर्थात अपनी टुकड़ी के बाढ़ के खंडों में। मुझे भी उसे प्रयोग करके देखने का निमंत्रण मिला। और यद्यपि वह छोटा था, फिर भी वास्तव में भाप को अच्छी तरह बनाये रखा जाता था।

मालाया जेम्लिया में मुझे हमेशा कल्पना, चतुरता और बुद्धिमत्ता की बहुत कद्र की जाती। ऐसे गुणों से सम्पन्न व्यक्ति कम नहीं थे। मुझे याद है कि एक

आदमी, जो कल्पना का धनी था, किसी काम से गेलेन्द्भिक भेजा गया था। रास्ते मे उसे एक भटकी हुई गाय मिली जो पहाड़ों में इधर-उधर घूम रही थी। उसने उसे तुरंत मालाया जेम्लिया लाना तय कर लिया। वह घाट पर गाय के साथ पहुँचा और मोटर-लाच-कमाण्डर से उसे नाव पर चढ़ाने के लिए कहा। आसपास खड़े सभी लोग हँस पड़े, लेकिन उन्होने उसके विचार का समर्थन किया। इस तरह अब घायल लोगों को दूध मिल सकता था। वे गाय को हिफ़ाज़त के साथ ले आने मे सफल रहे और उसे एक सुरक्षित जगह मे रखा गया। उसका दूध नियमित रूप से अस्पताल को पहुँचाया जाने लगा जो युद्ध के पहले एक राज्य-फार्म के अंगूरोद्यान के तहखाने में था।

लेकिन महत्वपूर्ण चीज़ दूध नही थी। गाय अपने साथ बहुत-से लोगों के लिए खुशी ले आयी, ख़ासकर गाँव के लोगों के लिए। हर बमबारी या गोलाबारी के बाद वे दौड़ते हुए यह देखने के लिए आते कि उनकी प्यारी गाय सुरक्षित थी या नहीं, उसे चोट तो नही आयी, और तब वे प्यार से उसे थपथपाते। यह समझाना मुश्किल है, लेकिन एक ऐसी स्थिति और वातावरण में जब कि तनाव बहुत अधिक था, एक पूर्णत: शांतिकालीन जीव की उपस्थिति लोगों को भावनात्मक संतुलन बनाये रखने मे सहायक थी। इससे लोगों का यह विश्वास प्रबल होता था कि जीवन के सारे सुख लौट आयेंगे, जीवन अभी भी गतिमान था, लेकिन उसकी रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी जानी थी।

मालाया जेम्लिया के सैनिकों को। मई 1943 को सचमुच एक बहुत बढ़िया भेंट मिली। सुबह होते ही हर आदमी अवाक् हो गया और तब उनके चेहरों पर एक संतोषभरी मुसकान खिल उठी। रात को कुछ सैनिकों ने ब्रिग्रेड के ठिकानों के विभिन्न स्थलों पर लाल झंडे लगा दिये थे। सुबह हर कोई उन्हे देख सकता था, निश्चित ही जर्मन भी उन्हे देख सकते थे।

मुझे याद है कि **युद्धपोत पोतेम्किन** नामक फिल्म मे जो काली-सफेद फिल्मों के दिनो मे बनी थी, पर्दे पर लाल झंडे का प्रकट होना हृदय को कितना उल्लासित करता है। और मालाया जेम्लिया पर जहाँ हर इंच भूमि बम-गोलो से बिंधी पड़ी थी, जो गोलों के टुकड़ो से ढकी और पसीने और रक्त से सनी पड़ी थी, जो दुश्मन से घिरी थी, लाल झंडे का प्रकट होना हृदय के लिए कितनी अपूर्व शक्ति का स्रोत था। उस दग्ध धरती पर उत्साह की लहर दौड़ गयी और हर आदमी एक ऐसी चीज से भर उठा जो उसके लिए एक निजी अर्थ रखती थी और जो उसे प्रिय थी। प्रथम उत्तेजना के बाद सारे शिविर मे असीम प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। अपनी अपूर्व शक्ति को पहचान कर लोग खुशी से हँस पड़े : "नीच फ़ासिस्टो, यह देखो ! अब तुम क्या कहोगे ?"

उस दिन मास्को से आये नये लोगों को मालाया जेम्लिया ले जाते हुए, मैंने वह सब कुछ जो मेरे लिए परिचित था, मानो नयी दृष्टि से देखा। मैंने यह सभी कुछ पहले देखा था, लेकिन मानो आज ही मैं इस बात के प्रति सचेत हुआ कि हम किस भीषण, घातक खतरे के बीच रह रहे थे, हमारे लडाकू सैनिक किन विकट कठिनाइयों का मुकाबला कर रहे थे और कैसी निस्स्वार्थ वीरता प्रदर्शित कर रहे थे।

कभी-कभी स्थिति सचमुच बहुत कठिन हो उठती। हम मुख्य भूमि से कटे हुए थे, हमारे पास नमक की कमी थी, और कभी-कभी हमें रोटियों के लाले पड़ जाते। पूरी-की-पूरी यूनिटों को जंगली लहसुन जमा करने के लिए वनों में भेज दिया जाता। और, हमारी तकलीफ इस बात से और बढ जाती कि छिपने के लिए जो तहखाने बनाये गये थे, उनमे सीलन थी। रात में उनमे आदमी ठिठुर जाते। राजनीतिक विभाग के अफसरों को उन्हें गरम रखने का इंतजाम करना पड़ता। इसके लिए लोहे के चूल्हों का आर्डर देना पड़ता और जलावन लकडी इकट्ठी करनी पडती। लेकिन तब भी मालाया जेम्लिया, यह तथाकथित "छोटा प्रदेश" सोवियत धरती बना रहा, और यहाँ रहने वाले लोग आदमी बने रहे। वे योजनाएँ बनाते, मज़ाक करते, हँसते और यहाँ तक कि जन्मदिन पार्टियाँ भी आयोजित करते। 15 फरवरी को, पहली बार हमारी सेना के वहाँ पहुँचने के ग्यारहवें दिन, एक फौजी शाल्वा ताताराशिवली 23 साल का हो गया। उसके जिगरी दोस्त प्योत्र वेरेश्चागिन ने उसे अपनी सब-मशीनगन की 23 गोलियाँ उपहार में दी। यह बहुत ही मूल्यवान उपहार था, क्योंकि हमारे पास गोलाबारूद की कमी थी और दुश्मन का हमला सन्निकट था।

मौत की बिलकुल बगल में हम जो जिंदगी जी रहे थे उसमे बहुत कुछ ऐसा था जो युद्ध की स्थिति को ध्यान में रखें तो, पहली दृष्टि में एकदम अप्रासंगिक लगेगा। 255वें समुद्री ब्रिगेड के राजनीतिक विभाग के प्रधान आई० दोरोफेयेव ने एक बार गिनती करने के बाद पाया कि ब्रिगेड मे 15 नगर, जिला और ग्राम सोवियतों के प्रतिनिधि थे, उनकी एक बैठक बुलाना तय हुआ। वे कौन-सी समस्या सुलझाते? वे ही जो वे शांतिकाल मे सुलझाया करते थे, यानी लोगों की आवश्यकताएँ, सार्वजनिक सेवाएँ। उनका पहला निर्णय एक स्नानघर बनाने के बारे में था और वह बना लिया गया। एक बहुत अच्छा रूसी स्नानघर बनाया गया और जैसा कि मैं कहूँगा "बाद के घंटों" अर्थात अपनी ड्यूटी के बाद के घंटों मे। मुझे भी उसे प्रयोग करके देखने का निमंत्रण मिला। और यद्यपि वह छोटा था, फिर भी वाष्प-गृह में भाप को अच्छी तरह बनाये रखा जाता था।

मालाया जेम्लिया मे सूझबूझ, कल्पना, चतुरता और बुद्धिमानी की बहुत कद्र की जाती। ऐसे गुणों से संपन्न व्यक्ति कम नहीं थे। मुझे याद है कि एक

आदमी, जो कल्पना का धनी था, किसी काम से गेलेन्द्भिक भेजा गया था। रास्ते मे उसे एक भटकी हुई गाय मिली जो पहाड़ों मे इधर-उधर घूम रही थी। उसने उसे तुरंत मालाया जेम्लिया लाना तय कर लिया। वह घाट पर गाय के साथ पहुँचा और मोटर-लांच-कमाण्डर से उसे नाव पर चढाने के लिए कहा। आसपास खड़े सभी लोग हँस पड़े, लेकिन उन्होंने उसके विचार का समर्थन किया। इस तरह अब घायल लोगों को दूध मिल सकता था। वे गाय को हिफाज़त के साथ ले आने मे सफल रहे और उसे एक सुरक्षित जगह मे रखा गया। उसका दूध नियमित रूप से अस्पताल को पहुँचाया जाने लगा जो युद्ध के पहले एक राज्य-फार्म के अंगूरोद्यान के तहखाने मे था।

लेकिन महत्वपूर्ण चीज़ दूध नही थी। गाय अपने साथ बहुत-से लोगों के लिए खुशी ले आयी, खासकर गाँव के लोगों के लिए। हर बमबारी या गोलाबारी के बाद वे दौड़ते हुए यह देखने के लिए आते कि उनकी प्यारी गाय सुरक्षित थी या नही, उसे चोट तो नही आयी, और तब वे प्यार से उसे थपथपाते। यह समझाना मुश्किल है, लेकिन एक ऐसी स्थिति और वातावरण मे जब कि तनाव बहुत अधिक था, एक पूर्णतः शांतिकालीन जीव की उपस्थिति लोगों को भावनात्मक संतुलन बनाये रखने में सहायक थी। इससे लोगों का यह विश्वास प्रबल होता था कि जीवन के सारे सुख लौट आयेंगे, जीवन अभी भी गतिमान था, लेकिन उसकी रक्षा के लिए लड़ाई लडी जानी थी।

मालाया जेम्लिया के सैनिकों को 1 मई 1943 को सचमुच एक बहुत बढ़िया भेंट मिली। सुबह होते ही हर आदमी अवाक् हो गया और तब उनके चेहरों पर एक संतोषभरी मुसकान खिल उठी। रात को कुछ सैनिकों ने ब्रिग्रेड के ठिकानों के विभिन्न स्थलो पर लाल झंडे लगा दिये थे। सुबह हर कोई उन्हें देख सकता था, निश्चित ही जर्मन भी उन्हें देख सकते थे।

मुझे याद है कि **युद्धपोत पोतेम्किन** नामक फिल्म में जो काली-सफेद फिल्मो के दिनों मे बनी थी, पर्दे पर लाल झंडे का प्रकट होना हृदय को कितना उल्लासित करता है। और मालाया जेम्लिया पर जहां हर इंच भूमि बम-गोलों से बिंधी पड़ी थी, जो गोलो के टुकड़ो से ढकी और पसीने और रक्त से सनी पड़ी थी, जो दुश्मन से घिरी थी, लाल झंडे का प्रकट होना हृदय के लिए कितनी अपूर्व शक्ति का स्रोत था। उस दग्ध धरती पर उत्साह की लहर दौड़ गयी और हर आदमी एक ऐसी चीज़ से भर उठा जो उसके लिए एक निजी अर्थ रखती थी और जो उसे प्रिय थी। प्रथम उत्तेजना के बाद सारे शिविर में असीम प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। अपनी अपूर्व शक्ति को पहचान कर लोग खुशी से हँस पड़े: "नीच फ़ासिस्टो, यह देखो! अब तुम क्या कहोगे?"

□□

मालाया जेम्लिया पहुँचने के लिए समुद्र पार करना एक अविस्मरणीय घटना बन गयी जिसमें मुझे भी डुबकियाँ खानी पडी। वहाँ पहुँचने के तुरंत बाद अप्रैल में मालाया जेम्लिया पर भीषणतम युद्ध हुआ। मैं अब उसी के बारे मे बताने जा रहा हूँ।

फासिस्टों ने "समुद्री कार्रवाई" (आपरेशन नेप्च्यून) के तहत समुद्र तटवर्ती क्षेत्र पर हमला करने की योजना बनायी थी। इसके लिए उन्होंने वाट्जेल के अधीन लगभग 27,000 की विशेष हमलावर सेना गठित की थी। कार्रवाई के दौरान 1200 विमान और सैकड़ों तोपें एवं मोर्टार उसकी मदद करने वाले थे। इस बार एक और कार्रवाई समुद्र से की जाने वाली थी जिसे उतना ही स्पष्ट नाम संदूक दिया गया था। संदूक सेना के तहत एम टी बी विध्वंसक बेडे और पनडुब्बियाँ थी। उनका काम हमारे समुद्री संचार को काट देना और सोवियत सेना को समुद्र मे धकेल देने के बाद, नष्ट करना था। फासिस्टों ने अपनी योजनाओं मे इसे इसी रूप मे देखा।

मालाया जेम्लिया की लडाई 17 अप्रैल को शुरू हुई और वह धीरे-धीरे भीषण होती गयी · दुश्मन हर रोज कुमुक पहुँचा रहा था। जर्मन तोपें तडके ही आग उगलने लगती और इसके साथ ही आकाश में विमान पहुँच जाते। लगता, जैसे वे प्राय. हर समय हमारे ऊपर मँडराते रहते। वे 40 से 60 के झुंड में आते, हमारे संपूर्ण प्रतिरक्षा मोर्चे पर, उसकी सारी लबाई-चौड़ाई पर बम बरसाते। तेज गति वाले बमवर्षक विमानों के बाद गोताखोर बमवर्षक भी लहरों के समान झुंड मे आते और इसके बाद हमलावर विमान आते। यह सिलसिला घंटों चलता रहता और इसके बाद शत्रु के टैंक और पैदल-सेना हमला करती।

वे विश्वास के साथ आगे बढ़ते, वे पूरी तरह निश्चित होते कि उस घने धुएँ मे जो मालाया जेम्लिया के ऊपर छाया हुआ है, एक भी प्राणी नही बचा होगा। परंतु उनके हमले का जवाब भीषण प्रतिरोध से दिया जाता, वे लोग पीछे हट जाते और अपने पीछे सैकड़ों लाशें जमीन पर पडी छोड़ जाते। और इसके बाद यह सिलसिला फिर शुरू होता। एक बार फिर भारी तोपें आग उगलने लगती, एक बार फिर गोताखोर बमवर्षक विमान चीखते, और एक बार फिर हमलावर विमानो के प्रचंड कोप का अनुभव करते। दिन मे यह कई बार दुहराया

जाता था।

बमवर्षक और हमलावर विमानो को युद्धक विमानों से आड़ दी जाती। शत्रु की ताकत चूंकि हमसे काफी अधिक थी, इसलिए हमारे युद्धक विमान उन्हे नुकसान तो पहुँचाते, पर बमबारी रोक नही पाते थे। शत्रु की स्थितियों पर चूंकि सोवियत बमवर्षको का खतरा नहीं था, अत: फासिस्ट अपने को पुनगठित करने और नये हमले करने के लिए तैयार हो सकते थे। यह सिलसिला तीन दिनों तक, यानी 20 अप्रैल तक चलता रहा। जर्मन-फासिस्ट कमान ने मालाया जेम्लिया को अंतिम रूप मे पराजित करने के लिए यही तिथि निश्चित की थी।

हमे समुद्र मे धकेलने के लिए पूर्ण कटिवद्ध होकर हिटलर ने मोर्चे के इस भाग में अपनी सारी ताकत झोंक दी। परिस्थिति संकटपूर्ण हो गयी। 18वीं सेना की सैन्य परिषद ने मेरे जरिये मालाया जेम्लिया पर सैनिकों के बीच बांटने के लिए एक अपील का प्रारूप तैयार करवाया। इसे सभी खाइयो और तहखानों मे बांटा गया और लोगों ने इस पर अपने खून से हस्ताक्षर करने के लिए उँगलियां तक गोद डाली। मैंने बाद में उसकी एक प्रति स्तालिन को भेज दी, ताकि उन्हे इसका आभास हो कि हमारे जवान किस प्रकार लड रहे थे।

उस अपील मे यह लिखा हुआ था—"हम लोगो ने नोवोरोसिस्क के निकट शत्रु से जो थोड़ी जमीन छीनी है उसे 'मालाया जेम्लिया' पुकारते है। यह यद्यपि एक छोटा भूखंड है, पर यह हमारी धरती, सोवियत धरती है। यह हमारे खून और पसीने से तर है और हम इसे किसी भी शत्रु के लिए नही छोड़ेंगे...हम अपने सैन्य झंडे की, अपनी पत्नी और बच्चों की, अपनी प्यारी मातृभूमि की शपथ लेते हैं, हम शपथ लेते है कि हम आगामी लड़ाइयो मे दुश्मनो के मुकाबले में मजबूती से डटे रहेंगे, कि हम लोग उसकी फ़ौज को तहस-नहस कर देंगे और तामान से फ़ासिस्ट कचरे को साफ कर देंगे ! हम लोग इस छोटे भूखंड को हिटलरी दरिंदों की विशाल कब्र-गाह बना देंगे !"

हमें सर्वोच्च कमान के आला सदरमुकाम से फासिस्ट हमले के पहले दिन ही यह स्पष्ट आदेश मिला कि हर कीमत पर तटवर्ती भूभाग को अपने अधिकार मे रखें। आला सदरमुकाम चूंकि इसे तामान प्रायद्वीप की मुक्ति की चाबी मानता था, इसलिए वह इसे प्राथमिक महत्व देता था और युद्ध मे हो रही प्रगति का ध्यान से अध्ययन करता था।

18 अप्रैल को मार्शल जी० के० जुकोव के नेतृत्व में आला सदरमुकाम से एक टीम उत्तर काकेशियाई मोर्चे के सदरमुकाम के लिए विमान से रवाना हुई, जिसका सेनापतित्व कर्नल-जनरल आई० वाई० पेत्रोव कर रहे थे। उसी दिन बाद मे जलसेना के जन-कमिसार एन० जी० कुज्नेत्सोव और वायुसेना के कमांडर ए० ए० नोविकोव के साथ वे 18वीं स्थल सेना के मुख्यालय पहुँचे। कर्मचारियों

पर रखा गया, जहाँ हमने पहले ही अपनी बंदूकें तैनात कर दी थीं और सुरक्षित रूप से ढालों पर मुस्तैद होकर जम गये।

20 तारीख (अप्रैल) को सुबह चारों ओर पहाड़ियों से हिटलरी सेना के लोग अपनी जगह से ही हमारा तोहफा देख सकते थे। जैसी कि हमें आशा थी, जर्मन अपने फ्युहरर पर तत्काल गोले दागना शुरू नहीं कर सके। और उन्हें यह तय करने में काफी वक्त लगा कि क्या करना चाहिए। काफी देर बाद फ़ासिस्ट उसकी तरफ तीन ओर से रेंग कर पहुँचने लगे। पर चूँकि हमने अपनी बंदूकें उस ओर लगा रखी थीं, अतः उनके आधे लोग मारे गये, शेष लोग दुम दबा कर जितनी तेजी से हो सका, भाग गये। उस दिन उन लोगों ने तीन बार कोशिश की और अन्त में उन लोगों ने "जन्म-दिवस उपहार" पर तोपों से गोला दागना शुरू किया।

हमारे सैनिक ठठाकर हँसते रहे और बोले, "यही उसका सबसे अच्छा उपहार है।"

हँसना बहुत बड़ी ताकत है, यह आशावाद और उल्लासपूर्ण उत्साह का लक्षण है। एक सेक्टर में दूसरे हमले को परास्त कर देने के बाद मैं दोरोफ़ेयेव के साथ खाइयों की बगल से चला जा रहा था कि हम लोगों ने फिर उस जगह से ठहाके की आवाज आते सुनी जहाँ हमारी तोपें खड़ी थीं। हम लोग वहाँ आये और एक कम उम्र के सार्जेंट को देखा, वह प्रचारकर्ता था और कुछ लोगों के साथ बातें कर रहा था।

उसने रिपोर्ट की, "कामरेड कर्नल, हम मुठभेड़ के परिणामों का लेखा-जोखा ले रहे हैं।"

"और वे क्या हैं?"

मशीनगन के चतुर्दिक जमा होते हुए सैनिक सार्जेंट से अनुरोध करने लगे: "आगे बढ़ो, उन्हें बता दो!" पहले तो वह संकोच में पड़ गया, पर साथियों के उत्साह से उसे हिम्मत हुई और वह बोला: "हिटलर ने घमंड से कहा था कि वह हम लोगों को आज समुद्र में धकेल देगा। एक छोटा उक्रइनी लोक-गीत अभी मेरे ध्यान में आ गया जिससे अच्छी तरह पता चल जाता है कि उसने क्या तीर मारा है। शिकार करने गया, एक भालू मारा, लोमड़ी की खाल उधेड़ी, घर खरहा लाया, माँ ने बतख पकायी और पकने पर वह पतली जैली निकली। जब उन लोगों ने चखा तो वह कड़वी थी।"

इस खुशमिजाज़ युवक की बातें सुन कर और लोगों के साथ मैं भी प्रसन्न हुआ। उसके सरल छोटे लोक-गीत उस क्षण शायद अधिक अर्थपूर्ण थे और उनका असर युद्ध-परिचालन के गंभीर विश्लेषण की अपेक्षा अधिक था। इसका कारण विशेष रूप से यह भी था, और जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ, कि मालाया

नैतिक विभाग को विशिष्ट कर्मी नियुक्त करने चाहिए जिन पर लड़ाई के मैदान से घायलों को हटाने की और यह निश्चित करने की ज़िम्मेवारी हो कि उन्हें समय पर डाक्टरी सहायता मिले।"

और आज उन लड़ाइयों के कई वर्षों बाद, हमारा ध्यान चाहे कितनी ही अन्य बातों पर लगा हो, हमें अपने युद्ध से लौटे वयोवृद्धजनों को सर्वदा याद रखना चाहिए। उनकी समुचित देखभाल करना और सहायता करना हमारा कर्तव्य है। उन्हें उनकी दैनिक दिनचर्या में सहायता करनी चाहिए। यह कुछ ऐसी चीज़ है जिसे करने का हमारे सरकारी निकायों पर और हमारे सभी नागरिकों पर नैतिक दायित्व है। यह हमारे जीवन को निर्देशित करने वाला एक नियम है।

□ □

मैं यह मानता हूँ कि पाठक पार्टी और राजनीतिक कार्य के विवरण की आशा कर रहे हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि मैं अब तक ठीक इसी बात को लिखता आ रहा हूँ। मालाया जेम्लिया पर सैनिकों का लौह-संकल्प इसी कार्य का फल था। तटीय क्षेत्र पर जीवन की सामान्य चीज़ों का प्रबंध, सैनिकों की स्फूर्ति और स्वास्थ्य कायम रखने के लिए देखभाल, जब सबसे ज्यादा जरूरत हुई ठीक उसी समय वायु सेना का आगमन, लड़ाइयों के बीच विराम के क्षणों में आनंद और हँसी-मजाक, हमलों के दौरान प्रदर्शित उत्सर्ग भावना और साहस, और यह तथ्य कि युद्ध की भीषणता के बावजूद आदमी अंत तक आदमी बने रहें —ये सभी समान रूप से पार्टी और राजनीतिक कार्य के परिणाम हैं। इसलिए कोई इसे संपूर्ण विवरण से अलग नहीं कर सकता है और संभवत: ऐसा करने की कोई आवश्यकता भी नहीं है।

कोई व्यक्ति मोर्चे पर राजनीतिक नेता के काम की माप किस प्रकार करता है, उसका मूल्यांकन किस प्रकार करता है? गुप्त स्थान से गोली चलाने वाला कोई सैनिक (स्नाइपर) जब हिटलर के दस सिपाहियों को खत्म करता है तो सभी लोग उस व्यक्ति का अभिनंदन करते हैं, जब कोई कम्पनी शत्रु के हमले को पीछे धकेल देती है और अपनी जगह पर डटी रहती है तो सभी लोग उस कम्पनी के कमांडर और उसकी फौज का अभिनन्दन करते हैं, जब कोई सैन्य डिवीजन शत्रु की प्रतिरक्षा पंक्ति को तोड़ कर किसी बस्ती को मुक्त करता है तो डिवीजन के कमांडर के नाम का उल्लेख प्रधान-सेनापति के आदेश में होता

है। परंतु राजनीतिक कर्मी जो योगदान करते हैं, वह भी उतना ही महान है। ये वे लोग है जो सैनिकों को विचारधारात्मक रूप से लैस करते हैं, जो उनमे अपने देश के लिए प्रेम के बीज बोते है, जो उनके आत्मविश्वास का निर्माण करते है और उन्हे वीरतापूर्ण कार्य के लिए प्रेरित करते है।

सेना मे असली राजनीतिक कार्यकर्ता वह व्यक्ति है जिसके चतुर्दिक और सभी लोग गोलबंद होते है, वह ऐसा व्यक्ति होता है जो सैनिकों के मनोबल को, उनकी आवश्यकताओं, उनकी आशाओं और सपनों को गहन अंतर्दृष्टि के साथ समझता है। वह उन्हें आत्म-बलिदान करने, वीरतापूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। और यदि हम याद रखें कि सेना की लडाकू भावना ही सर्वदा उसकी दृढनिश्चयता सुनिश्चित करने की चाबी रही है, तो फिर वह राजनीतिक कर्मी ही हैं जिसे युद्ध के दौरान अत्यधिक कारगर हथियार सौंपा जाता है। यही वह व्यक्ति था जिसने सैनिकों के दिल और आत्मा को इस्पात जैसा बनाया और उसके बिना कोई चीज—न टैंक, न तोप और न ही विमान—विजय नही दिला पाती।

यह बात हर जगह सच थी और युद्ध के अत्यधिक कठिन सेक्टरों मे जैसे, मालाया जेम्लिया मे इस कार्य का महत्त्व उतना ही अधिक था। ऐसे क्षण होते है जब सैनिक यह महसूस करते है कि वे मुख्य भूमि से कट गये है, तब उन्हें यह अनुभव कराना पडता है कि उनके कट जाने का यह कदापि अर्थ नहीं है कि उनका परित्याग कर दिया गया है, और उनके विलगाव का यह अर्थ नहीं है कि उन्हे भुला दिया गया है। उन्हे बतलाना पड़ा कि फासिज्म के विरुद्ध सभी मोर्चो पर युद्ध लडा जा रहा है और सारा देश हमारी अकूत सहायता कर रहा है। जिस हमले को उन्होने पराजित किया उसे उस महान युद्ध से सम्बन्धित करना पड़ा और बताना पड़ा कि संपूर्ण सोवियत देश युद्ध कर रहा है।

यहाँ जोशीले भाषणो की आवश्यकता नही थी (जो भी हो, वहाँ ऐसे सभा-भवन नही थे जहाँ भाषण किये जाते), बल्कि हर एक व्यक्ति के साथ स्पष्ट वैयक्तिक बातचीत, और मैं कह सकता हूँ कि हार्दिक बातचीत की जरूरत थी। मैंने ग्रुपो और यूनिटो मे आयोजित अधिकाश पार्टी मीटिंगों में भाग लिया और अक्सर सैनिक जवानो से लड़ाई के मैदान मे सीधी बातचीत करता। मैं सामान्यतया उनके साथ समान आधार पाने की कोशिश करता, परंतु ऐसा करने में मुझे किसी विशेष तकनीक का इस्तेमाल नही करना पड़ा। हम चाहे जिस विषय पर भी बात कर रहे होते, चाहे वह गंभीर बात होती या हँसी-मज़ाक, मैं कोशिश करता कि मैं अपनी स्वाभाविक अवस्था मे रहूँ, हमेशा अपने आप में रहूँ और मैंने हमेशा सच कहा, हालांकि वह कभी-कभी कटु होता। परंतु आपको यह मालूम होना चाहिए कि कभी-कभी ऐसे अफ़सरो से वास्ता पड़ जाता है जो अपने को साधारण सैनिक की तरह प्रस्तुत करते है। निस्सन्देह जवान तत्काल मित्रता के

18वीं सेना के राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष कर्नल लियोनिद ब्रेझनेव और वरिष्ठ राजनीतिक शिक्षक आई० पी० क्रावचुक मालाया जेमलिया पर, नोवोरोसिस्क के निकट कृष्ण सागर नाविकों के अवतरण दल के लिए आधार-भूमि। 1943

नोवोरोसिस्क के लिए 1943 युद्धों मे भाग लेने वाले। (प्रथम पंक्ति के मध्य में) लियोनिद ब्रेझनेव 18वी सेना के राजनीतिक विभाग के प्रचार एव आन्दोलन प्रभाग के सदस्यों के साथ।

18वीं सेना के राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष कर्नल लियोनिद ब्रेझनेव और वरिष्ठ राजनीतिक शिक्षक आई० पी० क्रावचुक मालाया ज़ेमलिया पर, नोवोरोसिस्क के निकट कृष्ण सागर नाविकों के अवतरण दल के लिए आधार-भूमि। 1943

नोवोरोसिस्क के लिए 1943 युद्धो मे भाग लेने वाले। (प्रथम पंक्ति के मध्य में) लियोनिद ब्रेभनेव 18वी सेना के राजनीतिक विभाग के प्रचार एव आन्दोलन प्रभाग के सदस्यों के साथ।

18वी सेना के राजनीतिक विभाग के अध्यक्ष कर्नल लियोनिद ब्रेझनेव (दायें, बैठे हुए) और 16वी इन्फेन्ट्री कोर के राजनीतिक विभाग के उपाध्यक्ष लेफ़्टिनेंट-कर्नल पी० ए० शताखानोव्स्की (मध्य मे बैठे हुए) 107वी सेपरेट इन्फेन्ट्री ब्रिग्रेड के राजनीतिक कार्यकर्ताओ के साथ, मई 1943।
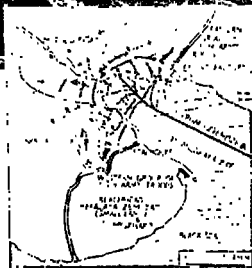
नोवोरोसिस्क आक्रमण अभियान का विवरण।

ब्रिगेड-कमिसार ब्रेझनेव युद्ध-क्षेत्र में सैनिको से बातचीत करते हुए।

ब्रिगेड-कमिसार ब्रेझनेव सितम्बर 1942 मे कृष्ण सागर बन्दरगाह तुआप्स
के लिए युद्ध के दौरान सैनिक अलेग्जान्द्र मालोव को पार्टी-कार्ड देते हुए।

जनरल ब्रेझनेव (दायें से द्वितीय) जून, 1945 मे मास्को मे हुई विजय परेड मे भाग लेते हुए।

6 सितम्बर 1974 को। 18वीं सेना (जिनकी पांतों में लियोनिद ब्रेझनेव लड़े थे) के वरिष्ठ अवकाश-प्राप्त सैनिक, और कृष्ण सागर जहाजी बेड़ा मालाया जेमलिया पर मिले। फोटो में : लियोनिद ब्रेझनेव वरिष्ठ योद्धाओं के बीच।

उसकी एकमात्र टिप्पणी थी, "कोई भी हिला नही। क्या लोग है...!"

मैं स्वयं भी उसी के बारे में सोच रहा था।

केवल इस तरह की असाधारण परिस्थितियों मे ही चाहे वह लडाई मे हो, या लड़ाई थमे रहने के समय में, राजनीतिक कार्यकर्ता का यह अधिकार और कर्तव्य है कि वह आदेश जारी करे। परंतु अपने रोज़ाना के काम मे उसे लोगों को आदेश नही देना चाहिए—केवल विस्तार से बतला देना और समझा देना चाहिए। और यह काम भी बुद्धिमत्ता और होशियारी से करना चाहिए। जब कोई गलती भी करता है, तब भी उसे किसी को डाँट कर अपमानित करने का अधिकार नही है। मैं इस आदत को अत्यधिक गर्हित समझता हूँ। और हालाँकि ऐसे उदाहरण बहुत थोडे है, पर ऐसे व्यक्ति है जो आज भी ऐसा करने पर जोर देते है, यानी दूसरों को डाँटना-फटकारना। कार्याधिकारी और राजनीतिक नेता को यह कभी नही भूलना चाहिए कि जो लोग उनके निर्देशन मे काम करते है, वे केवल काम करने के घंटों में उनके अधीनस्थ कर्मचारी है, कि वे निदेशक और प्रबंधक की सेवा नही करते हैं, बल्कि पार्टी और राज्य के ध्येय का हितसाधन करते है। और उस संबंध में हर व्यक्ति बराबर है। जो व्यक्ति हमारे समाज के इस सख्त नियम से भटकता है, वह पूर्णरूप से पथभ्रांत होता है, और दूसरों की नजर मे अपने को गिराता है। यह सच है कि जिस व्यक्ति ने अपराध किया है, उसे ज़िम्मेदारी ढोनी होगी—हर प्रकार की ज़िम्मेदारी . पार्टी, प्रशासन और यहाँ तक कि कानून के सामने भी। परंतु हमें किसी व्यक्ति के अहम को चोट नही पहुँचानी चाहिए, हमे उसे कभी अपमानित नही करना चाहिए।

मैं आज यही महसूस करता हूँ, मैंने युद्ध के दौरान इसी नियम का अनुसरण किया और मैं जिस राजनीतिक-विभाग का प्रधान था उसके कर्मियों में इसी दृष्टि को भरने की कोशिश की है। मैं यह अवश्य कहना चाहूँगा कि यह उत्साही अफसरो का घनिष्ठ रूप से संबद्ध निकाय था, ऐसे अफसर जिन्हे पार्टी का काफी अनुभव था, वे होशियार और सुविज्ञ लोग थे, जिनकी पेशकदमी और व्यक्तिगत साहस सामान्य से बहुत अधिक था और जब परिस्थिति के लिहाज से आवश्यक हो गया तो उन्होंने लडाई में अपनी जान की बाज़ी लगा दी। उनमें सभी लोग विजय देखने के लिए जीवित नही रहे, परंतु उनमें हर व्यक्ति ने अपना कर्तव्य सम्मान के साथ पूरा किया।

मैं उन्हे सहृदयता के साथ याद करता हूँ। मैंने उनमे कई लोगों को युद्ध के दौरान अधिकारी रूप से धन्यवाद दिया। मैंने कई पुरस्कारों के लिए आज्ञा पर हस्ताक्षर किये और जहाँ तक मुझे याद है, एक भी ऐसा उदाहरण नही है जब मुझे किसी को फटकारना पड़ा हो। और इसका कारण यह नही है कि मैं "कोमल हृदय" का व्यक्ति था, बल्कि इसके विपरीत मैं उनके साथ उस समय भी सख्त

रहता जब हमें चौबीसों घंटे काम करना पड़ा था। इसका कारण महज़ यह था कि मैं उनमें हर व्यक्ति पर सुरक्षित रूप से निर्भर कर सकता था और मुझे उनके कारण कभी नीचा नहीं देखना पड़ा। परंतु पाठकों को अपने इन अफ़सरों का थोड़ा परिचय देने के लिए मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करूँगा।

मेरे एक डिपुटी एस० एस० पाखोमोव थे जो प्रचार और आदोलन विभाग के प्रधान थे। वह ऊपरी तौर पर धीरे-धीरे काम करने वाले व्यक्ति थे तथा हर परिस्थिति मे अपने को शांत रखते थे, पर जब ज़रूरत होती तो वह शक्ति के स्फुलिंग बन जाते और असाधारण दृढ़ता दिखलाते। उनमें यह गुण था कि किसी खास क्षण में जब सेना को किसी शब्द की आवश्यकता सबसे अधिक होती तो वह उसे खोज निकालते थे। इसी कारण उनसे सैनिक परिषद की अपीलों और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों का प्रारूप तैयार करने में मैं और लोगों की अपेक्षा अधिक बार सहायता माँगा करता था।

मेजर ए० ए० आर्जुमानियान अत्यधिक आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। वह लेक्चरर और प्रचारकर्त्ता थे तथा उनके ज्ञान की परिधि विस्तृत थी एवं हास्य की भावना उत्कृष्ट थी, और यह कुछ ऐसी चीज़ भी थी जिससे हमेशा सुविधा मिलती थी। उस समय यह बिलकुल स्पष्ट था कि वह असाधारण क्षमता वाले व्यक्ति थे। जब युद्ध के बाद मुझे पता चला कि आर्जुमानियान अकादमीशियन हो गये हैं और बाद मे सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के अध्यक्षमंडल के सदस्य बन गये हैं तो मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि इसके बदले प्रसन्नता हुई।

आई० वी० श्चेर्बाक, जिन्होंने युद्ध के पहले विज्ञान के कैंडिडेट (इतिहास) की डिग्री हासिल कर ली थी, अर्जुमानियान के समान ही अच्छे प्रचारकर्त्ता थे। जी० एन० युकिन भी एक ज्ञानवान व्यक्ति थे तथा राजनीतिक विभाग के कर्मियों मे कितना साहस होता है, इसके वह बहुत अच्छे उदाहरण का काम कर सकते थे : नोवोरोसिस्क हमले के दौरान कृष्ण सागर जल-बेड़े के कमांडर ने उन्हें युद्ध-क्षेत्र मे ही 'लाल परचम के आर्डर' से अलंकृत किया। और चूंकि लगता है कि मैं अपनी कहानी से बहुत आगे बढ़ गया हूँ, मैं इतना और कहना चाहूँगा कि उस कारंवाई से 18 वीं सेना के राजनीतिक-विभाग के सभी लोगों के प्रयास का उच्च मूल्यांकन *किया गया।*

हमारी अपनी सेना का समाचारपत्र **ज़्नामिया रोद्नी** (मातृ भूमि का परचम) था जिसमें मालाया जेम्लिया पर घटने वाली हर घटना का समाचार शीघ्रतापूर्वक प्रकाशित होता था। खाइयों में लोग सर्वदा उसे पाने के लिए अधीर रहते थे और अख़बार को दूसरों को पढ़ने के लिए फ़ौरन दे दिया करते थे। मैंने कई बार संपादक को वहाँ की स्थिति का संक्षिप्त विवरण दिया था और अक्सर

संपादक वी० आइ० वेर्खोव्स्की और अन्य कर्मियों से विचार-विमर्श भी किया करता था। मेरे मन में पत्रकारों के प्रति सम्मान की भावना विकसित हो गयी, क्योंकि मैं जानता था कि जब युद्ध चल रहा था तो वे फौज की बगल मे हमेशा मौजूद होते थे, उन्होंने उतरने मे, सवोताज की कार्रवाइयों और शिन्तख्ती कैदियों को अधिकार में लेने में भाग लिया।

हमारे पास समाचारपत्र के लिए काम करने और लिखने वाले योग्य एवं प्रतिभाशाली लोगों का ग्रुप था। एस० वेर्जेन्को जैसे कर्मचारियों के अलावा जो प्रावदा के संवाददाता और सोवियत संघ के भावी वीर थे, हमारे पास नियमित रूप से लिखने वाले वी० गोर्बातोव जैसे लेखक और पी० कोगान जैसे कवि भी थे।

कई और दूसरे अग्रणी लेखक भी सेना में हम लोगों से मिलने आये।

मैं यह विवरण इन शब्दों के साथ समाप्त करना चाहूँगा कि हमारे बीच के किसी कवि की एक सटीक पंक्ति या मामूली दीवारी-अखबार का एक रेखाचित्र कितना महत्वपूर्ण होता था, क्योंकि वह पक्ति, वह ड्राइंग सीधे जवानों को संबोधित होती थी। मुझे याद है कि एक बार मैं मोर्चे की अग्रिम पंक्ति से सुबह आ रहा था कि मेरी नज़र दो महिलाओं पर पड गयी जो समुद्र की ओर से आ रही थी। एक छोटे कद की थी, चुस्ती के साथ बेल्ट बाँधे हुए थी तथा उसके बाल लाल थे। हम लोगों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया और मैं मोटर से आगे बढ गया। मैंने कोम्सोमोल मामलों के लिए अपने सहायक को 5 बजे शाम का वादा किया था और उस दिन मुझे कई नौजवान लोगों से मिलना था, मृत साथियों के स्थान पर कोम्सोमोल संगठनकर्ता के रूप मे उन्हें स्वीकार करना था। और वही लाल बालों वाली युवती कागज़ों का एक पुलिन्दा लिये हुए मेरे पास आयी।

मैंने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आयी हो?"

"नाविक बटालियन से!"

"उन लोगो ने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया?"

"बहुत अच्छी तरह।"

"क्या उन लोगो ने तुम्हें कभी नाराज़ भी किया?"

"नहीं, कभी नही।"

वह काफी अच्छी कलाकार थी और उसी जगह उसने अपना दीवारी अखबार फैलाया। मुझे उसकी ड्राइंग अच्छी तरह याद है जिसका शीर्षक था: "वास्या, इतने उलझन में क्यों हो?"

उस युवती का नाम मारिया पेदेन्को था। उसने मालाया जेम्लिया जाने की इच्छा स्वयं की थी और शुरू में ही यहाँ उतरने वाली सेना के साथ थी। वह गोलियों के बीच से युद्ध-क्षेत्र से घायलों को हटाने मे मदद करती और जब मामला थोड़ा शांत

होता तो समाचारपत्र, लिफ़ाफे और लिखने के कागज के साथ खाइयों का चक्कर काटती, यहां-वहां वार्ता देती तथा कविता-पाठ करती। मालाया जेम्लिया के सभी योद्धा उसे पहचानते थे और उसे प्यार करते थे और लोग उसके बारे में सोचते थे कि वह एक सर्वोत्कृष्ट प्रचारकर्ता है। उसने हाथ का लिखा समाचारपत्र पोलुन्द्रा शुरू किया और इसकी कई प्रतियां "प्रकाशित" कर लेती थी। सैनिक उसे तब तक पढ़ते जब तक कि उसके चीथड़े न हो जाते और जहां कहीं ये समाचारपत्र दिखलायी पड़ते कि आम ठहाका गूंज उठता।

बाद मे नोवोरोसिस्क के लिए लड़ाई के दौरान मारिया घायल हो गयी, पर शीघ्र ही अच्छी हो गयी और लड़ाकू दस्ते में फिर से शामिल हुई। उसकी वीरता के कारण उसे तीन युद्ध-पदक मिले। जब क्रिमेय मे लड़ाई सबसे भीषण थी तो उसने अनुरोध किया कि उसे वहां भेज दिया जाये। मुझे एक बार उसका लेख किसी समाचारपत्र मे (मुझे याद नही है कि वह प्रावदा था या इज़्वेस्तिया) पढने को मिला जिसका शीर्षक था "प्रेम"। उस शीर्षक से मुझे उम्मीद थी कि यह भावनात्मक लेख होगा, परंतु यह मेरी ग़लती थी। यह उसकी जन्मभूमि और उस धरती के प्रति प्रेम के बारे में था।

मारिया ने अपनी मातृभूमि के लिए अपनी जवानी या अपने जीवन तक की कोई परवाह नही की। उसकी डायरी मे, जो बाद में प्रकाशित हुई, मालाया जेम्लिया के बारे मे कुछ बातें दर्ज हैं: "विस्तृत संसार की झलक पाने के लिए भूमि के नीचे से रेंगकर बाहर आना पड़ता है, और हृदय सचमुच आनन्दित हो उठता है। यह जीवित रहने के लिए कितना विलक्षण है। परंतु चारों तरफ़ सेत युद्ध की निर्मम मशीन से जुते हुए हैं। आपको चारों तरफ़ इमारतो के मलवे और ऊबड़-खाबड़ गड्ढेदार धरती पर जंगनुमा रक्त छिड़का दिखलायी पड़ता है। आप धूप लेना शुरू ही करते हैं कि आपको 'हवाई हमला' सुनायी पड़ता है। आप पुन: अपनी मांद में चले जाते हैं, जहां नमी आपके चेहरे को चूमती है और जहां आप दीये की कालिख मे अपने दोस्तों को मुश्किल से पहचान पाते हैं।"

हमारे अनेक वीरों के समान मारिया भी हमारे दिनो को देखने के लिए जीवित नही रही। जब मेरा ध्यान इस उत्कृष्ट युवती की ओर जाता है तो हमारे देश की अन्य अनेक बेटियों की ओर भी ध्यान खिंच जाता है जिन्होंने युद्ध के तमाम संकट और परेशानियां हमारे पुरुषों के साथ झेली थी। मेरे लिए वे सोवियत संघ की महानता की मूर्तरूप हैं।

□ □

धावा...अप्रैल की लड़ाई के बाद यह शब्द सारी सेना की जबान पर, एक सिपाही से लेकर कमांडर तक, हर एक की जबान पर था। हमें अपने गाँव और शहर दुश्मन के लिए छोड़ने पड़े थे, इस वजह से हमने बहुत अधिक पीड़ा झेली थी, महीनों तक जारी रहने वाली लंबी घेरेबंदियों ने हमें हमलावरों के खिलाफ़ कड़वाहट से भर दिया था और हमारे अंदर बदले की प्यास असह्य हो गयी थी।

"तो फिर कब?" सिपाही, कमांडर और राजनीतिक कार्यकर्ता लगातार पूछते रहते। इसमें वे "धावा" शब्द न जोड़ते—इसकी जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि सभी लोग समझते थे कि इस प्रश्न का अर्थ क्या था। और उत्तर में हम एक ही शब्द कह सकते थे—"बहुत जल्द।" धावा बोलने का दिन और उसकी सारी योजना गुप्त रखी गयी थी। लेकिन यह तथ्य छिपाना बहुत मुश्किल था कि इसकी तैयारियां हो रही थीं, और यह बात छिपाने का सचमुच कोई कारण भी नहीं था।

स्थिति उस बिंदु पर पहुँच रही थी कि जहाँ हम जबर्दस्त प्रहार कर सकते थे। अब हर मोर्चे पर पहल लाल सेना के हाथ में थी। फासिस्ट सैनिक कमान ने अचानक हमलों और बेहतर हथियारों की वजह से शुरू में जो पहल हासिल कर ली थी वह अब निश्चित रूप से उसके हाथ से निकल चुकी थी। 1943 में बहादुर मजदूरों ने, जो पृष्ठ प्रदेश में काम कर रहे थे, मोर्चे पर 24,000 टैंक और स्वचालित तोपें, 35,000 हवाई जहाज और 1,30,000 बंदूकें भेजीं। इस तरह उस वक़्त भी हमारे पास दुश्मन की तुलना में अधिक आधुनिक हथियार, और उससे ज्यादा संख्या में, हो गये थे। इसे स्पष्ट रूप में कहा जाये तो 1943 की गर्मियों में कई बड़ी लड़ाइयों में जीत हासिल कर सोवियत सेना मोर्चे के मध्यवर्ती संभाग में पश्चिम की ओर 300 किलोमीटर और यहाँ दक्षिणी संभाग में 600 किलोमीटर आगे बढ़ चुकी थी।

अब, वे परिस्थितियाँ क्या थीं जिनके कारण नोवोरोसिस्क पर हमले का विचार पैदा हुआ?

स्तालिनग्राद की लड़ाई के बाद हिटलर ने अनुभव किया कि वह और कठिन घेरेबंदी में फँस सकता है, इसलिए उसने अपनी दक्षिणी मोर्चेबंदी पर जमे रहने की खासतौर से जी-तोड़ कोशिश की। वह समझ गया कि अगर उसके हाथ से

तामान निकल गया तो वह संपूर्ण क्रीमिया गँवा बैठगा और उक्रइन में उसकी सेनाएँ और अधिक खतरनाक स्थिति में फँस जायेंगी। तामान पर अपना शिकंजा कायम रखने के लिए फासिस्टों ने कृष्ण सागर से लेकर अजोव सागर तक एक शक्तिशाली रक्षापंक्ति निर्मित कर ली। यह सुरंगों, टैंकवेधी अवरोधों, बाधाओं, किलेबंद चौकियों और पिलबाक्सों, तथा तोप चलाने के बख्तरबंद ठिकानों से रक्षित दो पट्टियों में निर्मित की गयी थी।

ए० ए० ग्रेच्को की सेना हमारी सेना की बगल में लड़ रही थी और उन्होने फासिस्टों के प्रतिरोध की भयंकरता का सबसे पहले अनुभव किया। (आंद्रेई ग्रेच्को युद्ध के दौरान एक सेना के कमांडर थे, बाद में वह सोवियत संघ के मार्शल हुए। 1967 से 1976 तक वह सोवियत संघ के प्रतिरक्षा मंत्री थे। 1976 में आंद्रेई ग्रेच्को का देहान्त हो गया)। वह एक पहाड़ी पर कब्जा करते, फिर उन्हें रुक जाना पडता। उसके बाद वे दूसरी पहाड़ी पर कब्जा करते और तब उन्हे फिर रुक जाना पडता। मुझे याद है कि युद्ध में एक विराम के समय लेसेलिद्ज़े, कोलोनिन, कर्नल जारेलुआ और मैं फेल्ट का एक चोगा बिछा कर बैठे स्थिति पर विचार-विमर्श कर रहे थे। तभी लेसेलिद्ज़े ने कहा :

"तुम्हें एक बात बताऊँ ? तामान और क्रीमिया की कुंजी इन पहाड़ियों में नहीं, बल्कि नोवोरोसिस्क पर कब्जा करने में है। हम आला सदरमुकाम से और अधिक कुमुक, करीब 17,000-20,000 सैनिक, भेजने के लिए क्यों नही अनुरोध करते! तब हम हमले की योजना बनाकर धावा बोल देंगे।"

हमने ऐसा ही किया। लेसेलिद्ज़े ने मास्को से संपर्क किया, आला सदर-मुकाम ने हमारी पहलकदमी को मंजूरी दे दी और हमारे पास ग्लाद्कोव की डिवीजन भेज दी। और इस तरह सब-कुछ शुरू हुआ।

जर्मनों ने नोवोरोसिस्क को अपने प्रतिरोध का मुख्य केन्द्र बना लिया था। मोर्चे पर शक्तिशाली क़िलेबंदी के साथ-साथ उन्होंने खुद नगर में ही बहुत-से मज़बूत ठिकाने बना रखे थे। बड़े आवास-घर, कारखाने, अन्न-गोदाम और रेलवे स्टेशन हथियारों से खचाखच भर दिये थे। पूरे-के-पूरे मौहल्लों और जिलों मे खाइयों का जाल बिछ गया, सड़कों पर रुकावट के लिए अवरोध खडे कर दिये गये। बंदरगाह की विशेष रूप से ज़बर्दस्त किलेबंदी की गयी।

जर्मन सैनिक कमान इस धारणा पर काम करता था कि उसे सोवियत सेना की सभी चालो का पता था। हम अक्सर प्रतिरोध के बडे केन्द्रों पर सीधे हमला नही करते थे, बल्कि उन्हे छोडकर आगे बढ जाते थे। इसलिए जब वे नोवोरो-सिस्क की किलेबंदी कर रहे थे तो उन्हे सचमुच यह आशा नहीं थी कि हम वहाँ हमला करेंगे। और यही उनकी गलती थी। नोवोरोसिस्क में ही दुश्मन की रक्षा-पंक्ति तोड़ देने के हमारे निर्णय के पीछे एक कारण यह था कि हम शत्रु को

अचम्भे में डाल देना चाहते थे।

उस समय तक 18वीं सेना ने सैनिक उतारने के सिलसिले में काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था। और हम समझते थे कि पूर्व-योजना के अनुसार नगर पर सिर्फ दो तरफ़ से नहीं बल्कि अब तीन तरफ से—दायी, बायी और त्सेमेस्काया खाड़ी अर्थात मालाया जेम्लिया की तरफ से, सीमेंट कारखाने की तरफ़ से और एक बड़ी सेना के साथ समुद्र की तरफ़ से एक साथ हमला बोल सकते थे। तीसरी ओर से हमला होने पर दुश्मन पूरी तरह भौंचक रह जाता। अब हमारे सैनिक कमान ने यही योजना बनायी।

हम दुश्मन के लिए एक और अचम्भे की तैयारी कर रहे थे। यह माना जाता है कि बड़ी सेनाएँ उतारने के लिए बड़े जहाज़ काम मे लाये जाते हैं, और जर्मन ठीक इन्ही बड़े जहाज़ों की ताक में भी थे। अत: हमने अपने आदमियो को छोटी नावों से किनारे पर पहुँचाने का निर्णय किया। जर्मन किलेबंदियो को हम पनडुब्बी हमलों से उड़ा देने की भी योजना बना रहे थे। अब तक कभी पनडुब्बियों को तट पर हमले के लिए इस्तेमाल नही किया गया था। वे समुद्री लड़ाइयों में जहाज़ों पर हमले के लिए बनी थी। पनडुब्बी के सैनिको को योजनानुसार पनडुब्बी से हमला करने के लिए अपनी सारी दक्षता का उपयोग करना था।

हर आदमी जानता है कि यदि शत्रु को आपकी योजना का पता चल जाये तो वह शुरू होने के पहले ही आधी खत्म हो जाती है। इसलिए हमारी पहली सबसे बड़ी चिंता यह थी कि सब कुछ पूरी तरह गुप्त रहे। आगामी कार्रवाई के बारे में किसी भी तरह का पत्र-व्यवहार बंद कर दिया गया। योजना बनाने मे यथासंभव कम-से-कम लोग शामिल किये गये। हमने दुश्मन को भ्रम मे डालने के लिए एक असाधारण रूप से विस्तृत क्षेत्र मे बड़ी सुव्यवस्थित गश्ती कार्रवाई शुरू कर दी। जर्मनो को गुमराह करने के लिए विशेष क़दम उठाये गये : अति दक्षतापूर्वक की गयी कई कार्रवाइयों ने उन्हे विश्वास दिला दिया कि हम युभनाया ओजेरइका के पास फिर सेनाएँ उतारने की कोशिश कर रहे हैं।

धावे की तैयारी के लिए पार्टी संबधी और राजनीतिक कार्य भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि सैनिक तैयारियाँ करना। निश्चय किया गया कि जब तक हमला शुरू हो, प्रत्येक यूनिट का अपना पूर्ण और कारगर पार्टी संगठन तैयार हो जाये। इसका अर्थ यह था कि कम्युनिस्टों को हमले के दौरान अत्यन्त सकटपूर्ण सेक्टरों का काम सौंपा गया। हमने उतारी जाने वाली सेना के लिए आदमियो के चुनाव में विशेष सावधानी बरती। दस्ते के 60 से 70 प्रतिशत तक लोग कम्युनिस्ट और कोम्सोमोल के सदस्य थे।

मैंने यह भी निश्चित किया कि राजनीतिक विभाग के कर्मियों को अधिक

विवेकसंगत रूप से कैसे नियुक्त किया जाये। प्रत्येक कार्यकर्ता को संपूर्ण कार्रवाई के दौरान सुनिश्चित रूप से अलग-अलग यूनिटों के साथ संबद्ध कर दिया गया। जब मैं उनसे बाद में उनकी डिवीजनों और रेजिमेंटों में मिलता तो देखता कि वे अत्यधिक उत्साह से लड़ रहे थे, और अपनी वीरोचित भावना से दूसरों में भी उत्साह भरते थे। हमने सुरक्षित सेना से बड़ी संख्या में राजनीतिक कार्यकर्ता लिये ताकि लड़ाई के दौरान जो लोग मारे जायें उनकी जगह जल्द भरी जा सके। पार्टी संगठनकर्ताओं के दो और कोम्सोमोल के संगठनकर्ताओं के तीन सहायक थे। इस प्रकार हम पार्टी और कोम्सोमोल-नेताओं को हरेक उप-इकाई में सभी समय बनाये रख सके।

नोवोरोसिस्क के मुक्त किये जाने के बाद हमें पता चला कि "सैनिकों के लिए निर्देशन-पुस्तिका" जिसका हमने पहले संकलन किया था, आड़े वक्त में हमारे काम आयी। प्रस्तावना के कई पैराग्राफों में सभी मोर्चों पर लाल सेना की सफलताओं, हिटलरी दरिंदों के जुल्मों आदि के बारे में बताते हुए यह कहा गया था कि अन्ततः हम लोगों के लिए शत्रु पर करारा प्रहार करने और उसके तमाम अपराधों का बदला चुकाने का समय आ गया है। इसके बाद उसमें महत्वपूर्ण व्यावहारिक सलाह दी गयी : सैनिकों को संक्षेप में यह बताया गया कि अवतरण जहाज़ पर जब सवार हों तो उनका व्यवहार किस प्रकार का हो, खुद जहाज पर उनका व्यवहार कैसा हो तथा उतरने के दौरान और अंत में युद्ध में वे किस प्रकार व्यवहार करें। हम लोगों ने सैनिकों को यह बताने की कोशिश की कि अज्ञात परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रिया किस प्रकार हो। प्रत्येक सैनिक को इस निर्देशन-पुस्तिका की एक-एक प्रति दी गयी।

निर्देशन-पुस्तिका का विचार गृह-युद्ध के समय में दक्षिणी मोर्चे के सैनिकों से मेरे पास आया। उस समय लेनिन ने इसमें बहुत अधिक दिलचस्पी दिखायी थी और कई विशेष रूप में महत्वपूर्ण अंशों को रेखांकित किया था। वास्तव में हम लोगों ने कई नियमों को ग्रहण कर लिया, जिनको ओर लेनिन ने हमारे पार्टी और राजनीतिक कार्य में विशेष रूप से इंगित किया था। यहाँ हम उस निर्देशन पुस्तिका की कुछ पंक्तियाँ दे रहे हैं :

"साथी कम्युनिस्ट...आप लड़ाई में जाने वाले पहले व्यक्ति होंगे और हटने वाले सबसे अंतिम। आपको मोर्चे पर इसलिए बुलाया गया है कि आप लाल सेना में जन-समुदाय को शिक्षित करें, पर आप राइफल उठाने के लिए हर क्षण तैयार रहें और अपने उदाहरण से यह दिखलाएँ कि कम्युनिस्ट केवल सम्मान के साथ जीना ही नहीं जानता, बल्कि सम्मान के साथ मरना भी जानता है।"

जहाँ तक मुझे याद है कि जब हम लोग हमले की तैयारी कर रहे थे तो दिन-रात हमारे लिए असाधारण रूप से गहन कार्य और अकूत जिम्मेवारी का समय

वन गये थे। परंतु मालाया जेम्लिया पर घेरेबंदी के दौरान दिन और रात से यह कितना भिन्न था। यह काम किसी पर बोझ नहीं बना और यह जिम्मेवारी आनंद देने वाली थी तथा हर मीटिंग से नया उत्साह और जोश पैदा हुआ। मालाया जेम्लिया पर सबसे पहले उतरने वाले वीर वी० ए० बोतिलेव और उनके राजनीतिक मामलो के डिप्टी एन० वी० स्तार्शिनोव जिस पृथक सागरीय बटालियन (सेपरेट मैरीन बटालियन) की कमान संभाले हुए थे वह अवतरण मे स्वेच्छया अग्रिम दल बनने के लिए आगे आयी। यही वह बटालियन थी जिसे एक झंडा नोवोरोसिस्क मे शत्रु से छीने गये सबसे ऊँचे भवन पर फहराने के लिए दिया गया था। मँझले अफसर (द्वितीय श्रेणी) व्लादीमिर स्तोर्भेव्स्की ने, जो कम्युनिस्ट पार्टी के नौजवान सदस्य थे, झंडे को एक बहुत बड़े सम्मान के रूप में स्वीकार किया। उन्हे इतना बडा जो विश्वास सौंपा गया उससे यह गहन रूप मे अभिभूत हो उठे और उस साहसी स्काउट और मालाया जेम्लिया पर सबसे पहले उतरने वाले वीर ने अपने साथियों से कहा : "मैं जल-बेड़े के सम्मान को लाछित नही होने दूंगा।"

अंत मे सेना के कमाडर के० एन० लेसेलिद्जे ने उन सभी कमांडरों को बुलाया जो हमले मे फौज का सेनापतित्व करने वाले थे तथा "ह" घड़ी (हमले का क्षण) की घोषणा की—अर्थात इस बात की घोषणा की कि 10 सितम्बर की भोर के समय हमला कितने बजकर कितने मिनट पर किया जायेगा। अंतिम बार हर व्यक्ति ने अपने कार्यभार की फिर से जांच-पडताल की। इसके बाद कार्रवाई के छह घंटा पहले उत्तर काकेशियाई मोर्चे के प्रधान सेनापति आई० वाई० पेत्रोव ने सेना और जल-सेना के कमांडरों की बडी मीटिंग बुलायी और उसमें हर व्यक्ति ने रिपोर्ट की कि हर चीज़ व्यवस्थित है।

आक्रमण के एक घंटा पहले सभी राइफल यूनिटों और अवतरण दस्तों में तथा जहाज़ों पर मीटिंगें हुईं। सैनिकों को बहुत कुछ बताना था जो पहले नही किया गया था, इसलिए सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक शब्दों का चुनाव करना था। मैं इनमे से कई मीटिंगो में मौजूद था और मैंने देखा कि सैनिक हमले के आदेश के प्रति अत्यधिक संतोष और, मैं कहूँगा, ख़ुशी भी व्यक्त करते थे।

वह दिन जिसका हम 255 दिनों और रातों से इंतजार कर रहे थे, अंततः आ पहुँचा था। मार्खोत्स्को पहाड़ी पर प्रधान सेनापति की पर्यवेक्षण चौकी क़ायम की गयी जहाँ से त्सेमेस्काया खाडी, बंदरगाह और नगर का काफी बड़ा भाग स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

रात। कार्रवाई शुरू होने में अभी कुछ समय बाकी है पर बहुत लोग यहाँ आ चुके हैं: सेना के कमांडर, सेनापति के मुख्य विभागीय अधिकारी जनरल एन० ओ० पास्लोव्स्की कई सैनिक अधिकारियों के साथ मौजूद थे, अपने सहायकों के

साथ तोपखाने के कमांडर जनरल जी० एस० कारियोफिली तथा सेना की अन्य शाखाओं के कमांडर भी थे। तनावपूर्ण शांति छायी हुई थी, जो टेलीफोन की आवाज से भंग होती थी। स्काउटों ने रिपोर्ट की कि शत्रु-पक्ष की ओर से कोई सैनिक गतिविधि नही हो रही है। कभी-कभी एकाध गोला कही फूटता, और उसके बाद फिर शांति छा जाती। विचित्र बात यह थी कि हर आदमी धीमे स्वर मे, प्रायः बुदबुदा कर बोल रहा था। सैनिक अफसरो और जनरलो की नज़रें अपनी-अपनी घड़ियों पर टिकी हुई थीं।

अंत मे "ह" घड़ी—2.44 बजे भोर—आयी! मैं जानता था कि 800 बंदूकें और 227 "कात्यूशा" तोपें उस क्षण गोले दागेंगी और 150 बम-वर्षक विमान उड़ान भरेंगे। मुझे स्वभावतया इस बात का थोड़ा आभास था कि एक साथ इतने गोले दगने की आवाज कितनी भीषण होगी, परंतु मैंने जो सुना वह स्तब्ध कर देने वाला था। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो सारी धरती ही चूरचूर हो रही है।

तोपखाने की तैयारी के 15 मिनट के दौरान 35000 गोले उन लक्ष्यो पर छोड़े गये जिन्हें पहले से देख लिया गया था। सागरीय और राइफल दस्ते मालाया जेम्लिया से हमला करने के लिए दौड़ पड़े। सागरतट की उस मूल्यवान पट्टी को हम लोगों ने इतने दिनो तक बेकार अपने अधिकार मे नही रखा था। दूसरी ओर, सीमेंट फैक्टरियों के नज़दीक से हमला किया गया और एक जलस्थलीय सेना ने शत्रु को पूर्व-योजना के अनुसार अपने साथ में युद्ध मे उलझा लिया।

नगर मे जो आग फूट पड़ी उससे त्सेमेस्काया खाड़ी रोशन हो उठी। मैंने गेलेन्द्भिक की दिशा में अँधेरे में घूर कर देखा, पर केवल बंदरगाह के निकट मेरी निगाह "तोड़क" नौकाओं के प्रथम समूह पर पडी जो तीव्र गति से बाधाओं को नष्ट करने के लिए भागी जा रही थी। तोपों से गोले दागना शुरू किये अभी सिर्फ छह मिनट हुए थे। "रास्ता साफ़ है" का पूर्व-नियोजित संकेत-प्रकाश दिया गया। कुछ मिनट बाद पनडुब्बी पोत असाधारण तीव्रता से खाडी में घुस आये और पश्चिमी और पूर्वी पोत घाटो पर भारी गोले दागने शुरू कर दिये। यह जबर्दस्त प्रहार था जिसने तटवर्ती किलेबंदी को ध्वस्त कर दिया। धुएँ और सीमेंट की धूल तट पर छा गयी और सेनाएँ उतारने वाली नावों को ढक कर शत्रु से बचने मे मदद की। ठीक 15 मिनट मे, यानी जिस क्षण तोपों की गोलाबारी बंद हुई, बोतिलेव की बटालियन पोत घाट पर लड़ाई करने लगी थी। केवल आधे घंटे में शत्रु की भीषण गोलाबारी के बावजूद भारी मशीनगनों, मोर्टार और टैंकरोधी राइफलो से लैस होकर 800 सैनिक अपने गंतव्य पर पहुँच गये।

त्सेमेस्काया खाड़ी जैसे मथ उठी थी। हर ओर से पोत आ-जा रहे थे, और जब वे मुड़ते तो पानी की दीवार खड़ी कर देते और लगता कि वे किसी क्षण टकरा जा सकते हैं। परंतु हर चीज निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हो रही थी।

तारपीडो तोपों के पीछे-पीछे तोपधारी नावें और गश्ती नावें, और सेइने-नेत्तेर नौकाएँ अपने-अपने रास्तों से आयीं। एक के बाद एक लेस्नाया (शहतीर), एलिवातोरनाया (एलिवेटर), नेफ्तेनालिवनाया (तेल टैंकर) और इम्पोर्तनाया (आयात) पोत घाटों पर हमला किया गया। विस्फोटों और गोलों से निकली आग से बंदरगाह के चतुर्दिक खाड़ी में तेज रोशनी फैल गयी। पानी सचमुच उबल रहा था।

लगभग उसी समय बोतिलेव की बटालियन ने लेस्नाया घाट पर हमला किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। 1339वीं राइफल रेजिमेंट ने एस० एन० कादान्त्रिक के अधीन सीमेंट घाट पर धावा बोल दिया, हालाँकि पूरी रेजिमेंट उतर नहीं सकी पर जो लोग उतर पाये, उन्होंने हौसले के साथ शत्रु की किलेबंदी पर हमला किया। सुबह तक उन लोगों ने एक महत्वपूर्ण गढ़ पर अधिकार जमा लिया—वह थी "प्रोलेतारी" सीमेंट फ़ैक्टरी। रेजिमेंट के शेष आदमी दूसरी रात उनके साथ हो लिये।

पर्यवेक्षण चौकी पर लगातार टेलीफोन की घंटी बज रही थी। सभी सैन्य दस्तों और टुकड़ियों से संचार क़ायम रखा गया। प्रधान सेनापति एक प्रतिभाशाली सैनिक थे और लड़ाई का निर्देशन आधिकारिक शांति और दृढ़ता के साथ किया। उन्होंने शीघ्रतापूर्वक दस्तों को पुनर्गठित होने दिया, सुरक्षित सेना को आगे बढ़ाया और जहाँ कहीं कोई ख़तरा उत्पन्न हुआ वहाँ सेनाएँ भेजी।

प्रारंभिक क्षणों में शत्रु स्तब्ध रह गया, पर उसने शीघ्र अपना संतुलन हासिल कर लिया। हर इमारत, हर प्रखंड आग उगल रहा था। एक बार जब हिटलरी सेना ने यह देख लिया कि पुल पर हमने जितना कब्ज़ा कर मोर्चाबंदी की है, उसकी सीमाएँ क्या है तो उन्होंने उसके विरुद्ध तोपों की बाढ़ छोड़ दी। परंतु हमारे पास भी तोपें थीं जो आगे बढ़ने वाली इकाइयों की रक्षा के लिए साथ गयी थीं। हमारे विमानचालकों ने अपनी कार्रवाइयाँ समन्वित कर ली थीं, इसलिए वे जरा भी ढील दिये बिना शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्र पर लगातार बमबारी कर सके। हमारे हमलावर विमान लगातार आकाश में थे और एक दिन में 6-7 उड़ानें भर रहे थे।

दूसरी रात को 1337वीं रेजिमेंट बिजलीघर के पास पहुँच गयी। 318वीं राइफल डिवीजन के कमांडर कर्नल वी० ए० व्रुस्की भी अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँचे, परंतु उनके साथ संचार शीघ्र टूट गया। मैंने देखा कि सेना के कमांडर चिंतित थे। यह महज़ कंपनी या बटालियन नहीं थी बल्कि पूरी एक डिवीजन थी और जिसे मुख्य हमले की दिशा में भेजा गया था, पर अब उसका कोई सुराग़ नहीं मिल रहा था।

लेसेलिद्ज़े ने आदेश दिया कि किसी ज़िम्मेदार अधिकारी को बिजलीघर

क्षेत्र मे ब्रुस्की को खोजने के लिए भेजा जाये और वह देखे कि वहाँ क्या स्थिति है और तत्काल वापस आकर रिपोर्ट करे। थोडा सोचने के बाद मैंने कमांडर को सुझाव दिया कि वह इस मिशन को मेरे सहायक पाखोमोव को सौंपें। कमांडर उन्हें अच्छी तरह जानते थे और वह शीघ्र सहमत हो गये, परंतु उन्होंने कार्रवाई डिवीज़न के प्रधान को कहा कि वह डिवीज़न के एक कप्तान पुशिस्की को पाखोमोव के साथ भेज दें।

कमांडर ने आगे कहा : "मेरी जीप ले लो।"

उन्हें अग्रिम पाँतों से होकर नगर मे जाना था तथा ऐसे इलाके से गुजरना था जिस पर शत्रु भारी गोलाबारी कर रहा था, ब्रुस्की की खोज करनी थी तथा अनुभवी नज़र से परिस्थिति का मूल्यांकन करना था, उसे नक्शे पर चिन्हित करना था और जितनी जल्दी सम्भव हो, वहाँ से वापस लौटना था। सौभाग्यवश दोनो सुरक्षित लौट आये, हालांकि कमांडर की जीप के, जिसे उन्होंने "ओक्त्याब्र" कारखाने के पास खडा किया था, परखचे बमबारी से उड गये थे। पहले उन्हें कई बाधाओ पर काबू पाना पडा, और तट के छोर पर डाले गये नाले से अपना रास्ता बनाते हुए वे ठीक बिजलीघर के सामने थोडी खुली जगह पर पहुँचे; उसकी दाहिनी ओर एक लम्बी इमारत थी। उससे फासिस्ट लगातार गोलाबारी कर रहे थे। बिजलीघर करीब 70 मीटर दूर था, परंतु वहाँ तक पहुँचने के लिए उस खुली जगह को पार करना जरूरी था या फिर कोयले के कुछ टीलों के पीछे की इमारत के पास से होकर वहाँ जाया जा सकता था। उन लोगों ने समय बर्बाद नही किया। पुशिस्की कोयले के टीले के पीछे रेंगते हुए बढने लगे, जब कि पाखोमोव विद्युत-गति से खतरनाक खुली जगह को पार कर गये। उन्होने बाद मे हम लोगों को पूरी गंभीरता से आश्वस्त किया कि दौडने मे कोई विश्व चैम्पियन भी उन्हें उस वक़्त नही पछाड़ सकता था। हालांकि उस प्रकार जाना खतरनाक था, पर वे लोग उसी रास्ते से लौट आये। और केवल एक ही नही बल्कि दो नक्शों और रिपोर्टों के साथ लौटे ताकि यह निश्चित हो जाये कि सूचना सैनिक-परिषद तक पहुँच जायेगी। वे लोग अपने साथ कुछ दुःखद समाचार भी लाये : कर्नल ब्रुस्की बुरी तरह जख्मी हो गये थे, उनकी एक आँख नष्ट हो गयी थी तथा एक बाजू मे घाव हो गया था। उस डिवीज़न के दस्तों की मदद करने के लिए पग उठाये गये जो धीमी रफ़्तार से, लेकिन लगातार प्रगति कर रहे थे। डिवीजन कमांडर की ड्यूटी अस्थायी तौर पर उसके मुख्य सेनाधिकारी को सौंप दी गयी।

सड़को पर लड़ाइयाँ हो रही थी। एक के बाद दूसरी रिपोर्टें आ रही थी : रेलवे पर अधिकार कर लिया गया और उस पर नौसेना का झंडा लहराया जा चुका है, "भूरी कोठी" पर कब्जा कर लिया गया, "लाल मकान" पर अधिकार

कर लिया गया, हमारे जवान स्कूल में घुस गये, 103 नं० के ज़िले को मुक्त कर लिया गया...और प्रत्येक रिपोर्ट के साथ दुखदायी समाचार भी होते थे 318वीं डिवीजन के राजनीतिक विभाग के प्रधान लेफ्टि० कर्नल ए० तिखोस्तुप मारे जा चुके...सेना के राजनीतिक विभाग के प्रशिक्षक मेजर पी० ईसायेव मारे गये... सेना के राजनीतिक विभाग के निरीक्षक मेजर स्तेद्रिक मारे गये...थोड़ी देर पहले एम० विदोव मारे गये और बाद में अनापा के निकट 83वें सागरीय दस्ते के राजनीतिक विभाग के प्रधान के० लुकिन मारे गये।

मुझे याद है कि हम सभी एक रूमानियाई खाई में जा रहे थे जिसे ठीक रेतीले तट पर बनाया गया था। उस दिन अत्यधिक गर्मी थी, और मैं, लेसेलिद्ज़े, जारेलुआ तथा लुकिन थोडी छाया की तलाश कर रहे थे, पर ज्यों ही हम लोग अंदर घुसे कि हमने कुछ सरसराहट सुनी, धीमी घर-घर करती आवाज़ जो लगातार हो रही थी, और मैंने कहा :

"घड़ी चलने जैसी आवाज़ है। शायद उन लोगों ने कोई बम रख छोडा है। हम लोगो को यहाँ से बाहर निकल जाना चाहिए।"

हम लोग उससे निकल कर खुली जगह मे चले आये और चलकर उस खाई से थोडी दूर हट गये। हम लोगों के पास एक काकेशियाई लबादा था। हमने उसे फैलाया और उस पर लेट गये। लुकिन हम लोगो से थोडी दूर और हट गये। कभी-कभार कोई बम हमारे ऊपर से सरसराता निकल जाता। पूरे तट पर रेत की छोटी-छोटी पहाडियाँ बन गयी थी। जब विस्फोट की गर्जन ख़त्म हुई तो हम लोग खडे हो गये और मैंने अपने मित्रो को आवाज दी :

"लुकिन! लुकिन!"

कोई उत्तर नही। हम लोग उनके पास पहुँचे—पर वह मर चुके थे। एक खरोच तक नही। कुछ भी नही। वायुतरग ने उन्हे चिर-निद्रा में सुला दिया था।

सत्य नहीं, मित्र मृत्यु को
प्राप्त कभी न होता है,
वह अब केवल पास आपके
खड़ा कभी न होता है।
और आपके साथ कभी संबंध
निभा न पाता है,
कभी आपके साथ कार मे
वह न सैर कर पाता है।

(ये पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध सोवियत कवि कोन्स्तान्तिन सिमोनोव द्वारा 1942 मे लिखी गयी "एक मित्र की मृत्यु" शीर्षक कविता से ली गयी है।)

कवि ने इसे सबसे अच्छी तरह अंकित किया। मेरे दिमाग ने इसे स्वीकार किया। एक लड़ाई लडी जा रही थी और नुकसान होना लाज़मी था। परंतु मेरे हृदय ने यह मानने से इंकार कर दिया और मैं अत्यधिक दुखी था। मैंने विधवाओं को पत्र लिखे, मैंने अपने हाथों से अपने साथियों की कब्र पर रेत डाली और उनके लिए शोक मे दागे गये अनेक गोलों मे मेरी सब-मशीनगन के गोले भी शामिल थे। वे पार्टी के निष्ठावान पुत्र थे, उन्होंने पार्टी के नाम पर खतरनाक युद्धों में सैनिकों का नेतृत्व किया और उनका आह्वान किया कि वे अपने देश के लिए आखिरी सांस तक लड़ें। और, लड़ाई मे वे उस काम को सबसे पहले करते थे जिसे वह दूसरो से करने की आशा करते थे तथा वीरतापूर्ण कार्य संपन्न करने के लिए सैनिकों को प्रेरणा प्रदान करते थे। उन लोगों ने लेनिन की शिक्षा को अंत तक पूरा किया—उन लोगों ने अपने उदाहरण से दिखला दिया कि कम्युनिस्ट न केवल सम्मान के साथ जीता है वल्कि सम्मान के साथ मरता भी है।

□ □

नोवोरोसिस्क के लिए छह दिन और छह रात लड़ाई चलती रही। मैं इसकी संख्या नहीं गिनाने जा रहा हूँ कि कितने दस्तों और टोलियों ने उस लड़ाई मे भाग लिया और न मैं आँकड़े उद्धृत करने जा रहा हूँ, क्योंकि उस समय हमले का युद्ध का ऐतिहासिक साहित्य मे विस्तार से वर्णन हुआ है। मैं कुछ और ही बात बतलाना चाहता हूँ। सैनिकों में आगे बढ़ने का उत्साह और उदात्त आक्रोश इतना अधिक था कि उन्हे अब कोई रोक नही सकता था। हर रोज़, यहाँ तक कि हर घंटे हमें ज़बर्दस्त सैनिक करिश्मे देखने के लिए मिले। मैं कम-से-कम इनमें से एक के बारे में आपको बताऊँगा।

जल-बेड़े के सैनिकों की एक कम्पनी ने किसी फ़ासिस्ट किलेबंदी के विरुद्ध तीन बार असफल आक्रमण किया। कम्पनी के कमांडर इवानोवो ने निर्णय किया कि शत्रु की मोर्चेबंदी मे दरार पैदा करने के लिए स्वयंसेवी हमलावार टोली गठित की जाये। उस टोली मे 11 व्यक्ति थे। टोली [illegible] कम्पनी के पार्टी

मेजर द्यान्को से कहा, "जब मशीनगन से गोली छूटनी बंद हो तो सैनिकों का धावे में नेतृत्व करो" और वह रेंग कर बढ़ गये। परंतु उन्हे ठीक तहखाने की खिडकी में चोट लगी जहाँ से मशीनगन की गोलियाँ चल रही थी। उनके शरीर से खून तेजी से बहने लगा, पर वह स्वयं खिड़की पर उछल पड़े। शत्रु के एक ठिकाने पर कब्जा कर लिया गया।

मैं सालाखुद्दीन वाल्यूलिन को पहले मालाया जेम्लिया से ही जानता था। वह हमारी पार्टी के सर्वोत्तम संगठन-कर्ताओं में थे। जब मैंने उनके पदक के लिए दस्तखत किये थे तो मैंने एक क्षण के लिए ऐसे करिश्मों की प्रकृति के बारे में सोचा था। इसमें जरा भी शक नहीं कि उन्हे पता था कि वह मौत के मुँह में जा रहे है। परंतु निश्चय ही एक क्षण के लिए भी उन्होने अपने आप से यह नही कहा होगा कि "ऐसा करने से मैं वीर बन जाऊँगा।" नही, उनकी वीरता को लंबे-चौडे बखान की अपेक्षा नहीं थी। इसके लिए चंद शब्दों की ही आवश्यकता है। यह दिखावट नही थी, मैं तो उसे विनम्रता ही कहूँगा। यह इस किस्म की बहादुरी है जिसकी लियो तोल्स्तोय विशेष रूप से कद्र करते हैं, जिसे उनके उपन्यास **युद्ध और शांति** में देखा जा सकता है। और यह करतब उसी रूप मे था जिस रूप मे तोल्स्तोय की इस शब्द की अवधारणा थी . हर चीज के बावजूद मनुष्य वही करता है जो उसे करना है।

जब मृत्यु से सामना होता है तो भय की भावना निस्संदेह मानवीय भावना, सहज भावना होती है। परंतु निर्णायक क्षण मे व्यक्ति जो निर्णय करता है, वह अपने आप पैदा होता है। किंतु, यदि मैं ऐसा कह सकूँ तो, यह निर्णय उस व्यक्ति के सारे पूर्ववर्ती जीवन द्वारा उद्बोधित किया जाता है परंतु एक निश्चित बिंदु होता है, एक निश्चित क्षण होता है जब किसी देशभक्त की अपने देश के प्रति कर्तव्य की अनुभूति उसकी भय और पीड़ा की भावना को, मृत्यु के विचार को मिटा देती है। इसलिए वीरतापूर्ण करतब ऐसी कारंवाई नही है जिसके पीछे कोई अर्थ नही होता, बल्कि उस ध्येय की पवित्रता और महानता के बारे मे दृढ आस्था होती है जिसके लिए कोई व्यक्ति अपने जीवन को न्योछावर कर देता है।

लेनिन ने गृह-युद्ध के दौरान यह लिखा था, "यह आस्था कि युद्ध न्यायपूर्ण ध्येय के लिए है और यह अनुभूति कि अपने बंधुओं के मंगल-कल्याण के लिए उन्हे अपने जीवन को अवश्य कुर्बान करना चाहिए, युद्धरत सैनिकों के मनोबल को मजबूत बनाती है और उन्हे इस लायक बनाती है कि वे असाधारण कठिनाईयाँ सहन कर सकें...इसका कारण यह है कि गोलबंद किया हुआ हर मजदूर और किसान जानता है कि वह किसलिए लड़ रहा है और न्याय तथा समाजवाद की विजय के लिए अपना खून बहाने को तैयार है।"

लेनिन के विलक्षण शब्द सुनिश्चित रूप से जनता की नैतिक शक्ति के मर्म

तक जाते है, जो महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वर्षो में न्याय और समाजवाद की विजय के लिए हमारी जनता की चिरस्मरणीय वीरता का स्रोत है।

16 सितंबर को मास्को मे उत्तर काकेशियाई मोर्चे और कृष्ण सागर जल-बेड़े के वहादुर लडाकू जवानों के सम्मान मे तोपों की सलामी दी गयी। अंततः दुश्मन का जबर्दस्त प्रतिरोध ध्वस्त हो गया। जमीन के छोटे उजाड़ टुकड़े पर जिस पर स्तानिचका नाम की छोटी बस्ती थी, हमारे सैनिकों ने सात महीने की घेरावंदी वर्दाश्त की और विजयी हुए। हिटलरी सैनिकों ने एक बड़े नगर पर अधिकार कर लिया था जिसे उन्होने अभेद्य दुर्ग के रूप मे बदल दिया था और हम लोगों ने उन्हे वहाँ से छह दिनों में भगा दिया।

नगर को मुक्त कराने वालों के अपूर्व शौर्य और वीरता की देश ने अत्यधिक सराहना की। नोवोरोसिस्क के नाम पर उन्नीस दस्तों और इकाइयो के नाम रखे गये। हज़ारों सैनिको और सेनाधिकारियों को सोवियत संघ के आर्डरों और पदकों से विभूषित किया गया। जिन दर्जनों लड़ाकू योद्धाओं ने वीरता का विलक्षण करतब कर दिखाया था, उन्हे 'सोवियत संघ का वीर' की विशिष्ट उपाधि से विभूषित किया गया।

नोवोरोसिस्क मे सेना उतारने का काम ऐसा था जिसमे सेना के सभी पक्षो ने भाग लिया था और वह महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की एक सबसे बड़ी और सर्वाधिक असाधारण घटना थी।

द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास में नोवोरोसिस्क की लडाई सोवियत जनता की विजय पाने की अविचल संकल्पशक्ति, उनकी युद्धशूरता और निर्भीकता, लेनिनवादी पार्टी और अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति उनकी असीम निष्ठा का उदाहरण है।

मैंने सर्वोच्च सेनाध्यक्ष का आदेश रेडियो पर सुना था। उस समय हम लोग एक आधी टूटी इमारत मे थे जहाँ नगर पार्टी-समिति ने अपना दफ्तर स्थापित किया था। हम लोगों ने नगर-निवासियो की सभा आयोजित नही की थी. वहाँ कोई निवासी नही रह गया था। इसके बाद हम लोग सडको पर घूमने लगे पर वहाँ कोई सडक नही थी। केवल मलवे थे। नगर मे जहाँ-तहाँ आग लगी हुई थी। कही एक तहखाने मे एक वृद्धा महिला और एक बिल्ली मिली। इसके अलावा कही कोई आदमी या जीव-जंतु नही था। मुझे याद है कि निकट मे अनाज का एक गोदाम और नाविकों का क्लब था। पिछले दिन फासिस्टों ने हमारे सभी लोगों को गिरफ्तार कर लिया था। इसी जगह पर उन्हें लाये, उनके ऊपर तेल छिड़का और उन्हे जला दिया। यह ऐसा दृश्य था जिसे देखकर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जायेंगे।

सुरंग साफ करने वालों ने बहुत मेहनत से काम किया। उन लोगो ने हज़ारों

सुरंगों, अत्यधिक विस्फोटक बमों और ऐसे बमों को जिनका विस्फोट नहीं हुआ था, हटाया और बेकाम कर दिया। उन लोगों ने ऐसे साइनबोर्डों को हटा दिया जिन पर यह लिखा था : "नगर में पाये जाने वाले किसी भी व्यक्ति को उसी जगह गोली मार दी जायेगी।" फासिस्ट हमारी जनता से डरते थे... नाविक क्लब के सामने आलू के खेत थे और मैं दूसरे लोगों की अपेक्षा तेज़ी से चला। कोलोनिन ने पूछा :

"इतनी जल्दी क्या है ?"

मैंने उत्तर दिया, 'आप सैनिक परिषद के सदस्य है। मैं राजनीतिक विभाग का प्रधान हूँ। मुझे आपसे दो कदम आगे रहना चाहिए।"

नोवोरोसिस्क को मुक्त करने के बाद थोड़ा रुकना और दम ले लेना अच्छा होता, परंतु हम रुक नही सकते थे, यहाँ तक कि एक घंटे के लिए भी नही रुक सकते थे। नोवोरोसिस्क पर सफलतापूर्वक क़ब्ज़ा करने का अर्थ था कि हम लोग संपूर्ण मोर्चेबंदी पर आगे बढ सकते थे। हमारी फ़ौजों का असली दबाव पाकर जर्मन वस्तुतः भाग रहे थे। हम लोगों ने तथाकथित चोरतोवी (शैतान का) द्वार पर अधिकार कर लिया और अनापा का मार्ग हमारे लिए खुल गया। हिटलरी कमान को अपनी "कार्रवाई 'क्रिमहिल्ड'" (तामान प्रायद्वीप से नियोजित ढग से सेना हटाना) को रद्द करना पड़ा और "कार्रवाई 'ब्रुनहिल्ड'" (शीघ्रतापूर्वक खाली करना) शुरू करनी पड़ी। परंतु वह उपाख्यानिक देवी भी उन्हे मदद नही कर सकी।

एक दिन भोर में जब हम कार से सड़क पर बढे चले जा रहे थे तो हमे यह सूचना मिली कि हमारे विमान आगे बढकर जर्मन दस्तों पर हमला कर रहे है। कार मे हम चार व्यक्ति थे : कोलोनिन, जारेनुआ और सेनापति का सहायक अधिकारी क्रावचुक और मैं। जो व्यक्ति गोलीबारी के बीच काफी समय बिताता है, उसमें एक प्रकार के छठे इंद्रिय-बोध का विकास हो जाता है और मैं चीखा :

"सुनो, वे हम लोगों पर बम गिराने जा रहे हैं, लेट जाओ!"

हम लोग रुक गये, उछलकर बाहर निकले और सड़क की बगल मे चौरस लेट गये, पर जो भी हो, हम अपने ही विमानों से मारे जाने से बचे। हालाँकि इसके लिए सचमुच विमान-चालकों का दोष नही था। यह हमला करने का जोश था, आगे बढने की उत्सुकता थी, हम रुक नहीं सकते थे।

21 सितंबर 1943 को हमारी सेना के टैंक और पैदल-दस्तो ने करारी चोट की और अनापा शहर को मुक्त कर लिया जो एक बंदरगाह तथा क्रीमिया की राह मे शत्रु के प्रतिरोध का मुख्य केंद्र था। हमारा धावा इतना तेज़ और भीषण था कि हमलावर अपने पीछे अपने सारे साज-सामान और लूटी गयी संपदा छोड गये, यहाँ तक कि वे 16 पोत भी छोड गये जिन पर तेल लदा था और जो छूटने के

लिए तैयार थे।

हमारी सेना का हमला करने का जोश हर रोज़ बढ़ता जा रहा था। लड़ाई मे प्राप्त अनुभव के साथ उत्साह दुर्निवार प्रतीत हुआ। परतु इसका यह तात्पय नही था कि आगे बढना आसान था, यह बात कतई नहीं थी। हमे क्रुद्ध, मजबूत और हथियारबंद हिटलरी सेना के विरुद्ध लड़ना था। समय का लाभ उठाकर उन लोगों ने बडी मेहनत से क्रीमिया की सीमा के पास अपनी अंतिम पंक्ति की किलेबंदी की और सर्वनाश का रोप मन मे भरकर वे हर वस्ती और हर पहाडी पर जम गये। केवल 9 अक्तूवर, 1943 को उत्तर काकेशियाई मोर्चे की सेनाओं और कृष्ण सागर के जल-वेडों के पोतों, तोपों और विमानों तथा अजोव के विध्वंसक वेडों के लगातार दवाव के वाद अंततः हम तामान प्रायद्वीप को पूरी तरह मुक्त कर सके।

केर्च मुहाने के तट से हम लोग हिटलरी दरिंदों की दारुण निर्ममता की तसवीर देख सकते थे। मैं कमांडरों के एक दल के साथ शत्रु के परिवहन पोतो को देख रहा था, जिसे हम लोग मुश्किल से अपनी दूरबीन से उस समय पहचान पाये जव वे रवाना हुए। हमने साफ-साफ देखा कि किस प्रकार हमारे बमवर्षक विमानो और युद्ध के विमानों ने उन्हे रोकने के लिए उनके मार्ग को काट दिया है। पर ज्यों ही वे अपने लक्ष्य पर पहुँचे कि विमान घूमकर हट गये। हम लोग पूरी तरह उलझन मे पड़ गये कि इन लोगो ने हमला क्यों नही किया। वाद में विमान-चालकों ने हमे वताया कि पोतों की डेक पर महिलाएँ और वच्चे थे। विमान-चालक उन पर बम नहीं गिरा सके। इन महिलाओं और बच्चों को गिरफ़्तार कर ज़बर्दस्ती डेक पर पहुँचा दिया गया था, ताकि उसके अंदर जो फासिस्ट थे उनके लिए वे बचाव बन सकें।

हम लोगों के आगे क्रीमिया था। उत्तर काकेशियाई मोर्चे के कमांडर ने 9 अक्तूवर, 1943 को जो आदेश संख्या 51 दिया था, वह सेना को सुनाया गया।

आदेश में यह कहा गया था: "18वी सेना शानदार और प्रसिद्ध मार्ग तय कर चुकी है। मालाया जेम्लिया और मिश्खाको, नोवोरोसिस्क के निकट पर्वतमाला पर जो वीरतापूर्ण और साहसपूर्ण युद्ध हुए और नोवोरोसिस्क नगर एवं बंदरगाह पर जो वीरतापूर्ण धावा किया गया वह 18वी सेना के यशस्वी मार्ग को इंगित करता है। अनापा और तमाम नगरों पर अधिकार जमाकर 18वी सेना के सैनिक सबसे पहले लोग थे जिन्होंने अपना युद्ध संबंधी कार्य-भार पूरा किया और इस प्रकार तामान प्रायद्वीप पर शत्रु की पराजय का रास्ता साफ किया।"

1 नवंबर, 1943 की सुवह 318वी सेना के सैनिकों के साथ, जो अब नोवोरोसिस्क पैदल डिवीज़न कहलाती थी, अवतरण पोत केर्च के मुहाने के जल को चीर कर बढने लगे। भारी तूफान और शत्रु की तोपों की लगातार गोलावारी और समुद्र में 30 किलोमीटर तक बिछी हुई सुरंगों के बीच से रास्ता बनाते हुए वे क्रीमिया के

तट पर मछुआरों के एल्तिजेन गाँव के निकट उतरे जो केर्च से ज्यादा दूर नहीं था।

उतरने के पहले आला सदर-मुकाम के मार्शल एस०के० तिमोशेन्को ने कहा कि 318वीं डिवीजन सेना के सफल अवतरण ने क्रीमिया की मुक्ति सुनिश्चित कर दी। वह पूरी तरह सही थे।

वास्तव मे देखा जाये तो मैंने जिसे मालाया जेम्लिया की वीरतापूर्ण गाथा कहा है, वह यहाँ समाप्त हो जाती है। यह महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध का एक पृष्ठ है। केवल एक पृष्ठ, पर अविस्मरणीय पृष्ठ।

सर्वोच्च सेनापति के आदेश पर हम लोग तीसरे उक्रइनी मोर्चे के अधीन काम के लिए भेजे जाने की तैयारी कर रहे थे। मालाया जेम्लिया पर लड़ाई और नोवोरोसिस्क पर धावे के बाद हमने महसूस किया कि इसके बाद शायद हमें दम लेने का मौका मिलेगा। परंतु युद्ध-काल में जीवन उलट-पलट हो जाता है : भाग्य ने हमारे लिए कुछ और ही तैयार कर रखा था।

6 नवंबर 1943 को कियेव की मुक्ति के बाद हमारी सेना केवल 10 दिनों मे 150 किलोमीटर पश्चिम मे बढ गयी तथा शत्रु को झितोमिर और फास्तोव सहित कई आबाद इलाकों से खदेड दिया। "केंद्र" और "सूद" सैन्य दलों को संबद्ध करने वाली महत्वपूर्ण संचार-लाइनें काट दी गयी। हिटलरी सेना के समक्ष ख़तरनाक परिस्थिति थी, यह बिलकुल स्पष्ट था। फ्रांस से जल्दी से कुमुक भेजते हुए नाज़ी कमान ने 15 डिवीजन बख्तरबद, मोटर वाली और पैदल सेनाएँ झितोमिर और फ़ास्तोव के दक्षिण मे भेज दी। हिटलरी सेना की योजना भी स्पष्ट थी। वे दक्षिण-पश्चिम से हमला करके द्नीपर के दाहिने तट पर हमारी मोर्चाबंदी को खत्म कर कियेव को फिर से अधिकार मे लेना चाहते थे। फासिस्ट सेना ने किसी प्रकार हमारी मोर्चेबंदी तोड़कर दुबारा झितोमिर पर कब्जा कर लिया।

हमारी 18वीं सेना, कातुकोव की टैंक सेना और कई अन्य बडे दस्तो को आदेश दिया गया कि दरार को बंद करें और शत्रु के आगे के बढाव को रोक दें। इसलिए हम लोग पश्चिम की ओर बढते हुए प्रथम उक्रइनी मोर्चे की ओर मुड गये जिसका सेनापतित्व जनरल एम० एफ० वातुतिन कर रहे थे। उस समय तक शत्रु झितोमिर सडक पर 74वें किलोमीटर पर पहुँच चुका था और उक्रइनी राजधानी की ओर बढ रहा था।

जिस रेलगाड़ी को सैनिक परिषद, सेना के मुख्यालय और राजनीतिक विभाग के लोगों को पहुँचाना था, वह सबसे पहले रवाना हुई। उसके बाद वे गाड़ियाँ रवाना हुईं जिन पर सैन्य-दल और दस्ते थे। हम तेज़ी से बढे, केवल इंजन बदलने के लिए रुकते। रात के समय हम लोग बागलेई रेलवे स्टेशन से होकर गुजरे—यह द्नेप्रोद्जेर्झिन्स्क से केवल छह किलोमीटर की दूरी पर था। हम लोग एक और

स्टेशन पर रुके, वह भी बहुत निकट था। मैं इसी प्रकार अकस्मात उस क्षेत्र में पहुँच गया जहाँ मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ था।

मैं गाड़ी से बाहर निकला। रात ठंडी थी, तेज हवा बह रही थी और घनघोर अंधेरा था। मैंने रात में घूरकर देखा और अकस्मात मैंने महसूस किया कि मुझे अपने "द्र्जेभिन्का"—उस फैक्टरी के धुएँ की महक मिली जहाँ मेरे पिता ने काम किया था और जहाँ मैंने भी अपना कार्यकारी जीवन शुरू किया था। मैंने वहाँ भट्ठी में कोयला झोंकने वाले के रूप में और बाद में बिजली खाते में इंजीनियर के रूप में काम किया था। मेरे दिल में घर जाने और वहाँ कम-से-कम एक दिन, एक घंटा या कुछ मिनट तक ठहरने की इतनी बलवती लालसा उठी कि मैं अभिभूत हो उठा। कुछ ही दिन पहले मुझे मेरी माँ का पत्र मिला था। वह उस जगह से लौट चुकी थीं जहाँ उन्हें हटाकर रखा गया था। और मैंने जो पढ़ा था उससे मुझे यही लगा कि उनका समय अच्छी तरह नहीं बीत रहा था।

परंतु इंजन ने हलकी सीटी दी और मुझे अपने डिब्बे में वापस चढ़ना पड़ा। युद्ध के बाद, बहुत दिन बाद मैं अंततः अपने घर लौट सका और अपने सगे-संबंधियों से मिल सका...।

□ □

गोस्तोमेल स्टेशन पर हम लोगों की गाड़ी का सफर खत्म हुआ। कोलोन्श्चिना गाँव में मुख्यालय स्थापित किया गया।

मैं वहाँ शायद ही रहा, क्योंकि मुझे हमेशा निकटवर्ती स्टेशनों पर जाकर फ़ौजी गाड़ी को यथाशीघ्र खाली कराना पड़ता था, विशेष रूप से तोपखाने को, ताकि हम लोग उसे भिलोमिर-कियेव सड़क पर जंगल की पट्टी में विभिन्न स्थानों में बिठा सकें।

12 दिसबंर को 1 बजे रात मुझे सैन्य मुख्यालय के कार्रवाई विभाग के उपप्रधान लेफ़्टि-कर्नल एन० ए० सोलोवेइकिन का टेलीफोन मिला: शत्रु ने स्ताविश्चे गाँव के निकट हमारी पंक्ति में दरार कर दी थी, जो हम लोगों से कुछ ही किलोमीटर दूर था।

मैंने लेसेलिद्ज़े और कोलोनिन से संपर्क किया। सेना के कमांडर उस इलाके के राइफल रेजिमेंट को आदेश दे चुके थे, और टैंक उस दिशा में बढ़ रहे थे, परंतु जहाँ शत्रु ने दरार डाली थी वहाँ तक पहुँचने में एक घंटा लगता। वे जब रास्ते में

ही थे कि हम लोगों ने तय किया कि मुख्यालय के सभी सैनिकों को खतरे के स्थान में भेज दिया जायें। यह चरम उपाय था, पर यह फैसला करना पड़ा क्योंकि हम लोग किसी भी हालत मे यह नही चाहते थे कि शत्रु कियेव राजपथ को रोक दे और उसकी अगल-बगल से उस पर गोले बरसायें।

सोलोवेइकिन से टेलीफोन पर समाचार मिलने के बाद मैंने अपने सहायक अधिकारी को आदेश दिया कि वह राजनीतिक विभाग के सभी अफ़सरों को सावधान कर दें। मैं टेलीफ़ोन के ज़रिए कमांडर से लगभग तीन मिनट तक बातें करता रहा और जब मैंने रिसीवर रख दिया तो यह देखकर प्रसन्न हो गया कि वहाँ लगभग 30 व्यक्ति सब-मशीनगन और हथगोले लिये खड़े थे। हम लोगों ने उसी जगह, उसी क्षण निर्णय किया कि कौन जायेगा।

सहायक सेनाधिकारी आई० क्रावचुक तथा एक सब-मशीनगनधारी सैनिक मेरे साथ चलने वाले थे। हमारे बुद्धिमान ड्राइवर ने करीब तीन दर्जन हथगोले लाद लिये थे। हमने सारी सड़क पर देखा कि कारें रवाना हो रही थी। हम लोग निकटतम रेजिमेंटल कमान चौकी की ओर बढे। जब हम लोगों ने आवश्यक सूचना हासिल कर ली तो हम लोग आगे बढ़े, परंतु मोर्चे के करीब डेढ किलोमीटर दूर शत्रु की भीपण मोर्टार गोलाबारी के कारण हमे अपनी कार छोड देनी पडी। हम लोग गोलाबारी की दिशा में तेज़ी से चले और शीघ्र ही एक खाई के पास पहुँचे। हमें कुछ घायल लोगों की कराह सुनायी पड़ी और एक नौजवान लेफ्टिनेंट कुछ चीख़ रहा था। लगभग दो दर्जन मशीनगन चलाने वाले लोग छाती के बल होकर शत्रु पर गोलियाँ चला रहे थे और एक बिठायी हुई मशीनगन थोड़ी-थोडी देर पर गोलियाँ बरसा रही थी। अँधेरे मे एक डरी हुई आवाज़ सुनायी पड़ी, "हमे पीछे हटना होगा।" उस पर लेफ़्टिनेंट चीखा : "चुप रहो, कायर !"

उस समय तक मैं भी नही जानता था कि यहाँ की स्थिति कैसी है, खाइयों की यह दूसरी पंक्ति पहली बन चुकी थी। मैं नही जानता था कि शत्रु ने फैसला किया है कि वे हमे अपनी स्थिति दृढ करने नहीं देंगे और वे पुनः हमला कर रहे थे। परंतु मैंने ज्यों ही देखा कि फासिस्ट लोग पैदल सेना की छुटपुट गोलाबारी के बीच थोड़ा तेजी से दौड़ कर आगे बढ रहे है और अपनी मशीनगन से गोलियाँ बरसा रहे है, तथा हमारी मशीनगनें चलती है तो वे अपनी मशीनगन चलाना बंद कर देते हैं, तो मेरे सामने सब स्पष्ट हो गया।

मैंने लेफ्टिनेंट को शांत किया और पंक्ति मे समाचार प्रसारित कर देने के लिए कहा कि वे चन्द मिनट डटे रहे, क्योंकि ट्रकों और टैंकों पर पैदल सेना की रेजिमेंट चल पडी है और उनकी सहायता के लिए यथासंभव शीघ्र पहुँच रही है। उसका चेहरा चमक उठा और लेफ़्टिनेंट अपने आदमियों के पास दौड पडा और क्रावचुक उसी समाचार के साथ दूसरी ओर झपटा। मैंने उसे बार-बार

कहते सुना : "वह है कमिसार, राजनीतिक-विभाग का प्रधान।"

हमारी सशस्त्र सेनाओं मे बहुत अर्सा पहले कमिसार हुआ करते थे, सेना में "कमिसार" शब्द को सुने भी लबा अर्सा हो गया था, परंतु उस क्षण क्रावचुक को यह सबसे उपयुक्त शब्द प्रतीत हुआ।

शत्रु को इतने नजदीक से देखने का मेरे लिए न यह पहला मौका था और न अंतिम, परतु उस रात की लडाई ने मेरी स्मृति पर अमिट छाप छोड़ी। उस भू-भाग के खड्डों में अपने को छिपाते हुए, हिटलरी सेनाएँ लपटों की रोशनी में एक पहाड़ी से दूसरी पर जाते देखी जा सकती थी। वे ज्यादा-से-ज्यादा नजदीक आते जा रहे थे, और मशीनगन ही उन्हे रोक रखने वाला मुख्य हथियार थी। ज्यो ही जर्मन एक बार फिर तेजी से बढ़े मशीनगन ने पुन. गोलियाँ बरसायी और इसके बाद शांति छा गयी। अब केवल थोड़े-से लोग गोलियाँ बरसा रहे थे। अब जर्मन ज़मीन पर लेटे नही रहे थे—वे होहल्ला मचाकर तथा लगातार गोलियाँ बरसाकर अपने को उत्साहित कर रहे थे, और झुक कर जमीन के करीब होकर चलने की चिंता किये बिना हमारी खाइयो की ओर दौड़े जा रहे थे। परंतु हमारी मशीनगन से कोई आवाज़ नही आ रही थी। मैंने देखा कि एक सैनिक उस व्यक्ति को खींच कर एक ओर हटा रहा है जो मशीनगन चला रहा था, क्योंकि उसकी मृत्यु हो चुकी थी। एक कीमती क्षण खोये बिना मैं मशीनगन की ओर दौड़ा।

मेरे लिए सारी दुनिया जमीन की उस तंग पट्टी पर सिमट गयी थी जिस पर फ़ासिस्ट दौड़े आ रहे थे। मैं नही जानता कि ऐसी स्थिति कितनी देर तक रही। मेरे समस्त अस्तित्व पर एक ही बात छा गयी थी—उन्हें अवश्य रोकना है। मैं समझता हूँ कि न तो लडाई का शोरगुल और न ही मेरे चारो ओर चीख़कर दिये जा रहे आदेश मुझे सुनायी पड़े। लेकिन एक बार मैंने देखा कि शत्रु के सैनिक वहाँ भी गिर रहे हैं, जहाँ मैंने निशाना नही लिया था। उन्हे दूसरे जवान भून रहे थे जो हमारी सहायता के लिए आ चुके थे। उनमे एक ने मेरे बाजू को छुआ और बोला : "कामरेट कर्नल, समय आ गया है कि कोई मशीनगन चलाने वाला व्यक्ति स्थान पर बैठे।"

जब मैं मुड़ा तो मैंने देखा कि खाई सैनिकों से भर गयी थी जो स्थान ले रहे थे और वस्तुत: कार्यकुशल और व्यावहारिक ढग से काम कर रहे थे। हालांकि यह पहला मौका था कि मैंने उन्हे देखा था, पर मैंने महसूस किया कि वे मेरे बन्धु-बाधव और प्रियजन हैं। निस्संदेह हम लोगो ने हिटलरी सैनिकों को रोक दिया और थोड़े समय बाद पूरी ताक़त से उन पर हमला कर सोवियत सेना ने झितोमिर को मुक्त कर लिया और आगे बढना जारी रखा।

मैं चंद शब्द उस भाईचारे और मैत्री के बारे में जिसका हमारी सेना में बोलबाला था, और अपने दस्तों के प्रति सैनिकों में जो गहरा लगाव होता है, उस

के बारे में कहना चाहूँगा।

इस पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है कि कहाँ लड़ाई हुई या मुठभेड़ कहाँ होती है, उस सबका अर्थ गोलीबारी, खून और मृत्यु होता है। फिर भी जब कोई विभिन्न क्षेत्रों मे, द्नीप्रोपेत्रोव्स्क से प्राग तक लड़ाई होते देखता है तो मस्तिष्क मे बिलकुल अपने आप एक भिन्न तसवीर उभरती है। बारवेन्कोवो-लोजोवाया लड़ाई—और मेरी आँखों के सामने कमर तक हिम में धँसे सैनिक जिन्हे बर्फीली हवा झकझोर रही थी, मानो आ खड़े होते है; मालाया जेम्लिया की लड़ाई—सैनिकों से लदी छोटी नावें गोलों से कंपित त्सेमेस्काया खाडी के उबलते जल मे हिलोरे खाती आँखों के सामने आ जाती है; और अंत मे सुखुमी मार्ग-तट तक पूरे मार्ग मे धूल की मोटी परत। यह हवा मे भारी वह रही थी, घरों, बन्दूकों और मशीनगनों को अपने मे समेटे जा रही थी, और पौधों पर पृथ्वी की ओर झुकी डालों पर घने रूप मे जमी हुई थी। यह जूतों के ऊपर से तलवे तक और कपड़ों से होकर त्वचा तक पहुँच रही थी। हम लोग उसे अपने पानी और भोजन के साथ शुद्ध रूप मे किसी प्रकार की मिलावट के बिना गुटक रहे थे।

मैं इसी धूल मे भरी और धूप की गर्मी से जलती सड़क पर एक डिवीज़न के साथ कार से जा रहा था जो लड़ाई मे जाने के लिए तैयार हो रही थी। हम लोग मानो कारों के सागर में फँस गये और मैं अपनी कार से यह देखने के लिए उतर गया कि हम लोग कही भटक तो नही गये है। इसके बाद ही मेरी भेंट एक सार्जेंट और एक सैनिक से हुई जो सड़क की बगल में गर्मागर्म बहस में जुटे हुए थे। मुझे जिस बात का पता चला वह यह थी।

जब सैनिक को अस्पताल से छुट्टी मिली तो उसे आरक्षित दस्ते में भेजा गया। उसने रास्ते मे (जानबूझ कर) दल के शेष लोगों से अलग होने का उपाय निकाला और इसके बाद रफूचक्कर हो गया। उस सार्जेंट को आदेश दिया गया कि उसे वापस लाये, और अंत मे उसने उस सैनिक को दूसरे दस्ते मे पकडा, और यह वही दस्ता था जिसमें वह घायल होने के समय मे था। जब कंपनी कमांडर को पता चला कि विवाद क्या था तो उसने अपने भूतपूर्व सैनिक से कहा कि अब कुछ नही किया जा सकता है और उसे सार्जेंट के साथ जाना होगा। परंतु रास्ते में उस सैनिक ने फिर विद्रोह किया और कहा कि वह एक ही जगह लौट सकता था और वह था उसका अपना दस्ता।

मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए सार्जेंट ने कहा, "उसे हमारी रेजिमेंट मे भेजा गया है। वह उस आदेश का पालन नही कर सका और उसने निष्ठा की शपथ का उल्लंघन किया है। इसका कोर्टमार्शल किया जाना चाहिए, उसके बदले वह वावेला खड़ा कर रहा है।"

सैनिक ने अनुरोध के स्वर मे कहा, "कामरेड कमांडर, मैंने शपथ नहीं तोड़ी

घायल लोग दूसरे वार्ड मे थे। डाक्टर ने मुझे बताया कि दाहिनी ओर पहला व्यक्ति लेफ़्टिनेंट था, उसका अंत निकट था। वे गैस-गैंग्रीन को रोकने मे असमर्थ थे। मैं बिस्तर के पास गया। उसके काले सुन्दर घुंघराले बाल थे और काली भौहे थी। नीली आँखें ऐसे चेहरे से झांक रही थीं जो आसन्न मृत्यु से विदग्ध था। मैंने उससे पूछा कि क्या ऐसा कोई काम था जो मैं उसके लिए कर सकता था।

"हाँ कामरेड कर्नल, एक काम है। कृपया आप मेरी इतनी सिफारिश कर दे कि यदि मैं जीवित रहूँ तो मुझे फिर अपनी ही यूनिट मे भेजा जाये।"

शुरू में मेरी समझ मे नहीं आया कि मैं क्या करूँ। परंतु अपनी भावनाओं पर काबू पाते हुए मैंने वचन दिया कि उसे चिंता नही करनी चाहिए और मै उसके लिए इसकी सिफ़ारिश कर जाऊँगा। मैंने उससे पूछा कि वह किस दस्ते मे रहकर लड़ा था और किस प्रकार घायल हो गया था। मैंने उससे विदा ली और दरवाजे की ओर बढ रहा था तब मैंने उसे यह कहते सुना :

"इसका यह अर्थ हुआ कि आप कुछ भी नही करेंगे, कामरेड कर्नल ?"

"परंतु मैंने वचन दिया है कि मैं करूँगा...।"

"हाँ, पर आपने मेरा नाम तो नोट किया ही नही !"

मुझसे कुछ कहते नही बना। पर नर्स कृतज्ञता-स्वरूप मेरी रक्षा को आगे आ गयी।

उसने अपने पैड की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने सब कुछ नोट कर लिया है। आपका नाम, पद, आपके दस्ते का नम्बर। देखिये !"

मैंने कागज लेने के लिए हाथ बढाया, उस पर यह लिखा था : "यहाँ से जाने का वक़्त हो गया है।" उसे अपने नक्शे के केस में रखते हुए मैंने एक बार फिर लेफ़्टिनेंट की ओर देखा। वह मुस्करा रहा था। मेरे गले मे लगा कि कुछ अटक गया। मैंने ये शब्द, "मैं अपने दस्ते में लौट जाना चाहता हूँ" युद्ध के दौरान अनगिनत बार सुने। परंतु मैं उस लेफ़्टिनेट को नहीं भूल सकता जिसने नागरिकों जैसी बात कही थी, "सिफ़ारिश कर दे" और न उस हठी सैनिक को जो सुखुमी राजमार्ग पर मिला था।

कितना ज़बर्दस्त उत्साह ! अपने देश के लिए कितना आडम्बरहीन और अमिट प्रेम ! इसकी रक्षा करने की कितनी संकल्पशक्ति ! एक क्षण के लिए भी अपने जीवन के बारे मे न सोचना। जिस चीज़ ने मुझे द्रवीभूत किया वह सैनिक का अनुरोध नही था, परंतु जिस ढंग से उसने अपनी बात रखी थी उसने मुझे द्रवीभूत किया था। यहाँ वीरता का रंचमात्र भी प्रदर्शन नहीं था, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह विनम्रता के साथ एक अत्यधिक वैयक्तिक बात के लिए, कुछ ऐसी चीज़ के लिए जिसकी केवल जरूरत है, अनुरोध कर रहा था।

तब मैं उस सैनिक को क्या कहता जो वहाँ सड़क की बगल में खड़ा हुआ था ?

सैनिक अनुशासन के सभी कायदे-कानूनों के मुताबिक उसकी बात गलत थी। युद्ध-काल में किसी को इसकी इजाजत नही दी जा सकती कि वह स्वयं चुने कि उसे कहाँ रहना है। कोई भी व्यक्ति अपनी मर्जी से एक दस्ते को छोड़ नही सकता और न दूसरे मे अपना स्थानांतरण करवा सकता है। कायदे-क़ानूनो को देखते हुए यह मेरा कर्तव्य था कि मैं उसे आदेश दूं कि जिस दस्ते मे तुम्हे भेजा गया है, वहाँ रिपोर्ट करो। परतु मैं हिचकिचाया।

"तो मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ ?" मैंने सैनिक से पूछा और मेरी समझ मे नही आ रहा था कि मैं क्या करूँ ?

"कामरेड कमांडर, मुझे मेरे अपने दस्ते मे भेज दें, मैं पार्टी मे भर्ती होने जा रहा हूँ। मैं पहले ऐसा नहीं कर पाया और अस्पताल में पहुँच ही गया। इस बार मैंने प्रार्थना-पत्र दे भी दिया था, पर उन नीच फासिस्टो ने मुझे फिर धर लिया। और वहाँ," उसने उस दिशा मे सिर हिलाया जिस दिशा मे सार्जेंट खड़ा था, "मुझे कोई नही जानता।"

उन अतिम शब्दों ने जादू कर दिया। मैंने अपने सहायक सैन्याधिकारी को कहा कि वह सैनिक का नाम और दोनो सैनिक दस्तो के नम्बर ले ले। मैंने उससे वादा किया। उसे अपने दस्ते मे स्थानांतरित करने का आदेश दूसरे दिन के पहले नही मिल सकता है और अब बेहतर यही है कि वह सार्जंट के साथ जाये, क्योंकि किसी व्यक्ति को आदेश उल्लंघन करने की इजाजत नही दी जा सकती है। और उस आदेश के ज़रिये वह अपने आदमियों के बीच लौट जायेगा। वह सैनिक बहुत ही प्रसन्न हुआ, वह अपनी प्रसन्नता छिपा नही सका और न इसकी कोशिश ही की। उसने अपने कधे को सीधा किया, सावधान की मुद्रा मे तनकर खड़ा हुआ तथा चुस्ती के साथ अभिवादन करने के बाद बोला :

"यहाँ से चलने की अनुमति है ?"

अनुभव बार-बार यह बतलाता है कि लेनिन जब इस बात पर ज़ोर देते थे तो वह कितने सही थे कि हमेशा जनता के साथ रहने का, मजदूरों, किसानों और सैनिको के साथ बातचीत करते रहने का कितना असीम महत्व है! पड़ाव के दौरान सैनिकों से बातचीत, विश्राम के समय और लड़ाई की स्थितियों के दौरान फौजियों से बातचीत के फलस्वरूप कई मूल्यवान और महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले। मैं जो अस्पताल देखने गया था उससे तथा मुखुमी राजमार्ग पर सयोगवश उस सैनिक से जो भेंट हो गयी थी, उससे यह सच सिद्ध होता है। निस्सदेह मैंने अपना वचन निभाया। परंतु इससे भी बड़ी बात यह हुई कि एक सरकारी निर्णय किया गया कि जब कभी और जहाँ कही सभव हो सैनिको को अस्पताल से छुट्टी पाने के बाद उनके अपने ही दस्ते मे भेजा जाये।

11 फरवरी 1944 मेरे लिए दुखदायी दिन था। मैं अपने कमाडर को मास्को

विदा कर रहा था, जो बहुत बीमार थे। डाक्टरों ने उनके जीवन के लिए थोड़ा ही मौका दिया था। दस दिन बाद कोंसतांतिन निकोलयेविच लेसेलिद्‌जे दुनिया मे नहीं रहे।

मोर्चे पर आप लोगो को बहुत जल्द जान जाते है। वहाँ आप तत्काल देखते हैं कि लोग सचमुच किस,मिट्टी के बने हुए है। लेसेलिद्‌जे हमारे एक प्रभावशाली सैनिक नेता थे। उनमें हमारी सोवियत जनता की सर्वोत्तम विशेषताएँ मूर्त थीं। वह शत्रुओं के साथ सख्त और निर्मम थे, मित्रों के साथ दयालु और शांत। वह सम्मानपूर्ण व्यक्ति थे, वचन के पक्के थे, बुद्धिमान थे और ऐसे व्यक्ति थे जो जीवन को और उस आदमी को प्यार करते थे जो बहुत बहादुर होता था। मेरा मित्र और संघर्ष का साथी मेरी स्मृति मे सदा के लिए अंकित हो गया है।

आगे क्या हुआ —उसके बारे मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है, पूरी किताब लिखी जा सकती है क्योंकि अभी हजारों किलोमीटर लंबे रास्ते तय करने और युद्ध के लंबे महीने बिताने शेष थे। पर एक बात का उल्लेख मैं फिर से करना चाहूँगा : मालाया जेम्लिया की स्मृति, मालाया जेम्लिया में हम लोग जिस तरह तपे-मँजे और अनुभव हासिल किया, उससे मुझे और मेरे साथियों को भी युद्ध की अंतिम विजयी गोली दागने का अवसर पाने मे सहायता मिली। हमारे सैनिकों की देशभक्ति, उत्साह और अदम्य साहस, उनकी प्रत्युत्पन्न मति, परिपक्वता, सूझ-बूझ और योग्यता से और भी बढ गयी। इस सबसे अंतिम विजय मे मदद मिली।

हम लोग भीषण लड़ाई लडते हुए, शहरों और गाँवो को मुक्त करते हुए कियेव, विन्नित्सा, रूमेलनित्स्की, चेर्नोव्त्सी, ल्वोव और उक्रइन के अन्य क्षेत्रो को पार कर आगे बढे तथा कार्पेथियाई पर्वतमाला पहुँच गये। प्राकृतिक बाधाओं का लाभ उठाकर फासिस्टों ने यहाँ प्रतिरक्षा की सशक्त "आर्पाद" पंक्ति का निर्माण किया था। हमने काकेशस में जो सीखा था, उसे लागू करते हुए हम लोगों ने कार्पेथियाई पर्वतमाला के मार्गों पर कब्जा कर लिया और शत्रु की रक्षा-पंक्ति जो अभेद्य प्रतीत होती थी, उसे चूर-चूर कर दिया।

अब राजनीतिक कार्यकर्ताओ को सचमुच चौबीस घंटे अविराम गति से काम करना था। लडाई मे कभी ढील नही होती थी तथा सेना मे पार्टी और राजनीतिक कार्य एक क्षण के लिए भी कभी नहीं रुके। और जब हम लोग वैसा कर रहे थे तो हमें स्थानीय साथियों, कम्युनिस्टों को नये जीवन का खाका तैयार करने मे मदद करनी पडी जिन्होंने उस समय तक भूमिगत रहकर काम किया था। एक के बाद दूसरी महत्वपूर्ण राजनीतिक पेशकदमी की गयी : पार्टी-सम्मेलन, ट्रेड यूनियन काग्रेस, युवकों और महिलाओं के सम्मेलन। स्वतंत्रता के वातावरण से ट्रांस-कार्पेथियाई उक्रइन की संपूर्ण आबादी इन कार्यों के साथ राजनीतिक रूप से संबद्ध हुई। हम लोगों का भाइयो और मुक्तिदाताओं के रूप मे स्वागत किया गया। सारे

क्षेत्र में जनसमितियाँ गठित की जा रही थी और वे अपनी पहली कांग्रेस आयोजित करने की तैयारी कर रही थी। मैंने भी अंततः उस कांग्रेस में भाग लिया और वहाँ मैंने देखा कि कितने अधिक उत्साह के साथ प्रतिनिधियों ने उस ऐतिहासिक निर्णय को स्वीकार किया जिसने ट्रासकार्पेथिया को अपनी जनता के साथ फिरसे एकताबद्ध कर दिया।

हमारी सेना जब रूमानिया, हंगरी, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया पहुँची तो वहाँ के जनगण के उल्लास का क्या कहना था। उसे भूलना कठिन है। 18वी सेना उस सेना का हिस्सा थी जिसने उन देशों को मुक्त किया। इसी कारण उस समय राजनीतिक कार्य का वहुत निर्णायक महत्व था। दशकों तक साम्राज्यवादियों ने हमारी पार्टी को बदनाम किया था। दसियों वर्ष तक उन लोगों ने हमारे जीवन और हमारी जनता के बारे मे अपनी जनता के मस्तिष्क में जितना झूठ हो सकता था, सब ठूँस-ठूँसकर भरा था। अब सोवियत मानव यूरोप में मुक्तिदाता के रूप में प्रकट हुआ था और वह अत्यधिक महत्वपूर्ण था कि इस उदात्त मानवीय मिशन को सम्मान के साथ पूरा किया जाये। और हमारे लड़ने वाले जवानों ने इसका मुकाबला इस प्रकार किया कि शिकायत की कोई गुंजाइश नही थी। उन लोगों ने हर क्षण दिखलाया कि वे उदार, सम्मानपूर्ण, मानवीय, न्यायपूर्ण और युद्ध में इस्पात बने हुए लोग है।

1941 के भीषण कठिन वर्ष में भी हमे विश्वास था कि विजय अवश्यंभावी थी। अब हम जानते थे कि यह मिलने वाली है। जो कुछ हुआ था उसने हमें इसके लिए तैयार कर दिया था। और इसके बाद भी जब विजय अन्ततः आयी, हम प्रसन्नता से अभिभूत हो उठे। जहाँ तक मेरा संबंध है, कोई भी उस प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त नही कर सका है। और न मेरे ही पास शब्द है जिनसे मैं अपने भावावेगों को आप तक प्रेषित कर सकूँ जो 9 मई 1945 को हमारे हृदयो में फूट पड़े थे। मैं एक ही बात कह सकता हूँ कि वह मेरे जीवन का सबसे अधिक खुशी का दिन था।

परंतु हमारी 18वी सेना के लिए भी युद्ध का अंतिम दिन थोड़े समय बाद—12 मई को आया। नाज़ी जर्मनी के बिना शर्त आत्मसमर्पण की दस्तावेज पर हस्ताक्षर हो चुके थे, परंतु हम लोग अभी तक चेकोस्लोवाकिया मे प्रतिरोध करने वाले दुश्मनो के शेष बचे भागो को समेट रहे थे।

और न मैं विजय के उस महान समारोह—लाल चौक मे विजय परेड—को कभी भूलूंगा। जब मैंने यह आदेश पढा कि चतुर्थ उक्रइनी मोर्चे के राजनीतिक विभाग के प्रधान जनरल ब्रेझनेव परेड के लिए मोर्चे की मिलीजुली रेजिमेंट के कमिसार नियुक्त किये गये हैं, तो मैं प्रसन्न हो उठा और गर्व से मेरा सिर ऊँचा हो गया। मैं आज तक उस तलवार को संजोये हुए हूँ जिसे लेकर मैं अपनी मिली-

जुली रेजिमेंट के आगे कमांडरों के साथ परेड में मार्च करते हुए चला था।

विजय देखने का मेरा सपना इसी प्रकार पूरा हुआ। यह लाखों सोवियत सैनिकों का सपना था। और साथ-ही-साथ युद्ध के अंत तक अपने देश की हिफाजत करते हुए उन लोगों ने विजय के परचम को युद्ध के तमाम संकटों के दौरान बर्लिन में राइखस्टाग पर फहराने के लिए ऊँचा उठाये रखा।

हमारी विजय मानवजाति के इतिहास में एक आगे बढा कदम है। इसने हमारे समाजवादी देश की महानता उजागर कर दी, इसने दिखला दिया कि हमारे कम्युनिज्म के विचार अजेय है, और इसने निस्स्वार्थपरता और वीरता के भव्य उदाहरण प्रस्तुत किये। हाँ, यह सब सच है परंतु मेरी कामना है कि शांति बनी रहे, क्योंकि शांति ऐसी चीज है जिसकी सोवियत जनता और सारी दुनिया के ईमानदार लोगों को बहुत अधिक जरूरत है।

हम अपने निष्ठावान साथियों को युद्ध के अंतिम दिन तक दफनाते रहे। हम लोगों ने उस युद्ध के संपूर्ण मार्ग पर फासिस्टों के जुल्म के निशान देखे, हम रोती हुई माताओं से मिले, ऐसी विधवाओं से मिले जिन्हें सांत्वना नही दी जा सकती थी और भूखे अनाथ बच्चों से मिले। और यदि कोई मुझसे आज पूछे कि मैंने युद्ध से सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष क्या निकाला, जिसमे मैं शुरू से आखिर तक रहा, तो मैं कहूँगा : एक और युद्ध कभी नही होना चाहिए। एक और युद्ध फिर कभी नही होना चाहिए।

जो राजनीतिज्ञ या राजनेता सर्वदा वह बात कह सकते है जिसे वह सचमुच सोचते है, जिसे वह हृदय से समझते हैं कि किया जाना चाहिए, उसे कर सकते हैं और सचमुच यह विश्वास करते है कि उसे कर सकते है तो उसे प्रसन्न रहने का पूरा अधिकार है। जब हम लोगो ने शांति कार्यक्रम निर्धारित किया, जब हम लोगों ने कई अंतर्राष्ट्रीय सभाओं में अपनी ऐसी पेशकदमी दिखलायी जिससे युद्ध के खतरे को मिटाने मे मदद मिले तो मैं कम्युनिस्ट के रूप मे उसी काम को कर रहा था, उस बात की तैयारी कर रहा था और कह रहा था जिसमें मुझे अंतस्तल से विश्वास था।

मेरी समझ से यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है जिसे मैंने युद्ध के अनुभव से निकाला है।

पुनर्जन्म

पुनर्जन्म

टेढे-मेढे गर्डरों और मलबे के बीच घास की पत्तियां सिर उठाने लगी थी। दूर से आवारा कुत्तो की गुर्राहट सुनायी दे रही थी। चारों तरफ महानाश फैला हुआ था और जीवन का कही चिह्न था तो कौवों के काले घोंसलो में, जो युद्ध से जले हुए पेड़ों की बची-खुची शाखाओं से लटके हुए थे। मैंने कुछ ऐसी ही हालत गृहयुद्ध की समाप्ति के बाद भी देखी थी, मगर तब सुन्न पड़ी फैक्टरियो की श्मशानी शान्ति से हताशा पैदा होती थी; अब हर चीज मलबा बन गयी थी।

जब 1946 की उमस-भरी गरमी मे पार्टी ने मुझे ज़ापोरोझ्ये शहर मे काम करने भेजा, तब मुझे हिदायत दी गयी थी कि मैं स्थिति का यथास्थल निरीक्षण करूँ, विशेषकर ऐसी हर चीज देखूं जिसका निर्माण-कार्य और कृषि पर प्रभाव पड़ता हो। केन्द्रीय समिति ने मुझे उचित अधिकारों से लस कर दिया था और कोई समय खोये बिना मैं ज़ापोरोझ्ये के लिए रवाना हो गया।

मैं फौजी वर्दी में पहुँचा, क्योंकि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बाद मुझे सेवा-मुक्त नही किया गया था। मैं अलस्सुबह अपनी निरीक्षण-यात्रा पर निकल पडा, मगर कोक और रसायन कारखाने तक या उस विराट इमारत का जो कुछ बच रहा था, उस तक ही पहुँच सका। सड़क यहीं समाप्त होती थी, इसलिए आगे मुझे पैदल ही जाना पडा। मैं अँधेरा घिरने तक कारखाने के चारो ओर घूमा; सभी तरफ मुझे चकनाचूर कन्क्रीट, टूटी-फूटी ईंटे, मलबे के ढेर और टेढे-मेढ़े गर्डर ही दिखायी दिये। बड़ा दिल तोड़नेवाला दृश्य था।

इकाइयो मे काम करते हुए हजारों निर्माण-मज़दूर, लगभग एक साथ ही, पूरे ज़ोर-शोर से सफाई के काम में जुटे हुए थे। ऐसा लगता था कि काम कभी ख़त्म नही होगा, क्योंकि बडी थोड़ी मशीनें थी और लगभग सारा काम हाथों से किया जा रहा था। रास्ते में उनमें से अनेक से मेरा परिचय कराया गया, जिन्हे

आगे चलकर मैंने जाना-समझा और याद रखा; किन्तु इस क्षण मैं सिर्फ उनकी सफ़ाई सुनता रहा और मुख्य रूप से मैंने दृश्य आंका, क्योंकि हर बात शब्दों के बिना भी स्पष्ट थी। लौह-इस्पात और बिजली मज़दूरों के इस सुन्दर नगर का कोई अस्तित्व नहीं रह गया था: हर चीज़ धमाके से ध्वस्त हो चुकी थी, जल चुकी थी और युद्ध से ढह गयी थी।

मुझे युद्ध से पहले के ज़ापोरोझये की भली-भाँति जानकारी थी क्योंकि वह द्नीपरोपेत्रोवोस्क से, जहाँ मैं उस समय काम कर रहा था, 90 मिनट की कार-यात्रा की दूरी पर ही था। मुझे जापोरोझये जाने का कई बार अवसर मिला था, क्योंकि हमारा शहर इस नगर के साथ मित्रतापूर्ण होड मे लगा हुआ था। मुझे वे छाँवदार पार्क, फव्वारों से सजे आकर्षक चौक, सुन्दर मकान जिन पर नागरिक बड़ा गर्व किया करते थे, खोर्तित्सा द्वीप के मनोरंजन केन्द्र और पेड़ों की पाँत से सजा लेनिन एवेन्यू, जो सारा शहर पार करता नीपर तक पहुँचता था—सभी कुछ भली भाँति याद था। जब मैं शाम को घर वापस लौटता तब लौह-इस्पात कारखाने की धमन भट्टियों की नारंगी-लाल दमक को आकाश प्रतिबिम्बित करता दिखायी देता, जब कि आगे पानी में प्रतिबिम्बित सैंकड़ों रोशनियाँ दिखायी देतीं जो बाँध के सुप्रसिद्ध विद्युत केन्द्र की अर्धगोलाकार प्रतिच्छवि थीं।

नीपर जल-विद्युत केन्द्र सोवियत शासन के वर्षों मे बनाये गये सैंकड़ों केन्द्रों मे से मात्र एक नही है: आज नीपर केन्द्र से भी अधिक शक्तिशाली और आधुनिक केन्द्र हैं। किन्तु हमारे लिए नीपर केन्द्र ही सोवियतों की भूमि की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक बन गया था। इस बाँध के विशेष सौन्दर्य से अधिकाश लोग अखबारो मे छपी तसवीरो और फिल्मो के जरिए परिचित है। मुझे बताया गया है कि हाल मे अपनी यात्रा के दौरान एक छात्रा ने सम्मति-पुस्तिका में यह दर्ज किया: "हमारी भूमि पर नीपर विद्युत केन्द्र साहित्य मे पुश्किन या संगीत मे चैकोवस्की की तरह है। वोल्गा, अंगारा और येनीसी पर कितने ही विराट केन्द्र क्यो न उठ खड़े हों, उनसे सोवियत विद्युत उद्योग के पितामह के गौरव मे ग्रहण नही लग सकता।" कितने बढ़िया ढग से बात कही गयी है!

इस अनन्य इमारत को जो क्षति पहुँची, उसको देखकर युद्धोतर काल मे हमारा हृदय भारी और कटु भावनाओं से भर जाता था। हिटलरी दरिन्दों ने बाँध के ढाँचे मे आधे टन भारी सौ बम गिराये थे और अगर वह पूरी तरह नष्ट होने से बच गया तो उसका श्रेय हमारी सेना के सैपरों और स्काउटो को था। जब सोवियत फौजों द्वारा नीपर छीन लिया गया तो बाँध की नीव में रखे विस्फोटक पदार्थों तक जाता हुआ एक तार वहाँ कटा हुआ पाया गया और पास मे एक सिपाही की लाश पडी थी। उसकी पहचान कभी नही की जा सकी, मगर तभी से बाँध के पास अज्ञात वीर का स्मारक खड़ा हुआ है।

हालाँकि फासिस्ट अपनी पूरी योजना पर अमल नहीं कर पाये थे, फिर भी वे सारी टर्बाइनों, जनरेटरों और क्रेनों को नष्ट करने में सफल हुए थे; 47 स्पिलवे में से केवल 14 सही-सलामत रही। नीपर जलाशय का कोई अस्तित्व नहीं रह गया था; प्राचीन चट्टानें, जो पहले डूबी हुई रहती थीं, अब जल-स्तर से ऊपर खड़ी थीं। जिस नदी को हम शान्त बहते देखने के आदी थे, वह अतीत की तरह, फिर धाराओं में बँटी तूफानी गति उफना रही थी। इसके निर्माताओं में से किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गयी निम्नलिखित पंक्तियाँ उन दिनों बड़ी लोकप्रिय थीं

ग्रेनाइट की चट्टानों से टकराती-लहराती,
नीपर की लहरें जल-कण के जलद बनाती,
उनकी गाथा यहाँ रहेगी सदा सुरक्षित,
जिनके कौशल ने उनको कर दिया अमर
गौरव से मण्डित !

उक्रइनी भाषा में एक बड़ा ही अभिव्यजनापूर्ण और सटीक शब्द है पेरेमोगा, जिसका अर्थ है 'विजय' और शब्दश. 'पार पाना'। वास्तव में सोवियत जनता ने समस्त कठिनाइयाँ पार कीं, सारी मुसीबतें सहन कीं और अत्यन्त विध्वंसात्मक युद्ध लड़ा और जीता। अब उनको सामना करना पड़ रहा था विनाश से "पार पाने" और शान्तिपूर्ण श्रम में विजय प्राप्त करने का कर्तव्य।

"पहले किस काम को उठाया जाये ?"—यही वह विचार था जो उस अनन्त, उमस-भरे और दुखदायी दिन, जैसे-जैसे मैं स्थिति के विषय में अपनी धारणाएँ बनाता चल रहा था, मेरे दिमाग में बार-बार उठता रहा। मैं बता दूँ कि कुल मिलाकर मेरी धारणा काफ़ी निराशापूर्ण थी। फासिस्टों ने शहर की सारी 70 फ़ैक्टरियों को विस्फोटों से उड़ा दिया था। जब लौह-इस्पात कारख़ाने की चद्दर-मिल फिर स्थापित हो गयी तब हमें बीच के सभी खम्भों पर "फ" का अक्षर (जर्मन शब्द "फियर" या आग का पहला अक्षर) लिखा मिला, जिसको लाल रंग में लाल तीरों के साथ अंकित किया गया था जिससे यह पता चले कि विस्फोटक सामग्री कहाँ रखी जानी है।

सारा शहर भी खंडहर पड़ा था। राजकीय आयोग ने निम्नलिखित आँकड़े जमा किये थे : 24 अस्पताल, 74 स्कूल, दो संस्थान, पाँच सिनेमाघर और 293 दूकानों समेत एक हजार से अधिक बड़ी इमारतें ढह गयी थीं। न पानी था, न बिजली और न गर्म रखने की सेवाएँ। नगर के गिर्द कृषि को भी भारी क्षति पहुँची थी।

मुझे पार्टी की केन्द्रीय समिति ने जापोरोझ्ये-क्षेत्र में काम करने के लिए अत्यन्त

कठिन समय में भेजा था। मेरे वहाँ पहुँचने से लगभग एक महीने पहले 27 जुलाई 1946 के प्रावदा ने "ज़ापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने के पुनरुद्धार का काम क्यों नहीं हो पा रहा है ?" शीर्षक के लेख में उठाये गये प्रश्नों का निम्नलिखित उत्तर दिया था : "मुख्य कारण है संगठन की कमी। काम के संगठन और यंत्रीकरण के लिए कोई योजना तैयार नहीं की गयी है। काम की कोई वास्तविक समय-तालिका नही है। काम की पूर्ति को परिमाणात्मक रूप मे नहीं, रूबलों में व्यक्त किया जा रहा है। ऐसी हालत में ऊलजलूल बातें पनपती हैं...।" फिर प्रावदा मे एक और लेख छपा, "एक निर्माण-स्थल और तीन पार्टी समितियां," जिसमे पार्टी की ज़िला, नगर और क्षेत्रीय समितियों की आलोचना की गयी थी कि वे निर्माणकर्ताओं के काम मे बराबर हस्तक्षेप तो करती है, मगर उनको नाकाफी और कभी-कभी अयोग्यतापूर्ण सहायता देती है। अन्ततः सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति का एक फैसला जारी किया गया जिसके बाद उक्रइनी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति का सम्बन्धित फैसला भी जारी हुआ जिसका शीर्षक था, "उक्रइनी पार्टी संगठन में पार्टी के और सरकार के प्रमुख कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, चयन और वितरण के विषय मे।"

यही वह व्यवस्था थी जिस पर निर्माण-स्थलों की मेरी प्रारम्भिक छानबीन के बाद ज़ापोरोझये कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की क्षेत्रीय समिति के 11वें पूर्ण अधिवेशन मे विचार हुआ जिसमे मैंने भाग लिया। क्षेत्रीय बैठक के पहले पार्टी की केन्द्रीय समिति की ओर से ज़ापोरोझये में फोन पर मुझे यह सूचना दी गयी

"प्रस्ताव पास किया गया है कि आपको क्षेत्रीय समिति का प्रथम सचिव बनाये जाने की सिफारिश की जाये। पूर्णाधिवेशन का संचालन आप करेंगे।"

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति के विभिन्न विभागो में से एक के प्रधान ज़ापोरोझये आये। विषय-सूची पर दूसरा विषय था संगठन का : पार्टी की केन्द्रीय समिति की सिफारिश पर मुझे क्षेत्रीय समिति का प्रथम सचिव चुना गया। यह हुआ 30 अगस्त 1946 को।

एक पूरे क्षेत्र मे पार्टी और जनता के काम-काज के मामले मे इतनी गहरी और सर्वांग उत्तरदायित्व की भावना मैंने इससे पहले कभी महसूस नही की थी। मुझसे जो कुछ आशा की जा रही थी, वह सिर्फ इतना ही नही था कि मैं अपनी सर्वोत्तम क्षमता के साथ काम करूँ, बल्कि यह भी कि मैं काम मे उल्लेखनीय मोड़ और तीव्र परिवर्तन उपलब्ध करूँ। आशा की जा रही थी सम्पूर्ण क्षेत्रीय पार्टी संगठन के काम मे एक नयी शैली की, और अनेक औद्योगिक संस्थानों के, प्रथमतः और सर्वोपरि ज़ापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने के, निर्माण-कार्य की रफ़्तार मे

तेजी से वृद्धि की। मैं पूरी तरह जानता था कि यह काम राज्य के लिए, न केवल आर्थिक रूप में, वल्कि राजनीतिक रूप में भी, महत्वपूर्ण था।

सारे मामले में केन्द्रीय बात यह थी : चौथी पंचवर्षीय योजना (1946-1950) सम्बन्धी कानून मे, जिसे मार्च 1946 में पास किया गया था, जापोरोझये लोह-इस्पात कारखाने के पुनर्जन्म की व्यवस्था की गयी थी : "देश के दक्षिणी भाग में पतले कोल्ड-रोल्ड (चद्दर) धातु के उत्पादन को पुन चालू करना है...।" जो लोग इस एक पंक्ति का अर्थ समझते थे, उनके लिए वह बड़ी महत्वपूर्ण बात थी। किन्तु अपनी जटिलता के कारण इस काम को विशेष सर्वोच्च प्राथमिकता नही मिल सकी। वताया जाता था कि उसका मलवा हटाने मात्र के लिए वर्षो लग जायेंगे। यह भी राय प्रकट की गयी थी कि किसी नये स्थान पर उत्पादन का नये सिरे से निर्माण करना अधिक आसान होगा। उदाहरण के लिए, फासिस्ट आक्रमण से पीड़ित देशों को सहायता देने के लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय सगठन, सयुक्त राष्ट्र पुनर्वास-पुनर्निर्माण संगठन स्थापित किया गया था, उसके विशेषज्ञों की यही राय थी। जापोरोझये को देखने के वाद उन्होने लिखा था कि इस कारखाने को फिर चालू करना सामान्यत: व्यावहारिक नही होगा; नया कारखाना स्थापित करना इससे सस्ता पडेगा।

मैं किसी आधार पर यह नही कह सकता कि इन विशेषज्ञो में योग्यता या ईमानदारी की कमी थी। उन्होंने अत्यन्त वारीकी से हर चीज़ का निरीक्षण किया, निर्धारण किया और मापा : विनाश का परिमाण, टेक्नोलोजी का स्तर, उस समय पर हमारी ऊर्जा के साधन, हमारी चीजें उठाने की क्षमता, श्रमशक्ति, आदि। "एकमात्र" चीज जिसका वे हिसाब-किताव लगाने में असफल रहे, वह थी हमारी जनता की जीवन्तता, हमारा देश-प्रेम और हमारी पार्टी द्वारा दिया जाने वाला सुदृढ पथ-प्रदर्शन।

समुद्रपार के राजनीतिज्ञ भी इसका हिसाब नही लगा सकते थे। वे उस फ़ासिस्ट जनरल स्टुलपनागेल की वात को विश्वसनीय मानने के लिए बड़े तत्पर थे जिसने नीपर क्षेत्र में अपने पाँव उखाड़ दिये जाने के बाद हिटलर को रिपोर्ट भेजी थी : "जो कुछ नष्ट हो गया है, उसको फिर खड़ा करने के लिए रूस को समय की आवश्यकता पड़ेगी—पच्चीस वर्ष की।" अमरीकी साम्राज्यवादी अत्यन्त निराशापूर्ण भविष्यवाणियो पर विश्वास करना चाहते थे, क्योंकि उस समय तक वे हिटलर-विरोधी मोर्चे में अपने मित्र, सोवियत संघ, के प्रति वड़ी तेज़ी से अपना रवैया बदल चुके थे।

अमरीकी राजनीतिज्ञों मे व्यवहार करना आम तौर पर बडा कठिन हो रहा था। राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट की मृत्यु हो चुकी थी और जब नये प्रशासन ने श्वेत सदन (राष्ट्रपति का कार्यालय) मे प्रवेश किया तो वह पुराने सभी "मुद्दृढ"

समय में भेजा था। मेरे वहाँ पहुँचने से लगभग एक महीने पहले 27 जुलाई
कठिन के प्रावदा ने "जापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने के पुनरुद्धार का काम
1946हीं हो पा रहा है ?" शीर्षक के लेख में उठाये गये प्रश्नों का निम्नलिखित
क्यों नदिया था . "मुख्य कारण है संगठन की कमी। काम के संगठन और यंत्री-
उत्तर के लिए कोई योजना तैयार नही की गयी है। काम की कोई वास्तविक
करण तालिका नही है। काम की पूर्ति को परिमाणात्मक रूप में नही, रूबलों में
समय- किया जा रहा है। ऐसी हालत मे ऊलजलूल बातें पनपती हैं...।" फिर
व्यक्त मे एक और लेख छपा, "एक निर्माण-स्थल और तीन पार्टी समितियाँ,"
प्रावदमें पार्टी की जिला, नगर और क्षेत्रीय समितियों की आलोचना की गयी थी
जिसमें निर्माणकर्ताओ के काम में बराबर हस्तक्षेप तो करती है, मगर उनको
कि वेफ़ी और कभी-कभी अयोग्यतापूर्ण सहायता देती हैं। अन्तत: सोवियत संघ
नाकाम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति का एक फैसला जारी किया
की वजिसके बाद उक्रइनी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति का
गया।न्धित फैसला भी जारी हुआ जिसका शीर्षक था, "उक्रइनी पार्टी संगठन में
सम्बं के और सरकार के प्रमुख कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, चयन और वितरण के
पार्टीय मे।"

विप यही वह व्यवस्था थी जिस पर निर्माण-स्थलों की मेरी प्रारम्भिक छानबीन
बाद जापोरोझये कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की क्षेत्रीय समिति के 11वें
के र अधिवेशन मे विचार हुआ जिसमे मैंने भाग लिया। क्षेत्रीय बैठक के पहले
पूर्णी की केन्द्रीय समिति की ओर से जापोरोझये मे फोन पर मुझे यह सूचना दी
पार्टी

गयं "प्रस्ताव पास किया गया है कि आपको क्षेत्रीय समिति का प्रथम सचिव
ाये जाने की सिफारिश की जाये। पूर्णाधिवेशन का संचालन आप करेंगे।"

बन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति के
भिन्न विभागों में से एक के प्रधान जापोरोझये आये। विषय-सूची पर दूसरा
विषय था संगठन का : पार्टी की केन्द्रीय समिति की सिफारिश पर मुझे क्षेत्रीय
विमिति का प्रथम सचिव चुना गया। यह हुआ 30 अगस्त 1946 को।

स एक पूरे क्षेत्र मे पार्टी और जनता के काम-काज के मामले मे इतनी गहरी
ौर सर्वांग उत्तरदायित्व की भावना मैंने इससे पहले कभी महसूस नहीं की थी।
अभसे जो कुछ आशा की जा रही थी, वह सिर्फ इतना ही नही था कि मैं अपनी
सर्वोत्तम क्षमता के साथ काम करूँ, बल्कि यह भी कि मैं काम मे उल्लेखनीय मोड
और तीव्र परिवर्तन उपलब्ध करूँ। आशा की जा रही थी सम्पूर्ण क्षेत्रीय पार्टी
संगठन के काम में एक नयी शैली की, और अनेक औद्योगिक संस्थानों के, प्रथमत:
और सर्वोपरि जापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने के, निर्माण-कार्य की रफ़्तार में
अ

तेज़ी से वृद्धि की। मैं पूरी तरह जानता था कि यह काम राज्य के लिए, न केवल आर्थिक रूप में, बल्कि राजनीतिक रूप में भी, महत्वपूर्ण था।

सारे मामले में केन्द्रीय बात यह थी : चौथी पंचवर्षीय योजना (1946-1950) सम्बन्धी कानून में, जिसे मार्च 1946 में पास किया गया था, ज़ापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाने के पुनर्जन्म की व्यवस्था की गयी थी : "देश के दक्षिणी भाग मे पतले कोल्ड-रोल्ड (चद्दर) धातु के उत्पादन को पुन: चालू करना है...।" जो लोग इस एक पंक्ति का अर्थ समझते थे, उनके लिए वह बडी महत्वपूर्ण बात थी। किन्तु अपनी जटिलता के कारण इस काम को विशेष सर्वोच्च प्राथमिकता नही मिल सकी। बताया जाता था कि उसका मलबा हटाने मात्र के लिए वर्षो लग जायेंगे। यह भी राय प्रकट की गयी थी कि किसी नये स्थान पर उत्पादन का नये सिरे से निर्माण करना अधिक आसान होगा। उदाहरण के लिए, फासिस्ट आक्रमण से पीड़ित देशों को सहायता देने के लिए जो अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सयुक्त राष्ट्र पुनर्वास-पुनर्निर्माण संगठन स्थापित किया गया था, उसके विशेषज्ञों की यही राय थी। ज़ापोरोझ्ये को देखने के बाद उन्होंने लिखा था कि इस कारखाने को फिर चालू करना सामान्यत: व्यावहारिक नही होगा; नया कारखाना स्थापित करना इससे सस्ता पड़ेगा।

मैं किसी आधार पर यह नही कह सकता कि इन विशेषज्ञों में योग्यता या ईमानदारी की कमी थी। उन्होंने अत्यन्त बारीकी से हर चीज का निरीक्षण किया, निर्धारण किया और मापा : विनाश का परिमाण, टेक्नोलोजी का स्तर, उस समय पर हमारी ऊर्जा के साधन, हमारी चीजें उठाने की क्षमता, श्रमशक्ति, आदि। "एकमात्र" चीज़ जिसका वे हिसाब-किताब लगाने मे असफल रहे, वह थी हमारी जनता की जीवन्तता, हमारा देश-प्रेम और हमारी पार्टी द्वारा दिया जाने वाला सुदृढ पथ-प्रदर्शन।

समुद्रपार के राजनीतिज्ञ भी इसका हिसाब नही लगा सकते थे। वे उस फ़ासिस्ट जनरल स्टुलपनागेल की बात को विश्वसनीय मानने के लिए बड़े तत्पर थे जिसने नीपर क्षेत्र में अपने पाँव उखाड़ दिये जाने के बाद हिटलर को रिपोर्ट भेजी थी : "जो कुछ नष्ट हो गया है, उसको फिर खडा करने के लिए रूस को समय की आवश्यकता पड़ेगी—पच्चीस वर्ष की।" अमरीकी साम्राज्यवादी अत्यन्त निराशापूर्ण भविष्यवाणियो पर विश्वास करना चाहते थे, क्योंकि उस समय तक वे हिटलर-विरोधी मोर्चे मे अपने मित्र, सोवियत संघ, के प्रति बडी तेज़ी से अपना रवैया बदल चुके थे।

अमरीकी राजनीतिज्ञों से व्यवहार करना आम तौर पर बडा कठिन हो रहा था। राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट की मृत्यु हो चुकी थी और जब नये प्रशासन ने श्वेत सदन (राष्ट्रपति का कार्यालय) में प्रवेश किया तो वह पुराने सभी "सुदृढ"

वायदों और स्थायी समझौतों को भूल गया। उदाहरण के लिए, अमरीकियों ने नीपर केन्द्र के लिए बिजली पैदा करने के साज-सामान का पूरा सेट तैयार कर देने का वायदा किया था, मगर तीन मशीनें बेचने के बाद उन्होंने यकायक सप्लाई बन्द कर दी। उन्होंने चद्दरी इस्पात को युद्ध-सामग्री की सूची में रख लिया और उसी तरह अप्रत्याशित तरीके से बिक्री बन्द कर दी। मोटर गाड़ियों और ट्रैक्टरों के निर्माण के लिए यह इस्पात परमावश्यक है। पुरानी पीढ़ी के लोगों को शायद स्मरण हो कि तब हमारी सड़कों पर चलनेवाली लारियों में कैब (ड्राइवर के बैठने की जगह का ढांचा) और फैण्डर प्लाईवुड (लकड़ी) के बने हुआ करते थे।

अब "शीतयुद्ध" शुरू हो गया। वह बहुत वर्षों तक, वास्तव में दो दशकों तक, चलता रहा। पूँजीवादी राष्ट्रों ने अपनी आशाएँ हमारी कठिनाइयों पर कोई पहली या आखिरी बार नहीं लगायी थीं और उन्होंने हमें अपनी इच्छा के अनुसार चलाने और घरेलू मामले में हस्तक्षेप करने का प्रयास किया। उनका हिसाब-किताब सीधा-सादा था : इस मामले में कोई विकल्प न होने के कारण सोवियत संघ को मशीनरी और चद्दरी इस्पात की माँग करनी पड़ेगी; चूँकि यह और कहीं से नहीं मिल सकता, इसलिए कम्युनिस्टों को उनके सामने घुटने टेकने पड़ेंगे।... तो हुआ क्या ? क्या हम मिट गये या पीछे हटे ? क्या हमारी प्रगति में बाधा पड़ी ? नहीं। समुद्रपार के लालबुझक्कड़ों ने अपनी नीति में गलत हिसाब लगाया—यह बात आज की पीढ़ी को याद करना लाभदायक होगा, क्योंकि यह बात सामयिक है और शिक्षाप्रद भी।

सारी दुनिया ने एक बार फिर समाजवादी अर्थतंत्र की सुरक्षित शक्ति, हमारी नियोजित अर्थव्यवस्था द्वारा प्रस्तुत संभावनाएँ और हमारे देश के विराट बल के दर्शन किये, जिसकी शक्तियों को आवश्यकता पड़ने पर पुनर्गठित किया जा सकता है और मुख्य उद्देश्य पर केन्द्रित किया जा सकता है।

अतः यहाँ हम जिन निर्माण-स्थलों की चर्चा कर रहे हैं, वहाँ काम रुकना तो दूर, और भी तेजी से आगे बढ़ा। अमरीकियों ने हमें जिन टर्बाइनों और जेनरेटरों से वंचित रखा था, उनको लेनिनग्राद और नोवोक्रामातोर्स्क के मजदूरों, इंजीनियरों और डिज़ाइनरों ने बनाया; हालांकि समय की बड़ी सख्त पाबंदी थी, फिर भी उन्होंने जो मशीनें बनायीं, वे अमरीकी मशीनों से अधिक विश्वसनीय और अधिक शक्तिशाली थीं।

पुनः जन्मे नीपर जल-विद्युत केन्द्र में 1947 के वसंत काल के प्रारम्भ में पहली बिजली पैदा हुई। जहाँ तक चद्दरी इस्पात के उत्पादन का प्रश्न था, सोवियत जनता ने उद्योग की इस अत्यन्त जटिल शाखा को एक ही वर्ष के अन्दर पुनर्स्थापित कर असम्भव को सम्भव कर दिखाया। ज़ापोरोझये में ओर्दझोनिकिद्ज़े लौह-

यह निष्कर्ष निकाला कि जहाँ चालू मामलों को निपटाया जाना है—और उससे कोई बचाव नहीं था—वहाँ संगठनात्मक और पार्टी के राजनीतिक काम में आमूल सुधार के प्रश्नों पर प्राथमिक विचार भी किया जाना चाहिए।

मेरी पहली धारणाएँ गलत नही थी। लौह-इस्पात कारखाने के स्थान पर बहुत सारे लोग थे (निर्माण के शिखर पर 47,000 लोग), मगर अभी तक कोई कार्य-समूह ढाला नहीं जा सका था। अनगिनत मंत्रालयों के अत्यन्त भिन्न विभागों के आधीन होनेवाले लगभग 40 निर्माण-प्रशासन और उप-ठेका संगठन काम मे लगे थे। मुझे फौरन ही इन सभी दफ्तरो के बीच तालमेल की कमी, उनके अनंत तर्क-वितर्कों और आपसी दोषारोपणों का सामना करना पड़ा। वे लगभग हर जगह काम शुरू कर देते थे और कहीं भी किसी काम को खत्म नही करते थे। अनुशासन ढीला था और कोई अन्तर्विधि या सहयोग नहीं था। दूसरे शब्दों मे, हर ऐसी बात की कमी थी जो एक जन-समूह को सुचारु रूप से काम करने वाला संगठन बना देती है।

मेरी सबसे पहली चिन्ता थी—काम को सौंपने और पूरा कराने के लिए कुशलता का वातावरण और कडी पार्टी-भावना पैदा करना। आज निश्चित कार्य-क्रम बनाये बिना कोई व्यक्ति निर्माण-स्थल पर काम शुरू नही करेगा, मगर उस समय कुछ मैनेजर बडी हार्दिकता से यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते थे कि हमारी परिस्थितियों मे काम का कोई क्रम लागू ही नही किया जा सकता; निर्माण-कार्य कोई "सामान्य" ढग का न था; मलवे के पहाड हटाये जा रहे थे, पाइपों, गार्डरो, बल्लियों, पटरियों और मशीन के हिस्सों को वहाँ से साफ किया जा रहा था, और यह काम था जिसको काम के किसी मानदंड में फिट करना असम्भव था।

अमल यह था : काम के कोई प्रतिमान नही थे और श्रम की उत्पादकता अँगूठे की हुकूमत से नापी जाती थी। दूसरे शब्दों में, *जहाँ काम फँसा होता था*, उसके अनुरूप योजनाएँ तैयार होती थी और इसीसे विकास-दर नापी जाती थी जिसके लिए शुरुआत इस बात से की जाती थी कि एक पाली या एक महीने में कितना काम किया जा सकता है—इससे नही कि आवश्यक कितना है, कितना काम परमावश्यक है।

ऐसी धारणाओं का उन्मूलन आवश्यक था, और पार्टी की शहर कमेटी के पूर्णाधिवेशन मे (उस समय की व्यवस्था के अनुसार मैं साथ-ही-साथ शहर कमेटी का प्रथम सचिव भी था) मुझे इस मामले का विशेष उल्लेख करना पड़ा। उस अधिवेशन की कार्यवाही से पता चलता है कि मुझे निर्माण-मजदूरो को इन शब्दों मे उलाहना देना पडा था : "जरा कृषि की व्यवस्था पर नजर डालिये। जब बुवाई पूरे जोर-शोर पर होती है तो मुझे हर शाम दिन के काम की रिपोर्ट मिलती है। मैं तब हस्तक्षेप कर सकता हूँ, सहायता दे सकता हूँ और पिछडे हुए जिले को

के तार निकाले गये थे (लगभग 900 किलोमीटर लम्बे), उनसे देश के पूर्व में दर्जनों अस्त्र-शस्त्र कारखानों को लैस करने में सहायता मिली। ज़ापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने का अधिकांश साल-सामान मेग्नीतोगोर्स्क कारखाने में लगाया गया था जहाँ देश के लिए उच्च कोटि की मिश्रित धातु से बख्तरबंद की प्लेटें बनानेवाली एक नयी शाप चालू हो गयी।

स्वभाव में दीमशित्स कुज़मिन के विपरीत थे : कभी-कभी वे अपने मूल्यांकन में बिलकुल दो-टूक होते थे, मगर औद्योगिक रणनीति पर उनकी पकड़ पक्की थी और कहा जा सकता है कि तकनीकी पथ-प्रदर्शन के वह उस्ताद थे। इंजीनियरिंग समस्याओं के हल में वे साहसिकता से प्रेम करते थे और नवोन्मेषक का समर्थन करते थे, मगर गाल बजाने को आसानी से रोक देते थे। निर्माण-मज़दूर विशेष प्रकार के लोग होते हैं और काम से पहले प्रात:कालीन हिदायतनामों में उनकी भाषा कोई बड़ी संसदीय (शराफत की) नहीं होती। मगर मैं उल्लेख करना चाहूँगा कि ऐसे विचार-विनिमय में भी नरम और भले स्वभाव के कुज़मिन सुदृढ रुख और सिद्धान्त-संगत रूप से अपनी बात की हिमायत करने में भी समर्थ थे।

निर्माण-विशेषज्ञों और प्रशासन-विशेषज्ञों की सदा पटती नहीं है, मगर कुज़मिन और दीमशित्स सदा समान भाषा खोज लेते थे। मुझे उनके आपसी टकराव का एक भी उदाहरण याद नहीं पड़ता। इन दोनों व्यक्तियों के सम्बन्धों पर क्षेत्रीय पार्टी कमेटी बराबर प्रभाव डालती रहती थी। शुरू से ही काम के क्रम के मामले में वे एक-दूसरे से सहमत हो जाते थे, जो अन्ततः यथार्थ में रूपान्तरित हो जाते थे। 24 घंटे काम का सख्त क्रम सभी विभागों द्वारा संचालित काम को जोड़ता था और यह आश्वस्त करने में सहायता देता था कि लक्ष्य सख्ती के साथ समय पर शुरू किये जायें। वही हम सबकी समान जीत थी।

काम के सावधानी से बनाये गये क्रम को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता था जो न सिर्फ व्यवस्था कर्मचारियों को, बल्कि काम के सुपरिंटेंडेंटों, फोरमैनों, पार्टी, ट्रेड यूनियन और तरुण कम्युनिस्ट लीग के पदाधिकारियों को तथा काम की रिपोर्ट भेजनेवाले संवाददाताओं को दे दी जाती थी। इन पुस्तिकाओं में कार्यक्रम का व्यापक प्रचार भी होता था जो एक समूह के अस्तित्व में आने के लिए भी आवश्यक होता है। आसपास क्या हो रहा है, इसको जाने बिना अपने काम से चिपके रहना एक बात है; मगर जब व्यक्ति को निर्माण-स्थल की सारी घटनाओं की जानकारी हो और काम के सर्वांग नक्शे में उसका स्वयं का क्या स्थान है, तब काम बिलकुल भिन्न रूप ले लेता है।

निश्चय ही, काम का क्रम लागू करना आधा ही काम था। उस पर दिन-प्रतिदिन अमल और विस्तृत तथा सार्वजनिक जवाबदेही भी आश्वस्त करनी थी। निर्माणकर्त्ताओं ने ग्रिगोरी लुबेनेत्स के मातहत, जो इस समय उक्रइनी सोवियत

गणतंत्र के भारी उद्योग निर्माण-विभाग के मंत्री है, एक डिस्पैचर सर्विस स्थापित कर यह काम भी पूरा किया। (सामान्यत: हमारी फैक्टरियों और निर्माण-स्थलों ने बहुत सारे प्रथम श्रेणी के पार्टी-नेता और आर्थिक-नेता पैदा किये है)। उस समय वे एक हृष्ट-पुष्ट युवक थे और टेलीफोनों के हुजूमों से घिरे बैठे काम किया करते थे; वे हर चीज पर नज़र रख लेते थे, उनकी याददाश्त बढिया थी और कभी पीछे नही पडते थे जिसके कारण जब 5 बजे शाम को दैनिक काम की रिपोर्ट तैयार की जाती थी, वे हर प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार मिलते थे। इस प्रकार सारी खोखली तकरारों और कमियों के हवालों का अन्त हो गया। उनके आँकडे ठोस हुआ करते थे।

निर्माण मजदूरों के सम्मेलनों में भाग लेना मुझे पसन्द था। उनकी हिदायतें सदा संक्षिप्त और मतलब की बात तक होती थीं—लम्बे ताने-बाने नहीं बुने जाते थे। निश्चय ही, इसमे कुछ प्रयत्न करना पडा और हमें सुस्ती दूर भगानी पड़ी तथा "किसी प्रकार गिरते-पड़ते आगे बढने" के मनोविज्ञान के खिलाफ जेहाद छेडना पड़ा। धीरे-धीरे व्यवस्था छा गयी, निर्माण-कार्य एक लयपूर्ण रीति से आगे बढने लगा और जो भी बाधाएँ पैदा हुईं, उनको तुरन्त दूर किया गया।

मुझे मई 1947 के प्रारम्भ में क्षेत्रीय कमेटी के भवन के छोटे कक्ष मे जापोरोभस्ट्रोय के पार्टी तथा व्यवस्थापक कार्यकर्ताओं की एक बैठक की याद आती है। दीमशित्स ने काम की प्रगति पर रिपोर्ट दी, जब कि कुज़मिन ने बड़े ही बारीक विस्तार से निर्माण मजदूरों के सामने पेश तकाज़ो को गिनाया; कुछ मजदूर भी बोले। मुझे बैठक का समापन करना पडा और मैंने अपने भाषण मे बल दिया कि हमारे प्रयत्न उन परियोजनाओं पर केंद्रित होने चाहिए जो चालू होने के लिए तैयार हो रही है : उस समय ये थी ताप और बिजली केंद्र और धमन-भट्टी।

मैंने कहा, "एक अत्यन्त असाधारण परिस्थिति विकसित हो रही है। अपनी अनुभव सम्पदा के बावजूद आपको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह पहली बार है कि आपको निर्माण की ऐसी रफ्तार और काम के इतने परिमाण का सामना करना पड रहा है। चालू करने की तारीख का पालन करना हम सबके लिए अनिवार्य है। हम अपना लक्ष्य पूरा नही कर सकेंगे, अगर हम अपनी शक्तियाँ उन चीज़ों पर केंद्रित नहीं करेंगे जिन्हे सबसे पहले चालू करना है और एक आक्रामक सेना नही जुटायेंगे या कहे कि घूंसाबद्ध मुट्ठी तैयार नहीं करेंगे। अभी तक हम अपने को किन्हीं विशेष हिस्सों पर केंद्रित किये हुए थे, विशेषकर धमन-भट्टी जैसी महत्वपूर्ण परियोजना पर, मगर मुट्ठी बंद करके नही, खुली हथेली फैलाये हुए। इसका भारी असर नही पड़ता।"

उस वर्ष के अन्दर हमने इस विधि का उपयोग करना सीख लिया : यानी

अपनी सारी शक्तियों को एक मुट्ठी में जुटाने की विधि, जिसको हमने शस्त्रा-गार का मुख्य अंग बना लिया। इस बात को सारे देश ने अपनाया और सराहा। ज़ापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाने और नीपर जल-विद्युत केंद्र की पुनर्स्थापना को राष्ट्रव्यापी निर्माण-अभियान में शक्तियों तथा साधनों को निर्णयकारी क्षेत्रों मे केंद्रित करने का अनुकरणीय आदर्श माना गया। आगे चलकर इस आदर्श को हमारे अनेक निर्माण-स्थलों पर लागू किया गया। यही रीति थी जिससे क्रिवीरोग मे विशाल नं० 9 धमन-भट्टी चालू की गयी, झदानोव में "3600" मिल का निर्माण हुआ, और वोल्झस्की तथा काम मोटर गाडी कारखाने भी इसी विधि से बनाये गये। आज इसी अनुभव को त्यूमेन के तेल-गैस मजदूर और बैकाल-आमूर रेलवे के निर्माता भी इस्तेमाल कर रहे है।

इस अवसर का लाभ उठाकर मैं अपने देश के कल और अभी तक तय किये गये रास्ते तथा नये कर्तव्यो के निर्धारण के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध पर बल देना चाहूँगा। हर वर्ष बीतने के साथ हमारी योजनाओं की व्यापकता और हमारी समस्याओ की जटिलता बढती जा रही है और उनको एक नये ही स्तर तथा नये ही तरीके से हल करना पड़ता है। मगर यहाँ समाजवाद के निर्माण के अमल में प्राप्त अनुभव-सम्पदा तथा पार्टी और जनता के ऐतिहासिक अनुभव को उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, आज हमने अपने लिए विशेष महत्व का कार्यक्रम निश्चित किया है : पश्चिमी साइबेरिया के खनिज साधनों का सर्वांग उत्खनन और उसकी उत्पादक शक्तियों का विकास। यह सचमुच हमारे समय का विराट निर्माण-कार्य है जो पिछले वर्षो और पांच वर्ष के काल मे किये गये कामों की तुलना मे काम के दायरे, पूँजी-निवेश के परिमाण और टेक्नोलोजी सम्बन्धी जटिलता तथा यातायात सम्बन्धी कामो की दृष्टि से कही अधिक बडा है। यहाँ पर अब तक के जमा अनुभवों से लाभ उठाना और शक्तियों का कोई बिखराव न होने देना और भी अधिक महत्वपूर्ण है। आगे बढने की मुख्य दिशाओ में समय पर साधनो को केंद्रित करने और प्राथमिकताएँ सही ढंग से निर्धारित करने यानी राष्ट्रीय अर्थतंत्र के लिए महत्व की दृष्टि से समस्याओं को हल करने के मामले मे किये गये काम को पहले लेना चाहिए, यह तय करने का कर्तव्य हमेशा से अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है।

नियोजन कला और सामान्यत: आर्थिक नेतृत्व की समर्थता उन ठोस कड़ियो की स्थापना करने की क्षमता मे प्रकट होती है जो कम-से-कम खर्चे में अधिक-से-अधिक और तीव्रतम सुपरिणाम उपलब्ध कराते है, और जिसमें अन्तिम परिणामों की दृष्टि मे हर काम को संभालने की योग्यता होती है।

एक शब्द मे, लेनिन की भाषा का उपयोग करें तो उसका अर्थ है—उन

कड़ियों को पकड़ना जिससे पूरी शृंखला पकड में आ जाती है और पहले की ही तरह वह आज भी हमारे लिए निर्णयकारी महत्व की चीज है। और मैं जापोरोझ्ये निर्माण-कार्य के उस तनाव और घटनापूर्ण वर्ष में पहली बार उन शब्दों का अर्थ समझने लगा और उनका महत्व देखने लगा।

□ □

जैसाकि मैंने पहले कहा, मुझे शुरू से ही अपनी संगठनात्मक कार्यवाहियों के साथ-साथ पार्टी-कार्य और राजनीतिक कार्य की ओर भी बड़ा ध्यान देना पडा। वास्तव में ऐसे प्रश्नों को एक साथ उठाना पड़ता है। जटिलता इस बात से पैदा हो रही थी कि सुस्थापित कार्यदलों में जो स्थिति होती है, उसके विपरीत हमारे यहाँ हर चीज चलायमान थी। आवास और सार्वजनिक सुविधाओं तथा उपयोगिताओं के प्रश्नों को हल करना था। निर्माण-स्थल पर सैंकड़ो लोग रोज़ आ रहे थे: सेना से मुक्त सिपाही, अन्य क्षेत्रों से आनेवाले निर्माण मजदूर, साइबेरिया और यूराल से लौटनेवाले स्वयं हमारे लौह-इस्पात कारखाने के मजदूर, स्थानीय निवासी जिन्हें जबर्दस्ती जर्मनी ले जाया गया, और आसपास के सामूहिक खेतों के नौजवान। लोग पार्टी कमेटियों मे अपनी पार्टी-सदस्यता दर्ज करा रहे थे। काम की प्रक्रिया में ही हमे इन सभी लोगों को मानव-मूल्यों के प्रतिमान से आंकना था।

काम पर सर्वोत्तम लोगों को लिये जाने से पार्टी सदस्यता बढ रही थी। 1947 के पूर्वार्द्ध मे जापोरोझस्त्रोय में हम लोगो ने 1946 की सदस्य-संख्या की तुलना मे दोगुने अधिक लोगो को पार्टी का सदस्य बनाया। उनमे, उदाहरणार्थ, निर्माण मजदूर इवान रूम्यानत्सेव था जिसने उन वर्षो मे बड़ी ख्याति अर्जित की। इस प्रकार हजार सदस्यों वाला कार्यदल अत्यन्त सशक्त केन्द्र सुदृढ किया गया और यह आवश्यक था कि लोगों को याद दिलाया जाता कि पार्टी कमेटी का सचिव, प्रथमतः और सर्वोपरि, राजनीतिक नेता होता है और हर कम्युनिस्ट राजनीतिक योद्धा होता है।

क्षेत्रीय कमेटी की एक बैठक में मुझे उक्रइन पार्टी की नोवोवासिलीयेवस्का ज़िला कमेटी के मंत्री की आलोचना करनी पडी। कुल मिलाकर वह क्षमता और पहलकदमी दिखा रहा था, मगर वह अर्थतंत्र के प्रश्नों मे बहुत अधिक उलझा हुआ था, जिसमें उसका सारा समय चला जाता था। मैंने कहा, ज़िला पार्टी कमेटी का सचिव, प्रथमतः और सर्वोपरि, एक प्रमुख राजनीतिक कार्यकर्ता होता

है जो एक बड़े प्रशासनिक ज़िले मे हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति का प्रतिनिधित्व करता है। मैंने कहा कि हमारे कुछ सचिवों के भाषणों से आर्थिक मैनेजरों की रिपोर्ट की गंध अधिक आती है क्योंकि उनमें राजनीतिक नीति-रीति नहीं दिखायी देती। इस प्रकार नोवोवासिलीयेवस्का के सचिव ने ट्रैक्टरों और बैलों के बारे में भली-भाँति प्रकाश डाला था, मगर जब पार्टी के काम का प्रश्न आया तो वे ख़ामोश थे। यह अच्छी बात नही ! पार्टी के काम मे स्थिति का राजनीतिक विश्लेषण प्राथमिक आवश्यकता होती है। तब हम समझ सकेंगे कि आर्थिक मामलों को भी कैसे संभाला जा सकता है।

जब ज़ापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारख़ाने के निर्माता काम के निर्धारित क्रम से पीछे पड गये और नीपर जल-विद्युत केन्द्र के पुनर्निर्माण में बडी बाधाएँ आ खड़ी हुईं, तो मुझे बराबर बताया जाता रहा कि अगर सीमेंट आ जाता तो सारी स्थिति सामान्य हो जाती। अनेक लोगों को यह लगता था कि सामान की कमी ही एकमात्र बाधा है। निश्चय ही अभाव थे, मगर साथ ही यह स्पष्ट था कि लोग अपने अनुमान के गलत हो जाने की चेतना खो बैठे थे। शोरगुल, तर्क-वितर्क और उस क्षण की चिन्ताओं से सम्भावनाएँ धुँधली पड़ गयी थी और मामले का केन्द्र-बिन्दु आँखों से ओझल हो गया था। आज जब मैं कार्यकर्त्ताओं की बैठकों, सम्मेलनों और पूर्णाधिवेशनो की कार्यवाही के पन्ने पलटता हूँ तो मैं देखता हूँ कि मुझे कितनी बार इस विशेष विषय पर बोलना पड़ा था :

"निस्सदेह सीमेट की आवश्यकता है; बिना उसके आप कंक्रीट नही बना सकते। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि जो आदमी बाँध मे कंक्रीट डालता है, उसे यह समझना चाहिए कि क्यो कंक्रीट को शून्य सेंटीग्रेड से बीस डिगरी नीचे की हालत मे और चालीस मीटर की ऊँचाई पर, डालना और जमाना चाहिए। हिटलरपंथियों के पास साज-सामान की इफरात थी और युद्ध के लिए आवश्यक हर चीज़ थी। फिर भी हम जीते क्यो ? इसलिए कि हमे और हमने जिन सिपाहियो की अगुआई की उन्हे, इस बात की गहरी समझ थी कि भयकर गोलाबारी के साये मे हम शत्रु की मोर्चेबन्दी पर चढाई क्यो कर रहे हैं। यही कारण है कि वे जो कुछ भी करें, उस सबमे हमारी पार्टी के संगठनों को लोगो को शिक्षित करने के काम को सर्वोच्च प्राथमिकता देना चाहिए। तब परिणामत. सीमेट तथा अन्य सभी चीज़ें बडी तेज़ी से प्रकट होंगी और हमारा काम बेहतर रीति से चल निकलेगा।"

हम अपने भाषणो मे अक्सर युद्ध की याद दिलाते, न सिर्फ़ इसलिए कि मोर्चे के उदाहरण हमारे लिए बडे परिचित थे और उनको हम भली-भाँति समझ सकते थे, बल्कि इसलिए भी उस वर्ष की सारी स्थिति युद्ध-मोर्चे का स्मरण कराती थी : निर्माण-स्थल हमारे युद्ध-क्षेत्र थे। मुझे उन मज़दूरों के साथ अपनी पहली बैठक

स्मरण आती है जो नीपर जल-विद्युत केन्द्र का पुनर्निर्माण कर रहे थे। अपना काम संभालते ही सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति के फैसले के अनुसार, विद्युत केन्द्र के पुनर्निर्माण का काम करनेवाले कम्युनिस्टों की ज़िला कमेटी स्थापित की गयी। उनका पहला सम्मेलन मजदूरों, इंजीनियरों और विभागाध्यक्षों के भाषणों के साथ व्यावहारिक वातावरण मे चला; फ़ौरी तकनीकी समस्याएँ उठायी गयी, कमियाँ सामने लायी गयी और आपसी दोषारोपण की कोई कमी नहीं थी। मैं इन सब बातो को सुनता और नोट्स लेता अध्यक्ष-मण्डल में बैठा था। फिर मैंने बोलने की इजाजत माँगी।

उपस्थित लोगों मे कुछ लोग आशा करते थे कि क्षेत्रीय कमेटी के सचिव तुरन्त वही फ़ैसला देते हुए कि कौन वक्ता सही और कौन गलत था, अपना निर्णय दे देंगे, मगर मैं जान-बूझकर तर्क-वितर्क मे हस्तक्षेप से बचा। मैंने फैसला किया था कि उनसे पहली ही भेंट में मेरा ऐसा करना अपरिपक्व होगा। मैंने कहा कि सामान्यत: मैं जल-विद्युत केन्द्र के निर्माण की टेक्नोलोजी के विषय में नही बोलूँगा; ऐसे मामलों मे वे लोग मेरे बिना भी रास्ता पा लेंगे। अधिक उपयोगी यह होगा कि हम अपना ध्यान संगठनात्मक और राजनीतिक काम पर केन्द्रित करें। शुरुआत के रूप में मैंने तीन बुनियादी प्रश्न उठाने का फ़ैसला किया : कार्य-स्थल पर अनुशासन, आलोचना और आत्मालोचना, और समाजवादी होड का विकास।

"होड के मामले में आपके यहाँ क्या स्थिति है ? साफ कहूँ, स्थिति बहुत बुरी है। देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान, विशेषकर निर्णायक चरणो मे, जब सेनाओं को कोई मुश्किल लक्ष्य दिये जाते थे—और वह भी सामग्रियो, वर्कशापो आदि की कमी के बावजूद—तब दृश्यात्मक प्रचार का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, जब हम कीव पर अधिकार की तैयारी कर रहे थे, हमारी सेनाएँ जंगली प्रदेश मे थी, मगर वहाँ शायद ही कोई स्थल था जहाँ पोस्टर या नारे दिखायी न देते हों। आपको पेड़ दिखायी देता जिसकी छाल खुरच दी गयी थी और साफ स्थल पर शब्द लिखे थे : "अगला लक्ष्य है कीव।" प्लाईवुड के एक टुकड़े पर लिखा था : "सिपाहियो, कल आप कीव मे होगे !" टैंको, बैलगाड़ियों और कारों-ट्रकों आदि जो कुछ भी थे, उन सब पर इन्हीं सख्त नारों के साथ हम बर्लिन की ओर बढे और हमने प्राग को मुक्त किया। आज जब मैं विद्युत-केन्द्र और बाँध के स्थल पर गया तो मैंने वहाँ ऐसा कुछ नही देखा : कोई नारे, कोई अपील, किसी प्रमुख कार्यकर्ता का कोई नाम या कोई एक आँकड़ा नही लिखा देखा जिससे पता चलता कि हम किस चीज के लिए और कहाँ लड रहे है। काम मे होड के प्रश्न पर स्थिति यह है।"

आगे मैंने यह भी कहा, "पार्टी कमेटी को सभी प्रमुख मजदूरों को जानना

चाहिए—और सिर्फ जानना ही नहीं चाहिए। अभियानकर्त्ताओं और प्रचारकों की सहायता से, उनकी उपलब्धियों से और उससे भी महत्वपूर्ण है, उनकी कार्य-विधि से सभी निर्माण मजदूरों को परिचित कराना चाहिए। एक विशेष टीम ने कितने प्रतिशत काम पूरा कर दिया है, इन तथ्यों को अगले ही दिन अखबारों, रेडियो और पर्चों की सहायता से प्रचारित करना चाहिए। हम कर्तव्यबद्ध हैं कि पार्टी द्वारा जुटाये गये साधनों के सारे शस्त्रागार का उपयोग करें। और अगर पार्टी कमेटी कार्य-कुशलता के अभियान को प्रभावशील और सर्वव्यापी बना सकेगी तो नीपर जल-विद्युत केन्द्र समय पर चालू हो जायेगा। किन्तु, अगर पार्टी कमेटी योजना विभाग से प्राप्त रिपोर्टों को पढ़ने तथा सारबद्ध करने का ही काम करती रहेगी तो वह समाजवादी कार्य-प्रतियोगिता में कोई नेतृत्व नहीं होगा...।"

श्रोताओं में से एक आवाज : "हमारे यहाँ यही रिपोर्ट है जिनसे हमारे काम को आंका जाता है।"

"ठीक है, इसका अन्त किया जाना चाहिए। कार्यक्षमता में होड़ सीधे पार्टी के अन्दर काम पर निर्भर करता है। हम में से हर एक व्यक्ति जानता है कि जब पार्टी किसी जटिल प्रश्न को हल करना चाहती है तो वह अन्तर-पार्टी कार्य तेज कर देती है। अगर हम निर्माण-स्थल पर सख्त पार्टी अनुशासन रखें तो हम चीजें व्यवस्थित कर लेंगे और सारा काम सुधर जायेगा क्योंकि कम्युनिस्टों के लिए पार्टी से आनेवाले आदेश से अधिक बाध्यकारी और कोई चीज नहीं है...।"

आज मैं जब उन भाषणों के पाठ को पढ़ता हूँ, तो मुझे बात दोहराने की प्रवृत्ति दिखायी देती है, मगर कुल मिलाकर मैं आज भी उस रुख को स्वीकार और समर्थन करूँगा। इसलिए कि कोई दिशा, कोई राजनीतिक नीति-रीति तभी प्रभावशील हो सकती है जब आप एक निश्चित लक्ष्य की दिशा में दिन-ब-दिन, महीना-दर-महीना, काम करेंगे और जब आप अपने विचार विकसित करेंगे, और जब आप अपने शब्दों को तिलांजलि नहीं देंगे और अपने फैसलों को नहीं भूलेंगे। कार्यवाही में एक और बात दर्ज है—श्रोता भिन्न थे, मगर मूल विषय-वस्तु वही थी :

"...साथियो, मैं यह नोट करने के लिए भी बाध्य हूँ कि आपके यहाँ निर्माण-कार्य की गति और विस्तार का प्रतिबिम्ब दृश्यगत अभियान में नहीं दिखायी देता। आम अपीलों से किसी को सहायता नहीं मिलती। "जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाना दक्षिण का रत्न है!"—क्या कोई सुन्दर पोस्टर है? सुन्दर है। क्या सही है? हाँ, सही भी है। मगर उससे पैदा क्या होता है, और क्या लक्ष्य सामने आता है? हमें आवश्यकता है कार्यवाही के ठोस आह्वानों की, आँकड़ों, तारीखों, इंजीनियरों-नवोन्मेषकों, स्ताखोनोवाइटों और प्रमुख कामों के मजदूरों के नामोंवाले पोस्टरों की। कहने का मतलब यह नहीं कि सदा वही नाम होने

चाहिए जो सदा के लिए तय कर दिये गये हों; नये-नये नाम होने चाहिए—उनके नाम जो उस समय कार्य-कुशलता की होड़ में आगे आये हों। हमें जापोरोझस्त्रोय मज़दूरों की इस शानदार सेना से जनता को परिचित कराना चाहिए।"

संगठनात्मक और राजनीतिक दोनों ही काम एक उद्देश्य की ओर प्रेरित थे। पार्टी की क्षेत्रीय समिति संकल्प कर चुकी थी कि जन-समूह को एक कार्यदल में बदल देगी और कार्यदल मे हर एक को इस तरह शिक्षित करेगी कि वे अगुआ होंगे—प्रमुख व्यक्ति और सशक्त व्यक्तित्व बनेंगे। सचमुच, ऐसे अनेक लोग आगे आये। मैं उन्हें सुने-सुनाये आधार पर ही नही जानता था। मैं निर्माण-स्थल जाता और कार्य-स्थल पर उनसे प्रत्यक्ष बातें करता। जैसे युद्धकाल में खाई के अन्दर आदमी एक-दूसरे को बेहतर ढंग से जान पाता है, वैसे ही मैं उन्हें बेहतर रीति से समझ सका।

एक प्रमुख व्यक्ति का यहाँ एक उदाहरण देता हूँ। जब कभी मुझे नीपर जल-विद्युत केन्द्र के निर्माण-स्थल पर जाने का अवसर मिलता था, तब मुझे दूर से ही उन युवा महिलाओं की गूँजती आवाज सुनायी देती थी जो बाँध के लिए सीमेंट के तसले एक-दूसरे को देकर यथास्थल पहुँचाती थी। शालों से आँखों तक चेहरा बंद किये हुए और सीमेंट की धूल से लदी हुई, वे कभी अपनी स्फूर्ति नही खोती थीं, फिर चाहे मौसम उमस-भरा हो या सख्त सर्द। उनसे जब पूछा कि काम कैसे चल रहा है तो वे सदा ही एक स्वर से उत्तर देतीं, "ठीक है!" इन युवा महिलाओ ने अन्या लोश्कारयोवा के नेतृत्व में एक टीम बनायी जिसने जनतंत्र के सम्मान-पद प्राप्त किये। कार्यकर्ताओं की एक बैठक मे, जिसमे तूफानी ब्रिगेडों, तरुण कम्युनिस्ट लीग और अगुआ टीमों के सदस्य थे, इंटरवल के दौरान मुझे बड़ी आकर्षक पोशाकें पहने हुए महिलाओं के एक समूह ने घेरा जिनमे मैं अपनी पुरानी परिचितों को तुरन्त पहचान नही पाया।

"क्या आप भी अगुआ टीम मे हैं?"

"हम हुआ करते थे।"

"नही, अन्या, मैं सहमत नही। नदी मे शीघ्र बाढ आ जायेगी और ऊँचे ग्रेड की कंक्रीट की फौरन आवश्यकता है। सारी टीमो का काम तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है। तुम्हारी अग्रमोर्चे की टीम अभी भी तुम्हारा इन्तजार कर रही है।"

इन लड़कियों ने काम बड़े अच्छे ढंग से संभाला। अक्तूबर क्रान्ति की तीसवी वर्षगाँठ के समारोह के अवसर पर मैंने उन्हे प्रदर्शनकारियों के बीच देखा और माइक्रोफोन पर पुकारा, "अन्या लोश्कारयोवा की टीम का अभिनन्दन!" उन्हे चेहरों पर मुसकान धारण कर मुडकर देखा...।

कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि अन्या, युद्धकाल के वर्षों में भुखमरी के बचपन के परिणामस्वरूप गम्भीर रूप से बीमार हो गयी है: उसे तपेदिक हो गया

चाहिए—और सिर्फ जानना ही नही चाहिए। अभियानकर्त्ताओं और प्रचारकों की सहायता से, उनकी उपलब्धियों से और उससे भी महत्वपूर्ण है, उनकी कार्य-विधि से सभी निर्माण मज़दूरों को परिचित कराना चाहिए। एक विशेष टीम ने कितने प्रतिशत काम पूरा कर दिया है, इन तथ्यों को अगले ही दिन अखबारों, रेडियो और पर्चों की सहायता से प्रचारित करना चाहिए। हम कर्तव्यबद्ध हैं कि पार्टी द्वारा जुटाये गये साधनों के सारे शस्त्रागार का उपयोग करें। और अगर पार्टी कमेटी कार्य-कुशलता के अभियान को प्रभावशील और सर्वव्यापी बना सकेगी तो नीपर जल-विद्युत केन्द्र समय पर चालू हो जायेगा। किन्तु, अगर पार्टी कमेटी योजना विभाग से प्राप्त रिपोर्टों को पढने तथा सारबद्ध करने का ही काम करती रहेगी तो वह समाजवादी कार्य-प्रतियोगिता मे कोई नेतृत्व नही होगा...।"

श्रोताओं में से एक आवाज़ : "हमारे यहाँ यही रिपोर्ट है जिनसे हमारे काम को आँका जाता है।"

"ठीक है, इसका अन्त किया जाना चाहिए। कार्यक्षमता में होड सीधे पार्टी के अन्दर काम पर निर्भर करता है। हम मे से हर एक व्यक्ति जानता है कि जब पार्टी किसी जटिल प्रश्न को हल करना चाहती है तो वह अन्तर-पार्टी कार्य तेज़ कर देती है। अगर हम निर्माण-स्थल पर सख्त पार्टी अनुशासन रखें तो हम चीज़ें व्यवस्थित कर लेंगे और सारा काम सुधर जायेगा क्योंकि कम्युनिस्टों के लिए पार्टी से आनेवाले आदेश से अधिक बाध्यकारी और कोई चीज़ नही है...।"

आज मैं जब उन भाषणो के पाठ को पढता हूँ, तो मुझे बात दोहराने की प्रवृत्ति दिखायी देती है, मगर कुल मिलाकर मैं आज भी उस रुख़ को स्वीकार और समर्थन करूँगा। इसलिए कि कोई दिशा, कोई राजनीतिक नीति-रीति तभी प्रभावशील हो सकती है जब आप एक निश्चित लक्ष्य की दिशा में दिन-ब-दिन, महीना-दर-महीना, काम करेंगे और जब आप अपने विचार विकसित करेंगे, और जब आप अपने शब्दों को तिलांजलि नही देंगे और अपने फैसलों को नही भूलेंगे। कार्यवाही मे एक और बात दर्ज है—श्रोता भिन्न थे, मगर मूल विषय-वस्तु वही थी :

"...साथियो, मैं यह नोट करने के लिए भी बाध्य हूँ कि आपके यहाँ निर्माण-कार्य की गति और विस्तार का प्रतिबिम्ब दृश्यगत अभियान मे नही दिखायी देता। आम अपीलों से किसी को सहायता नही मिलती। "जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाना दक्षिण का रत्न है!"—क्या कोई सुन्दर पोस्टर है? सुन्दर है। क्या सही है? हाँ, सही भी है। मगर उससे पैदा क्या होता है, और क्या लक्ष्य सामने आता है? हमे आवश्यकता है कार्यवाही के ठोस आह्वानों की, आँकड़ों, तारीखों, इंजीनियरो-नवोन्मेषकों, स्ताखोनोवाइटों और प्रमुख कामो के मज़दूरों के नामोंवाले पोस्टरो की। कहने का मतलब यह नही कि सदा वही नाम होने

चाहिए जो सदा के लिए तय कर दिये गये हों; नये-नये नाम होने चाहिए—उनके नाम जो उस समय कार्य-कुशलता की होड़ में आगे आये हों। हमें ज़ापोरोझ्स्त्रोय मज़दूरी की इस शानदार सेना से जनता को परिचित कराना चाहिए।"

संगठनात्मक और राजनीतिक दोनों ही काम एक उद्देश्य की ओर प्रेरित थे। पार्टी की क्षेत्रीय समिति संकल्प कर चुकी थी कि जन-समूह को एक कार्यदल में बदल देगी और कार्यदल मे हर एक को इस तरह शिक्षित करेगी कि वे अगुआ होगे—प्रमुख व्यक्ति और सशक्त व्यक्तित्व बनेंगे। सचमुच, ऐसे अनेक लोग आगे आये। मैं उन्हे सुने-सुनाये आधार पर ही नहीं जानता था। मैं निर्माण-स्थल जाता और कार्य-स्थल पर उनसे प्रत्यक्ष बातें करता। जैसे युद्धकाल मे खाई के अन्दर आदमी एक-दूसरे को बेहतर ढंग से जान पाता है, वैसे ही मैं उन्हे बेहतर रीति से समझ सका।

एक प्रमुख व्यक्ति का यहाँ एक उदाहरण देता हूँ। जब कभी मुझे नीपर जल-विद्युत केन्द्र के निर्माण-स्थल पर जाने का अवसर मिलता था, तब मुझे दूर से ही उन युवा महिलाओं की गूंजती आवाज़ सुनायी देती थी जो बाँध के लिए सीमेंट के तसले एक-दूसरे को देकर यथास्थल पहुँचाती थी। शालों से आँखों तक चेहरा बंद किये हुए और सीमेंट की धूल से लदी हुई, वे कभी अपनी स्फूर्ति नही खोती थीं, फिर चाहे मौसम उमस-भरा हो या सख्त सर्द। उनसे जब पूछा कि काम कैसे चल रहा है तो वे सदा ही एक स्वर से उत्तर देती, "ठीक है!" इन युवा महिलाओं ने अन्या लोश्कारयोवा के नेतृत्व मे एक टीम बनायी जिसने जनतंत्र के सम्मान-पद प्राप्त किये। कार्यकर्ताओं की एक बैठक मे, जिसमे तूफानी ब्रिगेडों, तरुण कम्यु-निस्ट लीग और अगुआ टीमो के सदस्य थे, इंटरवल के दौरान मुझे बड़ी आकर्षक पोशाकें पहने हुए महिलाओ के एक समूह ने घेरा जिनमें मैं अपनी पुरानी परि-चितों को तुरन्त पहचान नही पाया।

"क्या आप भी अगुआ टीम मे है?"

"हम हुआ करते थे।"

"नहीं, अन्या, मैं सहमत नही। नदी मे शीघ्र बाढ आ जायेगी और ऊँचे ग्रेड की कंक्रीट की फौरन आवश्यकता है। सारी टीमो का काम तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है। तुम्हारी अग्रमोर्चे की टीम अभी भी तुम्हारा इन्तज़ार कर रही है।"

इन लड़कियो ने काम बड़े अच्छे ढंग से संभाला। अक्तूबर क्रान्ति की तीसवी वर्षगाँठ के समारोह के अवसर पर मैंने उन्हे प्रदर्शनकारियो के बीच देखा और माइक्रोफोन पर पुकारा, "अन्या लोश्कारयोवा की टीम का अभिनन्दन!" उन्हे चेहरों पर मुसकान धारण कर मुड़कर देखा...।

कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि अन्या, युद्धकाल के वर्षों मे भुखमरी के बचपन के परिणामस्वरूप गम्भीर रूप से बीमार हो गयी है: उसे तपेदिक हो गया

था। निश्चय ही उसके इलाज के लिए हमने सब कुछ किया और फिर उसको दूसरा काम देने का प्रस्ताव रखा, मगर उसने इनकार कर दिया। उसने कहा, "मैं निर्माण-स्थल और लड़कियों के बिना ज़िंदा नही रह सकती।"

नीपर जल-विद्युत केन्द्र के पुनर्स्थापन में उसके योगदान के लिए अन्या लोश्कारयोवा को लेनिन-पदक प्रदान किया गया। अनेक वर्षों बाद हमारे रास्ते फिर मोल्दाविया मे मिले। वह पूर्ण स्वस्थ हो चुकी थी और वह तथा उसका पति दुबोस्सरी जल-विद्युत केन्द्र के निर्माण-स्थल पर काम कर रहे थे। मुझे विश्वास है कि उसको स्वास्थ्य लाभ करानेवाली चीजें, दवाइयाँ और दक्षिणी सेनेटोरियम नही थे। अन्या जीत हासिल कर सकी तो अपने हँसमुखपन को सुरक्षित रखकर, काम पर बने रहकर, जीवन पूर्णतया भोग कर और स्वयं अपने अन्दर न सिमट कर। मुझे हाल में बताया गया कि अन्या लोश्कारयोवा के चार स्वस्थ बच्चे हैं और वह मजदूरों के एक होस्टल की मैनेजर है। मेरा ख़याल है, उसने युवकों के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

एक अन्य निर्माण-स्थल पर मैंने एक सुन्दर, भूरी आँखोंवाले युवक, पाइप-फिटर इवान रूम्यानत्सेव से परिचय प्राप्त किया जो बड़ी सूझ-बूझवाला, बडा बुद्धिसम्पन्न और अपने काम का उस्ताद था। वह शायद बडी छोटी उम्र में काम करने लगा था। उसके पिता युद्ध में खेत रहे थे और लड़के ने फैसला किया कि माँ को उसकी सहायता की आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा मे कमी से जो कसर रह गयी थी, वह उसने तीव्र दिमाग, अनुभव और प्रतिभा से पूरी कर ली। उसने यारोस्लावल, गोर्की और चिरचिक में बड़े-बड़े संस्थान निर्मित करने मे सहायता की थी और उस समय वह जापोरोझस्ट्रोय के निर्माण-स्थल पर काम कर रहा था। पाइप डालने का नया तरीका यानी पहले से तैयार बड़ी इकाई के रूप में डालने की विधि का उसी ने आविष्कार किया था।

उसने मुझे बताया, "हम पहले उनको (पाइपों को) ज़मीन पर जोडकर रखते हैं। हम उनको बडी इकाइयो में असेम्बिल करते है। इस तरह काम अधिक आसानी और सुविधापूर्वक होता, और निश्चय ही तेज़ी से भी। हम इन बडी इकाइयों को उठाने के लिए क्रेन या विंच का उपयोग करते है और हमें उनको एक सम्पूर्ण इकाई मे जोड देने-भर का काम करना पड़ता है। इसमें उलझी हुई कोई बात नही है!"

"क्या इसमे कोई खतरा नहीं है? काम करने वालो के लिए क्या यह खतरनाक नही हो सकता?"

वह मुसकराया।

"आप काम देखकर डर रहे है और फिर आप बिल्ले लगाने मे जुट जाते हैं। लियोनिद इल्यीच, आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नही; हमने सारे हिसाब-

किताव पहले ही लगा लिये थे और इंजीनियर लोग हर चीज़ की जाँच कर चुके हैं।"

हर लौह-इस्पात कारखाने मे पाइपलाइनों की भूलभुलैयाँ पड़ी होती है; उनसे सभी विभाग जुड़ते है और सभी दिशाओं में वे एक-दूसरे को काटते है, जिससे काम के एक विशेप हिस्से में विशेप प्रयत्न की दरकार होती है। मैंने ढाँचा खड़ा करने वाले विभाग के पार्टी-ब्यूरो के सदस्यों को सलाह दी कि वे रूम्यानत्सेव को एक खुली पार्टी मीटिंग मे बोलने को कहें। इस सभा की रिपोर्ट स्थानीय अखबार **स्त्रोयतल**(निर्माण मज़दूर)मे छपी और उसके बाद **प्राव्दा** ने एक विस्तृत लेख छापा जिसका शीर्षक था, 'सभी निर्माण-स्थलों को इवान रूम्यानत्सेव की विधि का उपयोग करना चाहिए।" सचमुच यह विधि व्यापक रूप से देश-भर मे इस्तेमाल की गयी।

इवान अलेक्जेंदरोविच रूम्यानत्सेव ने आगे चलकर वारसा मे संस्कृति-विज्ञान सदन के निर्माण मे काम किया और फिर भारत में भिलाई लौह-इस्पात कारखाने के निर्माण मे सहायता की ...।

इस तरह के अनगिनत लोग मुझे मिले और उन सबको गिनाया नही जा सकता, इसलिए जिन साथियों के नाम मैं यहाँ नही ले सका हूँ, वे बुरा न मानें। मैं उन्हें भूला नहीं हूँ।

□□

मैं यहाँ नोट करना चाहूँगा कि लोगों को, विशेपकर सुयोग्य लोगो को, याद रखना, सामान्यतः एक पार्टी-कार्यकर्त्ता का नैतिक कर्त्तव्य और पेशागत आवश्यकता है। ऐसे सम्पर्क हमेशा आवश्यक होते हैं क्यों इससे पार्टी-कार्यकर्त्ता समृद्ध होते है, अमल के साथ उसकी कड़ियाँ सुदृढ होती हैं और लोगो के इरादों, हितों और आवश्यकताओ की साक्षात जानकारी प्राप्त करने मे उसे सहायता मिलती है। *अन्तिम वात यह है कि किसी सुयोग्य व्यक्ति* को, किसी औद्योगिक मजदूर, सामूहिक खेतिहर, निर्माणकर्त्ता, कृपि-विशेपज्ञ, कलाकार, पत्रकार या वैज्ञानिक को, खोज लेना स्वयं एक आनन्द का विषय है। ऐसी वातो मे समय व्यय करने मे मैंने कभी कोई गुरेज नहीं किया और इसके अतिरिक्त यह भी सौभाग्य की बात है कि पार्टी के और राजनीतिक काम की प्रकृति के कारण ऐसी *खोज मे बढावा मिलता है।*

जापोरोझ्ये में ब्यूरो की ही एक बैठक में हमें क्षेत्रीय कमेटी के हर सचिव को अलग-अलग कर्त्तव्य वितरित किये थे। जो कर्त्तव्य मेरे जिम्मे पड़े, वे मैं यहाँ गिनाता हूँ: पूरे क्षेत्र का सर्वांग मार्गदर्शन; ब्यूरो में विचार के लिए प्रश्नों को तैयार करना; कृषि; प्रचार-अभियान; और क्षेत्रीय योजना आयोग, तरुण कम्युनिस्ट लीग की क्षेत्रीय कमेटी, राज्य सुरक्षा और आन्तरिक मामलों के मंत्रालयों के स्थानीय विभागों और अभियोक्ता के कार्यालय तथा कर्मचारी-नियुक्ति के मामलों में निर्देश देना। इन सभी कामों में बल था व्यक्तियों पर, जिन्हें आप समझें और वे आपको समझें।

प्रथम सचिव के कामों में कोई काम गौण नहीं होता। उदाहरण के लिए, आम जनता से मिलने का समय: निश्चय ही वह महत्त्वपूर्ण है। कुछ समय पहले जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाने का एक पुराना कर्मचारी, जो खुदाई मशीन का चालक था, टेलीविजन पर आया और उसने निम्नलिखित घटना सुनायी। उसकी पत्नी ने चार सदस्यों के परिवार के सारे राशनकार्ड खो दिये थे, इसलिए वह क्षेत्रीय पार्टी के प्रथम सचिव के सार्वजनिक भेंट-वार्त्ता के समय में उनसे मिलने गयी और वह जिस सहायता के लिए गयी थी, वह उसको प्राप्त हुई। मैं इस घटना को कभी का भूल चुका था, मगर इस मजदूर को वह याद थी। उसके लिए वह अत्यन्त जीवन्त महत्व की बात थी।

राशनकार्ड सम्बन्धी यह घटना उस कठिन समय का प्रतीक है जिसमें हमें उन दिनों रहना पड़ रहा था। युद्ध से उत्पन्न विनाश की स्थिति में अनाज की फसल उगाने, उसका भंडार जमा करने, और खण्डहर फार्मों में पशुपालन को लगभग शून्य से शुरू करने के लिए बड़े प्रयत्न करने पड़ रहे थे। मजदूरों की कैन्टीन को चालू रखने, और किण्डरगार्टेनों और अस्पतालों के लिए भोजन की व्यवस्था करने में, जिनका निर्माण भी फिर से करना पड़ा था, हमें जबर्दस्त श्रम लगाना पड़ रहा था। लाखों लोगों के लिए आवास की व्यवस्था करना अत्यन्त कठिन था। कुज़्मिन लगभग हर मीटिंग में कहा करते थे, "जब तक हम लोग रिहाइश का इन्तज़ाम नहीं करते तब तक हम काम पूरा नहीं कर सकते" और निश्चय ही, वे ठीक कहते थे। कुछ आगे बढ़कर मैं यह कहना चाहूँगा कि जापोरोझ्स्त्रोय ही था कि जहाँ पुनर्निर्माण के काल में मकान-निर्माण की तीव्रगामी विधि निकाली गयी जिससे मकान बनाने का समय दो-तिहाई रह गया। उन दिनों, आज की स्थिति के विपरीत, मकान किसी स्टैंडर्ड नमूने के अनुसार नहीं बन रहे थे, बल्कि खण्डहर मकान विभिन्न हद तक नष्ट होने और विभिन्न आकार के होने कारण उनको उसी हिसाब से बनाना पड़ता था। 1947 में 55 हज़ार वर्ग-मीटर रिहाइशी जगह तैयार की गयी जो उन दिनों जबर्दस्त सफलता थी...।

अभी तक मैंने मुख्यतया नीपर जल-विद्युत केन्द्र और जापोरोझ्ये लौह-इस्पात

कारखाने का हवाला दिया है, किन्तु इसका यह अर्थ नही कि किसी अन्य परियोजना पर शहर और क्षेत्रीय कमेटियाँ लगातार ध्यान नही दे रही थी। उदाहरणार्थ, कम्यूनार्ड कम्बाइन वर्क्स पुन: स्थापित किया गया। शुरू मे जब वह अर्ध-ध्वस्त इमारत मे था तब उसमें हार्वेस्टर-स्टैकर बनते थे और इसके अतिरिक्त सामूहिक खेतिहरों को ऐसी कम्बाइन मशीनों की मरम्मत मे सहायता देता जो साबुत बच गये थे और और उनके लिए हैडर सप्लाई करता था जो उन दिनों हमारे लिए बड़े महत्व के थे। 1946 के हेमन्त काल मे क्षेत्रीय कमेटी के ब्यूरो ने माँग की कि नयी और सुधारी हुई मशीनो का उत्पादन तेज किया जाये। 1947 के वसन्त काल में ब्यूरो ने एस-6 कम्बाइनो का सीरियल उत्पादन करने के प्रश्न पर विचार किया और अक्तूबर में क्षेत्रीय कमेटी के पूर्णाधिवेशन में ही यह बताया जा सका कि वर्ष की दूसरी तिमाही की तुलना मे तीसरी तिमाही के अन्दर उत्पादन 3-3 गुना बढ गया था।

जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं और जो कुछ किया गया है उसको स्मरण करते है, तो हम अक्सर उस अनुभव में से ऐसी बातें निकालते हैं जो आज के लिए और भविष्य के लिए भी उपयोगी होती है। उन कठिन और तनावपूर्ण दिनों मे मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से उस विधि की सगति देखी जो अब हमारे लिए परम्परागत हो गयी है: क्षेत्रीय कमेटी का ब्यूरो जिन जटिल समस्याओं को हाथ मे ले चुकता या, उन पर लगातार, बार-बार और बड़ी सख्ती से विचार किया करता था। अगर एक काम निश्चित किया गया तो उसको पूरा कराने का काम बिलकुल अन्त तक देखना होगा। समय बीतते-बीतते मुझे इस नीति के सही होने पर और अधिक विश्वास बढता गया है: उन्नत संगठन, अनुशासन और ज़िम्मेदारी को, जिस ढंग से फैसलों की समीक्षा की जाती है उससे अलहदा नही किया जा सकता। अगर हमारे आर्थिक नेताओं ने स्वयं अपने द्वारा किये गये फैसलों को पूरी तरह लागू किया गया होता तो अनेक कमज़ोरियाँ अतीत की बात हो गयी होतीं।

एक समय था जब ज़ापोरोझ्ये में स्थानीय इमारती सामान की सख्त कमी थी जिस पर नीपर जल-विद्युत केन्द्र और ज़ापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाने तथा कम्यूनार्ड कारखाने के अतिरिक्त पूरे क्षेत्र मे मकानों के निर्माण का काम भी निर्भर करता था। जैसा कि ऐसे मामलों मे अक्सर होता है, मैं अक्सर वस्तुगत कठिनाइयों का हवाला सुनता था और तमाम तरह के अनुमानित वक्तव्य और बहाने दिये जाते थे जिनसे ऐसा लगता था कि कुछ नही किया जा सकता, मगर इस प्रश्न पर मार्च 1947 मे ब्यूरो में विचार हुआ, मई में फिर विचार हुआ, और हर रोज काम की परीक्षा करने का काम कभी नहीं छोड़ा गया और उस वर्ष के उत्तरार्द्ध में "ईंट" शब्द हमारी बैठकों की कार्यवाही मे कभी प्रकट नहीं हुआ।

समस्या हल हो चुकी थी।

हमें ऐसे प्रश्न हल करने पड़ते थे जिनका सम्बन्ध अर्थतंत्र या रोज की समस्याओं से नही था, मगर वे महत्वपूर्ण थे क्योंकि उनसे जन-जीवन पर प्रभाव पड़ता था। सुरक्षा अधिकारी ऐसे गद्दारों का पर्दाफाश करने और खोजने मे लगे थे जिन्होने फासिस्टों से सहयोग किया, उनकी पुलिस और आतंक दलों मे काम किया था और अब हर सम्भव तरीक़े से छिप गये थे। उन्हें अब दण्ड से बचने नही दिया जा सकता था, मगर यह काम अत्यन्त सोच-विचार और अप्रत्यक्ष रीति से किया जाना था ताकि किसी संदेह के कारण ईमानदार लोगों को अपमानित होने से बचाया जा सके। इस काम मे पार्टी का भाग लेना आवश्यक था और मुझे इस बात पर विशेष बल देना पड़ रहा था कि ऐसे सभी लोगो पर गद्दारी का संदेह न किया जाये जिन्होंने अपनी इच्छा के विपरीत अपने को शत्रु-अधिकृत क्षेत्र मे पाया।

दूसरी ओर, यह नोट किया जाना चाहिए कि युद्धोत्तर काल मे अरिरिक्त जागरूकता की आवश्यकता थी। विभिन्न प्रकार की आपात स्थिति के बिना कोई ही दिन बीतता था; सशस्त्र गिरोह तक प्रकट हो जाते थे और कभी-कभी रात मे गोली चलने की आवाज सुनायी देती थी। मैंने सड़कें के रास्ते बडी यात्राएँ की, कभी-कभी रात में और अकेले, खुद अपनी गाड़ी चलाते हुए। दुर्भाग्य ही होता कि सारे युद्ध से विजयी निकलने के बाद कही किसी छुटपुट गोली का शिकार हो जाता। मगर साफ बात यह है कि उस समय स्वयं अपनी सुरक्षा की बात सोचने के लिए समय ही कहाँ था; हमें जिस बात की चिन्ता थी वह सम्पूर्ण जनता की सुरक्षा और शान्तिपूर्ण जीवन आवश्वस्त करने की आवश्यकता थी।

फ़रवरी 1947 मे क्षेत्रीय कमेटी के ब्यूरो ने अपराध के खिलाफ लडने के लिए क़दम उठाने के बारे मे विशेष फ़ैसला स्वीकार किया। मुझे याद है, यह कहा गया था कि हमे संघर्ष के इस मोर्चे पर कम्युनिस्टों और तरुण कम्युनिस्टों को भेजना चाहिए, कानून-व्यवस्था लागू करनेवाले संगठनों को सशक्त बनाना चाहिए और उनको ढुलमुलयकीन लोगो से मुक्त करना चाहिए। कहा गया था : "जिस किसी ने अनैतिक आचरण किया है, उसको बदला जाना चाहिए। उसकी जगह खाली रहे, यह बेहतर है। फिर कम-से-कम जनता यह देख सकेगी कि जगह खाली है और कोई सुयोग्य कर्मी वहाँ भेजा जाना चाहिए। या फिर पूरे कार्यदल को ऐसे व्यक्ति की पुनर्शिक्षा के लिए जी-जान से जुट जाना चाहिए।"

मिलीशिया का काम बडे महत्व का था। जापोरोझ्ये मे जहाँ न सडको पर रोशनी का प्रबन्ध था और न शहर के अन्दर यातायात का, तमाम तरह के लोग आ रहे थे, और मुझे वह समय याद है जब रात की पाली के मार्ग में सबसे बडी बाधा थी लूटपाट और गुण्डागर्दी। मिलीशिया की प्रतिष्ठा बढाना आवश्यक था;

और उसको मजबूत भी किया जाना था, फिर भी (मुझे यह बात याद है) हमारी मिलीशिया के लोगों की पोशाकें बड़ी ख़राब दिखायी देती थीं। एक अधिवेशन में मैंने कहा था, "हमें मिलीशिया के लोगों को उचित वर्दी देने से काम शुरू करना चाहिए ताकि लोगों को दूर से ही वे न्याय-व्यवस्था के संरक्षक जान पड़ें।"

अनेक अन्य समस्याओं की चर्चा की जा सकती है—उन समस्याओं की जो विराट निर्माण-स्थलों के प्रश्नों की तुलना में कम महत्व की जान पड़ सकती हैं। फिर भी वे सब हमारे जीवन के मानचित्र का अभिन्न अंश और समय दिये जाने तथा सही ढंग से हल किये जाने की माँग करती थीं। निश्चय ही, अगर क्षेत्रीय कमेटी के अन्य सचिवों में जिम्मेदारियाँ न बाँटी गयी होतीं, क्षेत्रीय कमेटी के सभी विभागों और कर्मचारियों को सक्रिय न बनाया गया होता और अन्तिम बात यह कि अगर ऐसी सभी प्रश्नों के अधिकांश भागों को हमारी सरकार के और आर्थिक संगठनों ने हाथ मे लिया और हल न किया होता, तो मैं इतनी सारी ज़िम्मेदारियों को कैसे संभाल पाता। यहाँ मैं एक पार्टी-नेता के महत्वपूर्ण पहलू पर बल देना चाहूँगा : उसे किसी अन्य कार्यकर्ता की जगह नहीं लेनी चाहिए, बल्कि उनके अन्दर एक सहयोगी कार्यकर्त्ता जगाना चाहिए, उनमें आत्म-विश्वास पैदा करना चाहिए और आश्वस्त करना चाहिए कि सारे फैसले सामूहिक रूप से लिये जायँ।

जापोरोझ्ये में मुझे जिन लोगों के साथ काम करना पड़ा, वे प्रधानतः सुयोग्य, ज्ञान-सम्पन्न और कुशल थे। मैं उल्लेख करना चाहूँगा कि क्षेत्रीय कमेटी का द्वितीय सचिव-पद आन्द्रेइ पावलोविच किरीलेंको संभाले हुए थे। जी० वी० येन्यूतिन और पी० एस० रेज़निक भी सचिव थे और शहर कमेटी के द्वितीय सचिव एन० पी० मोइसेयेंको थे। इस प्रकार मैं ऐसे लोगों के साथ काम कर रहा था जिन पर मैं सचमुच भरोसा कर सकता था...।

1947 के वसन्त के प्रारम्भ से मैं अपनी ड्यूटी के कारण लगभग हर दूसरे दिन ज़ापोरोझस्त्रोय जाने लगा और ग्रीष्मकाल मे मैंने अपने दफ़्तर की भी वहाँ बदली करा ली। उस समय निर्माणाधीन ताप और विद्युत केन्द्र तथा 3 नं० की धमन-भट्ठी के बीच एक उपकेन्द्र था जिसका एक विस्फोट के बाद आधा भाग ही खड़ा रह गया था। वहाँ मेरे लिए एक कमरा निश्चित किया गया जिसको एक डेस्क, एक टेलीफ़ोन, कुछ कुर्सियों और एक चारपाई से लैस कर दिया गया ताकि मुझे रात-पाली में रुकने मे सुविधा हो, जो अकसर ही होने लगा था।

मुझे निर्माण-कार्य के लगभग सभी प्रश्न हाथ में लेने पड़ते थे। ज़माना मुश्किल था और हर दिन नयी समस्याएँ खड़ी हो जाती थीं। मुझे दो पालियों में काम करने का फ़ैसला किया जाना याद आता है ताकि निर्माण-कार्य तेज़ हो सके और योजना पूरी की जा सके। जाहिर है, रात को काम रोशनी बिना नही हो सकता था और उस समय क्षेत्र के अन्दर बल्ब पाना लगभग असंभव था। मैंने इस

मामले में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केन्द्रीय कमेटी के पास कामरेड जदानोव को पत्र लिखने का फैसला किया। तीन दिनों के भीतर हमें न सिर्फ सकारात्मक उत्तर मिला, बल्कि बल्व भी आ पहुँचे। अब दूसरी पाली में काम शुरू करना और अनेक लोगों के काम की स्थिति सुधारना संभव था। इससे स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय कमेटी हर ऐसी प्रार्थना पर, छोटी-सी भी प्रार्थना पर, जिसका विशालकाय उद्योग के पुनर्निर्माण पर कोई प्रभाव पड़ता, कितनी चिन्ता करती थी।

फिर भी कभी-कभी निर्माण-कार्य से मेरा ध्यान हट जाता था। मुझे बुआई के मौसम की एक घटना याद आती है जब वेर्दियान्स्क से जल्दी में लौटते हुए मुझे रात एक खेत में, एक घासफूस की झोंपड़ी में बितानी पड़ी जिसको पिछले वर्ष बनाया गया था। सुबह सात बजे के लगभग मैं पोलगाय जिला दफ़्तर में गया और जिला पार्टी कमेटी के सचिव देरस्त्युक से बातचीत की। जब मैंने बुआई की प्रगति और खेती की मशीनों की हालत के बारे में पूछा तो मैंने देखा कि वे बहुत बेचैन हो उठे थे।

"क्या बात है, अलेक्सांदर सावविच," मैंने पूछा, "साफ-साफ बताओ कि मामला क्या है?"

"मेरा हाल ठीक है...आपने आज सुबह सुना?"

"नहीं, क्या कोई नयी बात हो गयी?"

"प्रावदा के आज के सम्पादकीय में हमें आड़े हाथों लिया गया है। मुद्दा है जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारखाने की पुनर्स्थापना की गति धीमी होने का। शब्द बड़े सख़्त हैं।"

हम एक क्षण खामोश रहे।

"तो," मैंने कहा, "इसका अर्थ है कि स्तालिन का फोन आयेगा। मुझे शीघ्र शहर लौट जाना चाहिए।"

सचमुच, उस रात मुझे स्तालिन ने बुलाया और हमारी जो बातचीत हुई, वह गंभीर थी। हम जो कुछ उपलब्ध कर सके थे और जिसको हाल में अच्छा काम समझा जा रहा था, वह लगभग उलटा सिद्ध हुआ। परिस्थितियाँ बदल गयीं—हमारे क्षेत्र में नहीं, देश में और दुनिया में। जिस कारखाने को चद्दरी इस्पात तैयार करना था, उस पूरे कारख़ाने के चालू करने की तारीख और पीछे लाकर इसी वर्ष के हेमन्त काल तक कर दी गयी थी और हमें हिदायत दी गयी थी कि काम की गति तेज़ की जाये। मैं पहले ही उल्लेख कर चुका हूँ कि यह स्थिति "शीतयुद्ध" के प्रारंभ के कारण पैदा हुई थी।

16 मार्च 1947 को सोवियत संघ की मंत्रि-परिषद ने लक्ष्य-पूर्ति की नयी अवधियों के अध्यादेश जारी किये; इसके बाद साज-सामान को स्थापित करने के

विषय में एक और अध्यादेश जारी किया गया, और 8 अप्रैल को केन्द्रीय कमेटी ने निर्माण-स्थलों की पार्टी कमेटियों के बारे में, यानी कि जिस रीति से उनकी पार्टी सम्बन्धी और राजनीतिक प्रकृति कायम रखी जा रही थी, उसके विषय मे एक नया प्रस्ताव पास किया। एक महीने के अन्दर देश के सर्वोच्च पार्टी और राजकीय संगठनों ने हमारे स्थानीय मामलों पर तीन बार फैसले दिये।

केंद्रीय कमेटी के प्रस्ताव में उन जटिल परिस्थितियों के अन्दर जो तकाजे थे, उनको पूरा कर पाने मे विफल रहने के लिए ज़ापोरोभ्रुस्ट्रोय की पार्टी कमेटी की कडी आलोचना की। हालांकि मैंने पिछले वर्ष के अन्त मे ही कार्यभार संभाला था और मैं दावा कर सकता था कि इस सबका दोप मुझ पर नही है, फिर भी मुझे ज़िम्मेदारी का पूरा बोझ स्वीकार करना पड़ा। क्षेत्रीय कमेटी के प्रथम सचिव के काम का यह एक और पहलू है: एक नेता और कम्युनिस्ट की हैसियत से वह किसी घटना-विशेष के समय वहाँ मौजूद न होने का बहाना नही बना सकता, किसी बात से अनजान होने की दलील नहीं दे सकता या दावा नही कर सकता कि उसकी जिम्मेदारी दूसरे साथियों पर है। क्षेत्रीय पार्टी संगठन का नेतृत्व करने के क्षण से ही प्रथम सचिव को हर बात की जिम्मेदारी ढोनी पड़ती है।

केंद्रीय कमेटी के प्रस्ताव के जारी होने के तीसरे ही दिन ज़ापोरोभ्रुस्ट्रोय के पार्टी सदस्यों की बैठक हुई। कार्यवाही बड़ी साफगोई से चली, फिर चाहे किसी भी व्यक्ति का प्रश्न क्यों न हो। मेरे भाषण मे, जिसमे निर्माण-स्थल के मामलों का आलोचनात्मक सिंहावलोकन था, उक्रइनी कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की शहर और क्षेत्रीय कमेटियो के काम की कमज़ोरियों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया।

केंद्रीय कमेटी के प्रश्न को हम 28 अप्रैल को पार्टी की ज़ापोरोभ्ये शहर कमेटी के पूर्णाधिवेशन मे भी ले गये। जब निर्माण मजदूर और स्थापना के बाद उसको चलाने की ज़िम्मेदारी संभालने जाने वाले लोग पूर्णाधिवेशन मे आये तो वे नयी योजनाओं के मसौदे साथ लाये और एक नया कार्यक्रम लाये ताकि विचार-विनिमय ठोस रीति से हो सके। उदाहरण के लिए, कुज़मिन अपने साथ निम्न-लिखित हिसाब-किताब लाये: जो कुछ हमने मार्च में उपलब्ध किया था, अगर हम उस स्तर पर रहे तो धमन-भट्टी के चलने मे चार महीने और लगेंगे, स्लैबिंग मिल में चार महीने तथा कोल्ड-रोलिंग शाप के चलने में आठ महीने की और आवश्यकता होगी।

"मार्च योजना के पूरी हो जाने मात्र से हम चैन नहीं पा सकते," वर्क्स के डायरेक्टर ने कहा, "अप्रैल के महीने तक मे काम की रफ़्तार कम-से-कम दूनी करनी पड़ेगी।"

श्रम-उत्पादकता भी बढ़ानी होगी।

"आज निर्माण-स्थल पर तीस हज़ार मजदूर जुटे हुए हैं," शहर कमेटी के पूर्णाधिवेशन मे कहा गया। "फिर भी कुछ हिस्सों मे मजदूरो की कमी है। अगर हम श्रम-उत्पादकता 20 प्रतिशत बढायें तो वह ऐसे छह हज़ार मजदूरों के बराबर होगा जिनकी हमें कमी है।"

अब समय आ पहुँचा था जब हमारे हिसाब-किताब वर्षों की रफ़्तार से नही, महीनों और दिनों तक से नापे जायेंगे। यह आमतौर पर माना जा रहा था कि अपनी योजनाओ मे हम कर्तव्यबद्ध थे, कि हम जो कुछ "सम्भव" है, उससे नही, जो कुछ "आवश्यक" है, उसको ध्यान में रखकर आगे बढेंगे। जब यह घोषित किया गया कि हमें 10 लाख रूबल रोज के काम को खडा करना और निर्मित करना पड़ेगा, तब सदन में शोर-गुल मच गया क्योंकि बहुत लोगों को अभी भी शक था कि वे इसको पूरा कर सकेंगे (फिर भी मई के अन्त तक वह लक्ष्य उपलब्ध किया जा चुका था और हेमन्त में जब रोलिंग मिल काम करने लगी तो प्रतिदिन के काम का मूल्य बीस लाख रूबल तक पहुँच चुका था)।

मैं अधिवेशन के अन्त मे मंच पर आया। मैंने मुख्यत: यह कहा कि निर्माण-स्थल पर उच्चस्तरीय गतिशीलता, तूफानी कुशलता, आर्थिक और आत्मिक अनुशासन *की स्थिति पैदा करनी पड़ेगी। ये ही मुख्य और बुनियादी परिस्थितियाँ थी* जिन पर हर बात निर्भर थी। उस समय तक मेरे पास काफी तथ्य और मूल्यांकन थे जिससे मैं विश्वसनीय रीति से अपनी कमज़ोरियाँ और अपनी संभावनाएँ बता सकता था।

मैंने श्रोताओं को निम्नलिखित उदाहरण याद दिलाया: एक बड़ी शाप में सारी खिड़कियों और रोशनियों पर कांच लगाया गया था, मगर बाद में पास ही मे कुछ विस्फोट किये गये। बहरहाल, सभी शीशे टूट गये। सबक निकलता है कि हम मजदूरो को बचत करने का आवाहन कर रहे थे, जबकि हमने स्वयं इतना सारा कांच बरबाद कर दिया। काम करने का यह तरीका नही हो सकता। जापोरोभस्ट्रोय की पार्टी कमेटी को काम में ढील के लिए प्रबंध कर्मचारियो में से सभी पार्टी-सदस्यों को अनुशासित करना चाहिए, फिर चाहे उनका ओहदा कोई भी क्यों न हो। मैंने उस पर विशेष बल दिया, मगर मैंने निम्नलिखित बात जोडना भी आवश्यक समझा:

"अगर हम निष्क्रिय रहते है और गैर-ज़िम्मेदारी को क्षमा कर देते है तो यह बड़ा खतरनाक है। किन्तु मैं पार्टी कमेटियों को यह आह्वान नहीं कर रहा हूँ कि वे किसी को पार्टी से निकाल दें और निंदा-डाँट-फटकार की बाढ़ ले आयें। इससे भी कुछ नही बनेगा।"

अति के दूसरे छोर पर पहुँच जाने के खिलाफ भी साथियो को चेतावनी देना महत्वपूर्ण है...।

□ □

पहले ही दिन से हमने काडर के प्रति सद्भाव का रुख अपनाने के लिए काम किया और हम सद्भावना के वातावरण को जो अभी ही हमारे संगठन मे सुस्थापित हो चुका था, बडा मूल्यवान मानते थे। मैंने नेतृत्व के अभद्र, डाँट-फटकार वाले और जिसको "सख्त हाथों" से काम लेना कहा जाता है ऐसे, तौर-तरीकों को कभी स्वीकार नहीं किया। जब मनुष्य डरा हुआ होता है तो वह हर जिम्मेदारी से बचता है। हमें पहलकदमी पर बंधन लगाने की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि उसके विपरीत, अत्यन्त व्यापक रूप से आधारित पहलकदमी को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता थी। नवोन्मेष के बिना और सक्रिय खोज के बिना हम उन तनावपूर्ण परिस्थितियों में कुछ भी उपलब्ध नहीं कर सकते थे। जब परिस्थितियाँ शांत हों तब शोर-गुल की आवश्यकता और भी कम होती है।

मैं निम्नलिखित उदाहरण दूँगा : हम बीके-151 क्रेन से ढाँचा खड़ा करने का काम कर रहे थे जिसे उस समय काफी सशक्त माना जाता था। एक समय उस पर हद से अधिक बोझ लदा था ताकि काम तेज हो सके; वह उलट गयी और इस तरह बेकाम हो गयी। जब मुझे दुर्घटना की ख़बर दी गयी तो मैं यथास्थल दौड़ा गया। वहाँ मैंने काफी शोर-गुल और कहा-सुनी देखी और क्रेन-चालक पास मे पीला चेहरा लिये खड़ा था। कोटलोनादज़ोर के अधिकारी वहाँ आ चुके थे और जाँच संगठन के प्रतिनिधि भी। मेरा ख़याल है, सिर्फ कुज़मिन शांत थे।

"क्या किसी को चोट लगी है ?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने जवाब दिया। "क्रेन बड़ी सफाई से गिर गयी। अगर हमने विशेष हिसाब-किताब लगाये होते तब भी हम अपने यहाँ की तंग जगह में इससे बेहतर ढंग से नहीं गिरा सकते थे।"

शीघ्र ही मैंने देखा कि क्रेन ज़मीन के एक खाली हिस्से में गिरी थी जिसमे न कोई मरा और न कोई चीज़ नष्ट हुई, फिर भी शीघ्र ही मैंने बदहवासी की चीख़-पुकार सुनी, जैसे कि "तोड़-फोड़ कर दी ! क्रेन-चालक को अदालत में पेश किया जाना चाहिए ! और काम के सुपरिंटेंडेंट को भी !"

मैं चाहता हूँ कि यहाँ लोग मुझे ठीक-ठीक समझें : असली बदमाशों और मुजरिमों के लिए, जिनके अपराध पूरी तरह सिद्ध हो जायें, सख़्त और, इससे भी आवश्यक है कि टाली न जा सकने वाली सज़ा देने का हामी हूँ। मगर इस मामले

मे जब मैंने देखा कि कोई बदनीयत नही थी, सिर्फ़ असावधानी थी, तो मैंने माँग की कि बयानों का स्वर बदला जाये। डर और घबराहट का वातावरण क्यों पैदा किया जाये? इसके विपरीत, इस दुर्घटना पर खेद की भावना की अपील कर, हमें लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे स्थिति का शीघ्र और मगत हल खोजें।

हल सचमुच पा लिया गया: निर्माण मज़दूरों ने गाई डेरिक मशीनों (जो चीज़ें उठाने के काम आती है) की व्यवस्था का उपयोग किया जिससे ढाँचा खड़ा करने का काम जारी रहा और काम पिछड़ने नहीं पाया। अगर सख्त दंड का उपयोग किया गया होता तो उससे लोगों को, निर्माण-कार्य को और जिस लक्ष्य के लिए हम सेवा कर रहे थे उसको क्या लाभ होता? मान लीजिये कि दंड अन्य क्रेन-चालको और सुपरिंटेंडेंटों के लिए लापरवाही रोकने वाला सिद्ध होता, तो क्या होता? अगर हमारे सर्वश्रेष्ठ मज़दूरो और नवोन्मेषक इंजीनियरों ने हिदायतो के हर वाक्य का पालन करते हुए "नियम के अनुसार" काम किया होता तो हम निर्माण-कार्य की पूर्ति के सख्त लक्ष्य कभी पूरे नही कर पाते।

तब तक न तो ध्वस्त फैक्टरियों आदि को पुर्नस्थापित करने के विज्ञान का अस्तित्व था, न ही कोई पाठ्य-पुस्तक थी जिससे हमे यह पता चलता कि जिन ढाँचो को धूल-धूसरित कर दिया गया हो या विस्फोट से उड़ा दिया गया हो, उनको राख मे से कैसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। हर काम पहली बार किया जाता था और नीव से निर्मित किया जाता था। काम स्वयं बड़ा साहसपूर्ण था, और यह महत्वपूर्ण था कि उन्मेषक भावना को विलीन न होने दिया जाये। साहसपूर्वक पहल करने की भावना सभी के अन्दर पुष्ट की जानी थी: मज़दूरों में, इंजीनियरों में और पार्टी कार्यकर्ताओं में। उस उमस-भरी गर्मी के मौसम में—जब उमस वास्तविक भी थी और मुहावरे के रूप में भी—निर्माण-कार्य के सभी क्षेत्रों में स्वीकृत प्रतिमानो को ताक पर रख दिया गया था और परिणामतः, खतरे उठाने पड़ रहे थे। किन्तु, ऐसे खतरे उठाना सुलभ ज्ञान, अनुभव और सावधानी से किये गये हिसाब-किताब के आधार पर संगत और विवेकपूर्ण था।

उदाहरण के लिए, एक वक़्त आया जब 82 टन भारी रोलिंग मिल बेड को रेलवे प्लेटफॉर्म पर गाडी से उतारना था। शीट रोलिंग मिल के पास सुलभ क्रेन की क्षमता 30 टन ही थी। हिदायतों के अनुसार, और सशक्त क्रेन चाहिए थी और टीम काम करने से इनकार कर देती तो उससे आसान कोई बात नही होती: वे माँग कर सकते थे कि आवश्यक क्रेन मँगवायी जाये, तब तक वे इतज़ार करेंगे। किन्तु उन्होंने भिन्न रीति से काम किया।

एक पुराने फोरमैन रिगर, अलेक्सांदर निकोलायेविच चेपिगा ने, जो बोलते बहुत कम थे और शक्ल-सूरत देखकर उनसे डर लगता था, रेलवे वैगन का चक्कर

काटा, विराटकाय यंत्र का निरीक्षण किया और फिर उस नीव को देखा जिस पर उसको रखा जाना था। उन्होंने कई हिसाब लगाये, फिर अपनी टीम से सलाह की, इंजीनियरों के साथ बात कर अपनी योजना को आँका, और इस सबका अन्त एक जादूगरी में हुआ। रेलवे गाडी और नीव के स्थल तक रेलवे स्लीपर डाले गये। फिर यत्र के शिखर पर एक हुक लगाया गया और चेपिगा के हुक्म से क्रेन के ज़रिये (उसी क्रेन के ज़रिये जिसकी क्षमता कुल 30 टन ही थी) उस हिस्से को स्लीपर पर रख दिया गया। उसके बाद दूसरे छोर मे हुक लगाया गया और उसको नीव की तरफ खींचा गया। इस प्रकार उस भारी वेड को ठीक स्थिति मे रख दिया गया और इसमे ट्रिक यह थी कि मुख्य भार सारे समय एक सुदृढ़ आधार पर रखा रहा। यह सचमुच नयी सूझ-बूझ का शानदार नमूना था जो एक प्रतिभाशाली मजदूर की साहसपूर्ण पहल और ठीक-ठीक हिसाब-किताब पर आधारित था।

एक रोलिंग मिल के शीयर फ्रेम को उठाने के लिए भी इसी उपाय का उपयोग किया गया, मगर इस बार बोझ 130 टन था। फिर भी काम का समय उन्नीसवाँ हिस्सा रह गया था! ताप और विद्युत केंद्र के पुनर्निर्माण में भी ऐसी ही घटना हुई जब भारी बायलर के शैल को काफी ऊँचाई तक उठना पड़ा। वह बड़ी जिम्मेदारी का काम था और आवश्यक क्रेनें सुलभ नहीं थी, किन्तु एक इंजीनियर ने एक छोटी क्रेन और स्वयं इमारत के गर्डरों की सहायता से संयुक्त ढुलाई करने का प्रस्ताव रखा। सोयूज़प्रोम्मोन्टाझ के विशेषज्ञों ने खतरे की घंटी बजायी, मगर जब वे वहाँ आये तब तक शैल अपनी जगह पर आ चुका था। कई दिनों के बजाय 32 मिनट में काम हो गया।

एक अवसर पर मैं स्तालिनग्राद के मज़दूरों के एक समूह से मिला। "हलो, रक्षक साथियो," मैंने उनका अभिनन्दन किया न सिर्फ़ इसलिए कि वे अभी तक अपनी फौजी वर्दियाँ पहनते थे, बल्कि इसलिए भी कि निर्माण मज़दूरों ने मोर्चे के पीछे के प्रदेश मे सहायता की, यानी काम का समय पर पूरा होना उन पर निर्भर करता था। उनके लिए पीछे हटने का कोई सवाल नही था। जैसी कि मेरी आदत थी, मैंने उनके विभाग का समाचार पूछा तो मेरे प्रश्न के जवाब में अट्टहास फूट पड़ा। कारण पता चला तो मैं खुद भी हँसे बिना नहीं रहा।

घटना बडी मनोरंजक है। उनके पास एक ड्राइंग (रेखा-चित्र) भेजी गयी थी जिस पर बड़ी साफ हिदायत लिखी थी: "अत्यन्त तात्कालिक! काम आज ही होना है। (हस्ताक्षर) लिफशित्ज"। पहले तो मजदूर हक्का-बक्का रह गये क्योंकि काम मे कम-से-कम तीन दिन लगने थे। निश्चय ही, उन्होने कुछ बड़ी सख्त भाषा का उपयोग किया, मगर फिर भी पीछे हटने का तो कोई सवाल ही नही था, इसलिए उन्होने आस्तीनें समेटी और काम उसी दिन खत्म कर दिया। जब वे काम के अन्त पर पहुँच रहे थे तब डिज़ायनर के ब्यूरो से एक युवती दौड़ी

हुई आयी और बोली : 'वह ड्राइंग कहाँ है ?" पता चला कि गिपरोमेज़ के पावर इंजीनियरिंग सेक्टर के प्रधान कामरेड निफ़शित्ज़ ने जो हिदायत दी थी, उसका निर्माण-मज़दूरों से कोई सम्बन्ध नहीं था। उन्होंने इस डिज़ायन की एक नकल तैयार करने-भर का आदेश दिया था।

काम के सभी हिस्सों में लोग शब्दशः लगन, प्रतिभा और पहलकदमी से काम कर रहे थे। अक्सर होता था कि वे लगातार कई-कई दिन तक घर नहीं जाते जब तक कि वह काम-विशेष समाप्त नहीं हो जाता। वे कहीं छाया में घंटे-दो-घंटे की बिल्लियों जैसी नींद लेते और फिर काम पर वापस चले जाते। जो भावना पैदा करने के लिए क्षेत्रीय कमेटी लगातार काम कर रही थी—यानी सार्वभौम जोश, विराट पहल और स्वयं अपनी शक्तियों में अथाह आस्था—वह भावना पैदा हो चुकी थी। मैं समझ गया कि निर्माण-स्थल पर मोड़ आ चुका था और प्रगति की रफ्तार अब दृढ़तापूर्वक बढ़ती जायेगी। उच्च कोटि के मज़दूर विकसित हो चुके थे जो अत्यन्त साहसपूर्ण कामों और सबसे अधिक कार्यक्रम को भी निभा सकते थे। रफ़्तार कायम रखना आवश्यक था, उसी तरह जैसे सिपाहियों में तेवर आ जाने पर वे एक सशस्त्र क़िलेबंदी के बाद दूसरी को फ़तह करते चले जाते हैं।

हमारी टीमों के काम के सुपरिणाम श्रम के पूरे मोर्चे पर प्रकट होने लगे थे : "जैसे पहली पंचवर्षीय योजनाओं के काल में सारा देश मेग्नीतोगोर्स्क और कुज़नेत्स्क के निर्माण में सहायता कर रहा था," प्रावदा ने लिखा था, "वैसे ही 'ज़ापोरोझ्ये निर्माण' शब्द अब न सिर्फ निर्माण-कार्य करने वालों के लिए, बल्कि उन सभी के लिए जिन पर ज़ापोरोझ्ये लौह-इस्पात कारख़ाने की तीव्र पुनर्स्थापना निर्भर करती है, नारा बन जाना चाहिए।"

उस ग्रीष्म काल में जनता को प्रेरणा देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी हमारे अख़बारों ने, हमारे सुस्पष्ट बोल्शेविक प्रचार-कार्य ने। ज़ापोरोझ्ये में मेरे आगमन के बाद मैंने तुरन्त ज़ोर दिया कि क्षेत्र के समाचारपत्र की बिक्री बढ़ायी जाये। हालांकि देश में अख़बारी कागज़ की कमी थी, फिर भी पार्टी की केंद्रीय समिति ने हमारी सहायता की। हमने मज़दूर बस्तियों के लिए रेडियो सेवा भी शुरू करायी। पार्टी-कार्यकर्ताओं को तब आश्चर्य हुआ जब उनके अनुभव में पहली बार क्षेत्रीय पार्टी के प्रथम सचिव ने क्षेत्रीय ब्यूरो की बैठक की कार्यसूची में निर्माण-स्थल पर काम करने वाले मज़दूरों के लिए प्रकाशित होने वाले स्थानीय अख़बार स्त्रोयतल के सम्पादकीय स्टाफ़ की एक रिपोर्ट भी रखी। ब्यूरो के फ़ैसले में यह बात दर्ज की गयी : "पार्टी कमेटी ने आम जनता के बीच विचारधारात्मक काम करने में अख़बार द्वारा अदा की जाने वाली विराट भूमिका को कम करके आँका और वह अख़बार को एक मंच के रूप में इस्तेमाल नहीं करती...।"

काम के शिखर पर प्रावदा, राद्यान्स्का उक्रइना और ज़ापोरोझ्ये बोल्शे-

विक जैसे अखबारों ने शाखाई सम्पादकीय समूह को निर्माण-स्थल पर काम करने और रिपोर्ट भेजने के लिए भेजा। मैं अपने क्षेत्रीय अखबार के प्रचार विभाग के प्रधान आन्द्रेइ क्ल्यूनेन्को को युद्ध मोर्चे से जानता था जहाँ हम लोग काकेशस से प्राग पहुँचने तक कंधे-से-कंधे मिलाकर लड़े थे। वे बड़े बहादुर रेजिमेंटर कमिसार और साहसी पत्रकार थे—अख़बारी काम के लिए यह परमावश्यक गुण होता है। मैं ज़ापोरोझये बोल्शेविक के स्थानीय शाखा-कार्यालय के सम्पादक व्लादीमिर रेपिन से भी परिचित था। चश्माधारी, कद में ऊँचे और दुबले-पतले, वे अपने काम मे पूरे पारंगत थे और निर्माण-स्थल की ताज़ी खबर जानने में सबसे आगे रहते थे जिसको सामान्यत: लोग लगभग उसी समय स्थानीय समाचारपत्र या पर्चे से जान पाते थे।

जब कोई बड़ी महत्वपूर्ण घटना घटती थी तो हम उचित पर्चा निकालते थे जिसको तरुण कम्युनिस्ट लीग के ट्रकों से या छोटे-से पी० ओ-2 हवाई जहाज से आसमान से गिराकर बाँट दिया जाता था। एक ऐसी जीत के मौके पर जो हमें अत्यन्त प्रिय थी, प्रकाशित किये गये एक पर्चे का मूल पाठ यों था :

सारे देश के लिए महत्वपूर्ण खबर

ज़ापोरोझये पिग लोहा फिर पैदा होने लगा

"आज हमारे धमन-भट्टी मजदूरों ने युद्धोत्तर काल में पहली बार पिग लोहा पैदा किया। ज़ापोरोझये के निर्माण-मज़दूरो ! अब आप अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए अपने लाभदायक और गौरवपूर्ण लगनशील श्रम के फल को खुद देख सकते हैं।

"समस्त सोवियत जनता महाक्षमतावान धमन-भट्टी और ज़ापोरोझये लौह-इस्पात कारखाने के ताप और बिजली केन्द्र के मृत्यु के बाद फिर जन्म लेने का स्वागत करेगी क्योंकि वे जानते हैं कि बर्बर फ़ासिस्टों ने किस हद तक विनाश किया था।

"ज़ापोरोझये के निर्माण-मजदूरो, आज आपका नाम सारा देश कृतज्ञता से ले रहा है !

"नयी जीतों की ओर आगे बढ़िये !"

किंतु मैं आगे बढ़ा जा रहा हूँ क्योंकि विजय प्राप्त होने मे अभी कुछ और समय बाक़ी था। तीखी आलोचना वाले पर्चे भी निकाले जाते थे जिनमें उनके नाम दिये जाते थे जो काम में बाधा डालते थे। मैं एक उदाहरण दूँगा जो महत्व-हीन लग सकता है : किसी ने सड़क पर एक स्लैब पड़ा छोड़ दिया था जो रास्ता रोकता था और उससे काम में बाधा पड़ती थी। अगली सुबह ही उस स्लैब पर खड़िया से ये शब्द लिख दिये गये : "बे० के फोरमैन महोदय ! इस स्लैब को

हटाइये। इससे काम रुक रहा है। इसके लिए आपको पाँच घंटे का समय दिया जाता है," और उसके बाद किसी के दस्तखत थे। सचमुच वह हटा दिया गया और सड़क साफ कर दी गयी! इस घटना का ज़बर्दस्त प्रभाव पड़ा।

तमाम तरह के दृश्यगत प्रचार बड़े प्रभावशील सिद्ध हुए। जैसे-जैसे आप निर्माण-स्थल पर चलते जाते, वैसे-वैसे आपको हर तरफ तारीखें और आँकड़े दिखायी देते: स्लैबिंग मिल अमुक तारीख़ तक चालू हो जायेगी, कोल्ड रोलिंग मिल अमुक तिथि तक, अब लक्ष्यपूर्ति के लिए 30 दिन रह गये, अब 15, 10 और 5 दिन। निर्माण-स्थल पर होनेवाली हर घटना से पूरे शहर को परिचित रखा जाता था और हम शहरवासियों को अपनी सभाओं में शामिल होने के लिए बुलाते थे। निर्माण मजदूर सपरिवार आते थे।

एक युवती ने अपने पति से पूछा, "ऐसा क्यों होता है कि दूसरों की तारीफ़ होती है, मगर तुम्हारा नाम कभी नही आता?"

या एक बच्चा पूछता:

"डैडी, क्या बात है कि लोग अंकल प्योत्र के लिए तालियाँ बजाते है, आपके लिए नहीं।"

वे सच्चे और सजीव जन-कार्य के उदाहरण हैं जो अत्यन्त प्रभावशील होते हैं। यह सोचना गलत है कि सिर्फ आर्थिक प्रोत्साहन ही काम देता है। नही, सोवियत जनता को बहुत चीज़ों की आवश्यकता है: किसी बड़े उद्यम मे उलझने की भावना, अपने काम में अपने को अभिव्यक्त करने की चेष्टा, अपने कौशल पर गर्व करना, अपने साथियो का आदर करना, आदि।

इन सभी नैतिक गुणों को, निश्चय ही, अर्जित करना पड़ता है, और इस मामले मे सभी जगह मौजूद रहनेवाले पत्रकार हमारे बड़े सहायक होते हैं। उन्नतिशील विधियाँ, मनुष्य की जीवनी के कुछ रोशन पृष्ठ, काम के कुछ कीर्तिमान या किसी काम का बढ़िया ढंग से पूरा किया जाना—अखबार वाले इन सभी बातों पर तुरन्त प्रकाश डालते है। निर्माण-कार्य मे पत्रकार पूरी तरह भागीदार थे।

मुझे याद है कि मैंने शाखा सम्पादकीय कार्यालयों को सलाह दी थी कि वे चालन के लिए तैयार परियोजनाओं को देखने के लिए हमारे दौरों मे साथ रहे जिसके लिए हम निर्माण-कार्य तथा कारखाने के नेताओ के साथ रोज़ ही जाते थे। ऐसे दौरो के दौरान अनेक दिलचस्प सवाल पैदा होते थे, उपयोगी बातचीत उठ जाती थी और निर्माण-कार्य के नये वीरो के नाम प्रकट होते थे। केवल प्रशंसा के शब्द ही नहीं, हम अखबारों से सख्त आलोचना की भी आशा करते थे।

यहाँ मैं यह भी नोट करना चाहूँगा कि हम विभिन्न संस्थाओं के ऐसे अनावश्यक अनुरोधो को रोकते थे जिनसे निर्माण मज़दूरों और तकनीकी कर्मचारियों

का ध्यान अपने हाथ मे लिये कामों से बँट सकता हो। मैं अवसर अपने साथियों से कहा करता, "सारा काम सीधे कार्य-स्थल पर ले जाना चाहिए। अगर आप काम चाहते हैं तो खुद निर्माण-स्थल पर जाइये।" चूंकि वे देखते थे कि क्षेत्रीय कमेटी का प्रथम सचिव स्वयं इस बात पर अमल करता है, इसलिए यह ज़िला, शहर और क्षेत्र की पार्टी कमेटियों के सचिवों, विभागाध्यक्षों और प्रशिक्षकों के लिए परम्परा-सी हो गयी थी। यह बात उनके लिए भी बड़ी लाभदायक थी।

□ □

काम की रफ़्तार तेज़ से तेज़तर होती चली गयी। इसके लिए सभी संभावनाओं को जुटाने, नयी नवोन्मेषक कार्य-पद्धतियों और प्रगतिशील औद्योगिक समाधानों, दिलेरी और सृजनशीलता की ज़रूरत थी। मैंने यह देखा कि हमारे सामने जो कठिनाइयाँ और कमियाँ पेश आयी थी, उनसे नये और मौलिक विचार उभरने लगे थे। इसके जो अनेक दृष्टान्त मेरे मन में अभी तक बने रह गये है, यहाँ उनमे से दो इस प्रकार है।

तीन नम्बर की धमन-भट्टी जिसका हमने सबसे पहले पुनरुद्धार करना शुरू किया, वह अकेली ऐसी थी जो विस्फोट से बची रह गयी थी। पर यह बन्द हो गयी थी और ठीक पीसा की झुकी हुई मीनार की तरह यह कुछ टेढ़ी हो गयी थी। इसके भीतर का बोझ ही था जो इसे गिरने से बचाये हुए था। लगा कि इसका सिर्फ़ एक ही समाधान है और वह यह कि विशालकाय भट्टी को ढहा दिया जाये और इसे फिर नये सिरे से बनाया जाये। पर एक अत्यन्त अनुभवी निर्माण-विशेषज्ञ एम० एन० चूडान के अधीन स्ताकोनस्त्रुक्तिसया विभाग के लोगों ने इसका एक और समाधान ढूंढ लिया: भट्टी को पुन: बिलकुल सन्तुलित कर लेना था। यह कुछ ऐसा कार्य था जो इससे पहले कभी किया नहीं गया था। विभाग के प्रधान इंजीनियर ए० बी० शेगल ने, जिन्होंने इस प्रायोजना की रूपरेखा तैयार की थी, मुझसे कहा :

"परिस्थिति देखते हुए मैं यह सोचने को बाध्य हूँ कि निर्माण के क्षेत्र मे प्रचलित युक्तियों का 'शल्य-चिकित्सा' की युक्तियों से समन्वय बैठाया जाये।"

एक सुबह निर्माण-कार्य करने वाले मज़दूरों ने भट्टी के भीतर से सैलामैण्डर (अग्नि-दाहक) को हटा दिया, नौ द्रव्य-चालित जैकों को जिनकी क्षमता 100 से 200 टन तक थी, उन्होंने भट्टी के नीचे सही हालत मे लगा दिया, पपड़ी को काटकर

साफ कर दिया और उसे ऊपर उठाने के काम में लग गये। इस दृश्य को सैकड़ों निर्माण-कर्मी देख रहे थे और थके हुए होने के बावजूद वे बड़े ग़ौर से इस बात को देखने के लिए रुके रह गये थे कि आख़िर यह काम ख़त्म कैसे होगा। उनकी आँखों में नींद तक नहीं थी। उस दिन मेरी नज़र में कोई दूसरा काम भी था, लेकिन मैं भी वहाँ से अलग नहीं हो सका। यह विशालकाय भट्टी हिली और फिर धीरे-धीरे खड़ी स्थिति मे आने लगी। यह कार्य साढ़े पाँच घण्टे तक चलता रहा। कोई भी आदमी अपनी जगह से हिला तक नहीं। मैं भी अन्त तक, जब तक कि दोनों तरफ़ के अंतराल को इस्पात के अस्तरों से पूरी तरह भर नहीं दिया गया, खड़ा रहा। इस काम को दो महीनों की जगह साढ़े पाँच घण्टे में ख़त्म कर दिया गया। राज्य को दस लाख से अधिक रुपयों की बचत हुई। मिखाइल निकोलायेविच चूडान और आइज़िक वोलफोविच ग्रेगल को उनके तकनीकी दृष्टि से साहसपूर्ण इस निर्णय के लिए राजकीय पुरस्कार प्रदान किये गये।

दूसरा राजकीय पुरस्कार स्तालमोंताझ विभाग के प्रधान मार्क इवानोविच नेदुज़्को को दिया गया। वह एक महान प्रभावशाली और साहसी व्यक्ति थे और द-नीपरोपेत्रोव्स्क क्षेत्र के मूल निवासी थे। वह एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुए थे, उन्होने एक फैक्टरी में फिटर और वैल्डर का काम किया था और फिर एक निर्माण-कर्मी बने थे। पहली पांच-साला योजना के दौरान वे यूराल और साइबेरिया के निर्माण-स्थलो में निर्माण-कार्य के इंजीनियर रह चुके थे। युद्ध के दौरान उन्होंने एक पैट्रोल पाइप-लाइन का काम अपने हाथों में लिया था जो लेनिनग्राद के संकटग्रस्त नगर तक आती थी। इन पाइप-लाइनो को लाडोगा झील की बर्फ पर जोडा गया था और फिर इसे उसकी तलहटी तक पहुँचा दिया गया था और इस प्रकार लेनिनग्राद के मोर्चे पर पैट्रोल की सप्लाई की सुनिश्चित व्यवस्था की गयी थी। जिस समय तोपो से गोले बरसाये जा रहे थे, मार्क नेदुज़्को झील के बर्फ़ीले पानी मे गिर गये थे जिससे वह फिर कभी पूरी तरह स्वास्थ्य-लाभ नहीं कर सके। लेकिन फिर भी वह अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनों तक काम मे लगे रहे।

ज़ापोरोझ्ये में उनके विभाग को रोलिंग कार्यशालाओं को, जिन्हे फासिस्टो ने उन्मत्त होकर तहस-नहस कर दिया था, फिर से बनाने का काम सौंपा गया था। मैं इस बात का पहले ही ज़िक्र कर चुका हूँ कि उसके खम्भों पर 'एफ' अक्षर लाल रंग से लिखा हुआ है। धातु के मुड़े-तुड़े गोरखधंधे को देखकर उन्होंने प्रस्ताव रखा कि खम्भों को पूरा-का-पूरा ऊपर उठा दिया जाये। साहस और नवोन्मेष के लिहाज से यह एक आश्चर्य में डालने वाला समाधान था। उन्होंने कार्यशाला को फिर सही हालत में लाने के लिए विशाल खण्डों में बाँट दिया। इनमे से एक-एक में बीस कालम थे और उनका वजन कम-से-कम एक हज़ार टन था। फिर, मशीनों

. 1946 उक्राइन की कम्युनिस्ट पार्टी की द्नीप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्रीय समिति के प्रथम सचिव, लियोनिद ब्रेझनेव, अपने अध्ययन कक्ष में।

1947 ज़ापोरोझ्ये "कोस्मोल्का" तृतीय धमन-भट्टी के चालू किये जाने के अवसर पर ज़ापोरोजस्टाल संयंत्र मे हुई सभा के दौरान लियोनिद ब्रेझनेव।

1947; लियोनिद ब्रेझनेव की ज़ापोरोजस्ट्राय के मेहनतकशो से भेट।

1947; लियोनिद ब्रेझनेव (बायें) जापोरोझये लौह एव इस्पात संयंत्र के पुनर्निर्माण की समाप्ति के अवसर पर।

द्नेप्रोदज़ेरझिंस्क के द्ज़ेरझिंस्की धातुकर्म कारखाने के मेहनतकशों के साथ लियोनिद ब्रेझनेव।
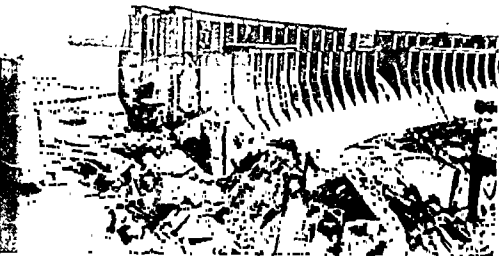
1943; जापारोझ्ये। नीपर जल-विद्युत केन्द्र बांध जिसे नाजियों ने ध्वस्त कर दिया था।
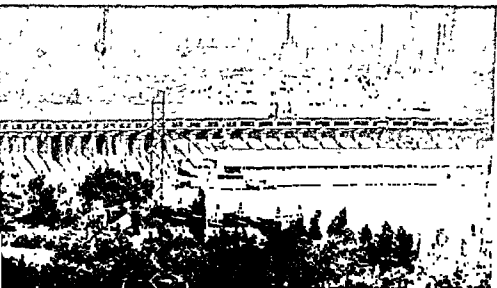
1978; नीपर जल-विद्युत केन्द्र 'नेप्रोगेस—2' और 'जाप्रोजस्टाल' धातुकर्म संयंत्र का दृश्य।

1943; नाजियों द्वारा ध्वस्त पेत्रोव्स्की धातुकर्म संयंत्र का धमन-भट्टी-कक्ष।
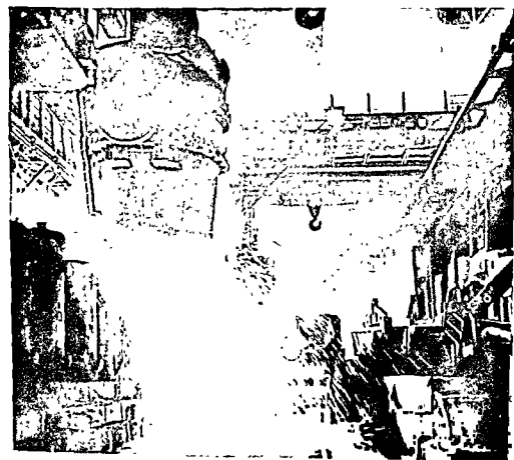
1978; 'जाप्रोजस्टाल" इस्पात संयंत्र का एक विभाग।

1943; द्नीप्रोपेत्रोव्स्क । नाजियों द्वारा ध्वस्त नगर का विहंगम दृश्य ।
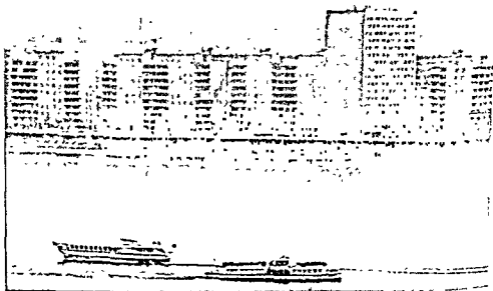
1978; द्नीप्रोपेत्रोव्स्क । आज का नगर ।

द्नीप्रोपेत्रोव्स्क के क्षेत्रीय नियोजन मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष ग्रिगरी मात्वेयेविच द्रूचेंको जिनका उल्लेख "पुनर्जन्म" में है।

द्नीप्रोपेत्रोव्स्क धातुकर्म संस्थान में ढलवाँ लोहा धातु कर्म संकाय में प्रोफेसर, समाजवादी श्रमवीर, इलया इवानोविच कोरबोव।

उक्रइन की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की द्नीप्रोपेत्रोव्स्क नगर समिति के भूतपूर्व सचिव पावेल फिलिपोविच ख्रापुनोव, "पुनर्जन्म" मे इनका उल्लेख है।

द्नीप्रोपेत्रोव्स्क क्षेत्रीय पार्टी समिति के जनरल विभाग के इंचार्ज येवगेनी निकोलायेविच माल्यारेव्स्की, "पुनर्जन्म" में इनका उल्लेख है।

वैल्डरों का प्रयोग करके उन्होने प्रत्येक खंड को अलग किया और फिर टेलिस्कोपिंग (दूरदर्शी) थूनियाँ लगायी जिनकी डिजाइन उन्होंने तथा इंजीनियरिंग विभाग के प्रधान ग्रिगोरी वासिल्येविच पेत्रेन्को ने तैयार की थी। ऐसा लगा मानो उन्होंने कार्यशाला की छत को ही मुट्ठी मे पकड लिया हो और उसके स्तम्भ के पूरे खंड को ऊपर उठा लिया हो जिससे ध्वस्त खम्भे सीधे होकर खडे हो गये हों. और शहतीरों और धरनों की स्थिति बिलकुल सही हो गयी हो। यह सच है कि अनेक हिस्से ऐसे थे जिन्हे पहले जैसी स्थिति में नहीं लाया जा सकता था, इसलिए उन्हें सीधे हटा दिया गया और कुछ ढाँचो को जोड़कर तथा पैबन्द लगाकर ठीक किया गया जो उसी 'शल्य-चिकित्सा' का अनूठा उदाहरण था।

इसका नतीजा यह हुआ कि काम के एक बहुत जटिल हिस्से पर एक साल के समय की बचत हो गयी। अनेक बहुमूल्य ढांचों को, जिन्हे अन्यथा कबाड़ा समझ लिया गया होता, बचा लिया गया। इस प्रकार ही धराशायी फैक्टरियों को फिर से काम लायक बनाने का विज्ञान सामने आया। यह एक ऐसा विज्ञान था जिसकी बहुत अधिक जरूरत थी, *यद्यपि यह बहुत ही अच्छी बात रही कि इस प्रकार के* पुनरुद्धार की फिर कभी जरूरत ही नही पड़ी।

हम जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कर्मशाला के पहले खंड की प्रौद्योगिक शृंखला का पुनरुद्धार करने के लिए काम करने लगे। इसमे इस शृंखला की केवल उन्ही खास कड़ियों को शामिल किया गया था जो इस्पात की चद्दरें तैयार करने के लिए जरूरी थीं। ताप व बिजली केन्द्र पर लगे धौंकनी यंत्रों से साफ किया लोहा तैयार करने के लिए भट्टी को धौंक देनी थी और भट्टी से रोलिंग-शाप के लिए गर्म गैस भी मिलनी थी। खैर, हम अपने को उसी तक सीमित नही रख सके, इसलिए समूचे उद्यम के पुनरुद्धार के लिए साथ-साथ काम चलता रहा। इसमे रेल मार्गों का जाल, जल-आपूर्ति, विद्युत स्रोत, इनसे लगी-जुडी कार्यशालाओं आदि के निर्माण के कार्य शामिल थे। इस क्षेत्र मे जो अनुभव प्राप्त हुए वे बहुत मूल्यवान थे और महत्वपूर्ण बात यह थी कि फिर इसे खोया या बिसरा न दिया जाये बल्कि उसका उपयोग व्यापक रूप से अन्यत्र भी हो। उक्रइन की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के जापोरोझ्ये नगर की समिति ने एक विशेष निर्णय स्वीकार किया जिसका शीर्षक था, "जापोरोझस्त्रोय के नवप्रवर्तकों द्वारा विकसित उन्नत कार्य-विधियों के अध्ययन और प्रसार के विषय मे।" पहली धमन-भट्टी के चालू होने से कुछ ही पहले मैंने पार्टी और निर्माण-कर्मियों की एक बैठक की, जहाँ, निश्चय ही मैंने आयोजनपूर्व की अवधि की तल्ख जरूरतों के विषय मे भाषण दिया और भावी संभावनाओं का भी जिक्र किया :

"बहुत थोड़े-से समय मे हम आर्थिक नेताओं और कम्युनिस्टों का ध्यान राजकीय योजनाओं को पूरा करने की ओर खीचने मे सफल हुए है। पर हमे एक

व्यापक दृष्टिकोण अपनाना है। मैं चाहूँगा कि यह निर्माण-कार्य जो पार्टी नेतृत्व के दृष्टिकोण से बहुत ही विलक्षण क्षेत्र है, हमारे सभी पार्टी संगठनों और सभी औद्योगिक उद्यमों के लिए एक उदाहरण बन जाये।"

उस समय समूचा देश हमारे निर्माण-कार्यों में मदद दे रहा था। निर्माण-स्थलों के निकट ही टेंट लगे थे जिन पर 'गोर्की', 'रीगा', 'ताशकन्द', 'बाकू' और 'सुदूर पूर्व' अंकित थे जिनमें इन क्षेत्रों के निर्माण-ब्रिगेडों के लोग रहते थे। हमारी फर्माइश पर 70 नगरों में 200 से अधिक फैक्टरियाँ तैयार की जा रही थीं। गोर्की से हमे मोटर, ट्रकें मिलने लगी थीं, अर्खान्जेल्स्क से रेलवे स्लीपर, यारोस्लाव्ल से बिजली की मोटर तथा बाकू और ग्रोज्नी से राल तथा तेल के अन्य उत्पादन मिल रहे थे। फिर मास्को से मशीन टूल, कुज्नेत्स्क से रेलें, बायलो रूस से लकड़ी और द्नीपरोपेत्रोव्स्क तथा मेरे अपने जन्म-स्थान ज़ेरझिन्का के क्षेत्र की फैक्टरियों से धातु के ढाँचे मिल रहे थे। यहाँ तक कि कार्यशालाओं के पुनरुद्धार के लिए डिज़ाइनें भी हमें कीव, खारकोव, द्नीपरोपेत्रोव्स्क, रोस्तोव-ऑन-दोन, लेनिनग्राद मे तैयार की जा रही थी—हालांकि गिप्रोमेज ने ज़ापोरोझये में एक शाखा पहले ही खोल रखी थी।

इस जगह मैं एक शालीन महिला ए० एस० शेरेमेल का साभार उल्लेख करना चाहूँगा। वह ज़ापोरोझये लौह-इस्पात कर्मशाला में इंजीनियर की हैसियत से काम करती थीं। यह सवाल किया जा सकता है कि क्या कोई एक व्यक्ति बहुत अधिक काम कर सकता है? हाँ, यदि वह किसी उद्देश्य के प्रति निष्ठावान है और उसमें कर्त्तव्य-भावना भरी हुई है तो निश्चय ही वह बहुत-बहुत अधिक काम कर सकता है। उन अंधकारपूर्ण दिनो में जब हिटलरी सेना नगर पर गोलाबारी कर रही थी तब उसके हाथ जो भी नक्शे और खाके लगे और हज़ारो सूचियों को उसने जमा किया और अन्त में फैक्टरी मे लौट गयी। ये कितने महत्व-पूर्ण उपयोग के सिद्ध हुए! साज-सामान पुनर्वास-स्थलो से वापस लाया जा रहा था या खास तौर से हमारे लिए तैयार किया जा रहा था। इन पुराने नक़्शो की बदौलत डिज़ाइन बनाने वालों और निर्माणकर्मियों ने कितने ही मूल्यवान समय की बचत की। महत्वपूर्ण बात यह है कि डिजाइन बनाने वालो और कर्मियों को इन पुरानी मशीनों का आधुनिकीकरण करने मे भी सफलता मिली। उदाहरण के लिए, हमारे लिए क्रामातोर्स्क के मजदूरो ने एक स्लैबिंग मिल तैयार की जो युद्ध से पहले की मिल जैसी ही थी। पर अब इसकी क्षमता 12 लाख टन प्रति वर्ष से बढ़कर 20 लाख टन प्रति वर्ष कर दी गयी थी।

उस वर्ष अखिल-यूनियन प्रतियोगिता अभियान ज़ापोरोझस्ट्रोय कार्यदल की पहल पर शुरू किया गया था। उन दिनो हर आदमी की जबान पर यह जुमला चढ़ा हुआ था जिसका आशय था, महत्वपूर्ण प्रयास के वर्ष मे इसे जीवन्त निर्माण-

स्थल पर वर्ष में केवल 365 साधारण काम के दिन नहीं, बल्कि 365 चौबीस घंटों के काम के दिन होते हैं। मुझे याद है कि जब लेनिनग्राद के निवासियों ने समय से पहले ही एक उपकरण, जिसकी हमें बेहद जरूरत थी, भेजने का सन्देश दिया था तो इससे हम कितने उल्लसित हुए थे, पर उन्होंने देश के सभी विद्युत मशीनरी उद्यमों का आह्वान किया था कि वे इस आदर्श का अनुसरण करें। हमने तुरन्त उन्हे जवाब में तार भेजा, "लेनिनग्राद में कामरेड पोप्कोव पार्टी की क्षेत्रीय समिति, कामरेड कामेन्स्की, विद्युत उपकरण कर्मशाला, कामरेड स्पेक्तोरोव, स्नैवचरमेत :

"समय से पहले उच्च वोल्ट का उपकरण भेजने का आपका सन्देश प्राप्त हुआ। विद्युत मंयत्र पर काम की स्थिति में बहुत बड़ा सुधार हुआ. इससे हमें बहुत-सी प्रायोजनाओं में जो काम के लिए तैयार हैं समय से विद्युत उपकरण लगाने में मदद मिलेगी। हम इस अत्यावश्यक सहायता के लिए फैक्टरी कार्यदल को धन्यवाद देते हैं।

एल० ब्रेझनेव
सचिव, जापोरोझ्ये क्षेत्रीय समिति, क० पा० (बो०)

ए० कुजमिन
प्रबन्धक, जापोरोझ्ये लौह-इस्पात कर्मशाला"

मंयंत्र को लगाने से पहले की अन्तिम सक्रिय बैठक में जिसका जिक्र मैं पहले ही कर आया हूँ, "छोटे पैमाने" के कामों का सवाल आया। अनेक अनुभागों के नेताओं ने बड़े गर्व से सूचना दी कि उन्होंने बड़े (आकार में बड़े) काम पूरे कर डाले, पर बाकी कामों के बारे में, जिन्हें वे मामूली समझते थे, कोई जिक्र नही किया। पर जब तक ये मामूली काम पूरे नहीं हो जाते तब तक इस बात की कोई संभावना नही थी कि पूरा काम चालू हो जायेगा। यही कारण है कि खरी योजना और सच्चे योजनाबद्ध अनुशासन का सुनिश्चय करना होता है। इस विषय में उस समय जो कुछ कहा गया था वह निम्न प्रकार है :

"कामरेड कुजमिन : कुल छोटे-छोटे काम मिलकर कभी-कभी बड़े काम से अधिक बड़े हो जाते है। समूचे काम को पूरा करने के लिए जो समय बाँधा गया था वह खत्म होने जा रहा है।

कामरेड ब्रेझनेव : अच्छा ही हुआ कि आपने इस सवाल को उठा दिया। इसे और साफ ढंग से यूँ कहा जा सकता है कि निर्माणकर्मियों को पूरे तंत्र को आजमाइशी तौर पर चलाने के लिए फैक्टरी को तीन सप्ताह का और समय दिया जा सकता है। मैं 10 मई को पोलित-ब्यूरो को निर्माण-कार्य की प्रगति की सूचना देने के लिए विमान से जा रहा हूँ और आपका वक्तव्य मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है...।"

मैं यहाँ इस बात पर जोर देना चाहूँगा कि न तो निर्माणकर्मियों को, न क्षेत्रीय समिति को और न ही मुझे उस समय यह सूझा कि हमने जो सीमा निर्धारित की है, वह टूट भी सकती है, या यह कि हमें संयंत्र लगाने को कुछ समय के लिए स्थगित रखना पड सकता है या आयोजित काम में किसी "संशोधन" का सवाल उठाया जा सकता है। पार्टी की आर्थिक नीति को कार्यान्वित करने के लिए योजनाएँ ही मुख्य उपकरण है। जब उन्हे तैयार किया जा रहा हो, उसी समय उन पर विचार-विमर्श हो सकता है और वह होना भी चाहिए। पर एक बार जब योजनाएँ स्वीकृत हो गयी और हमारे राज्य मे जब उन्हे कानून का दर्जा मिल गया तो केवल एक ही कर्तव्य बचा रहता है : उन्हे पूरा करना होगा और पूरा भी ठीक समय से, कम-से-कम खर्च और सुन्दर-से-सुन्दर रूप में।

इसमे शक नही कि इतना बड़ा निर्माण-कार्य सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत संघ के मंत्रिमंडल की सक्रिय और प्रभावशाली सहायता के बिना पूरा नही किया जा सकता था। हमसे कठोर माँगें की जा रही थी, पर जब हमें मदद की दरकार हुई तो मदद प्रभावकारी ढंग से मिली। इतना ही कहना काफी होगा कि ऐसे दिन भी आये जब मास्को से पाँच मंत्री एक साथ स्थल पर पहुँचे। जापोरोझ्ये की लौह-इस्पात कर्मशाला को स्वचालन व विभाजन उद्योग-मंत्रालय, आयुध, परिवहन, मशीन निर्माण तथा कोयला व तेल-उद्योग के मंत्रालयों की सहायता की आवश्यकता थी और वह उसे मिली थी।

अक्सर आने वालों में थे सोवियत संघ के भारी उद्योग उद्यमों के निर्माण-मंत्री पी० ए० यूदिन तथा लोहा व इस्पात मंत्री आई० एफ० तेवोस्यान। तेवोस्यान से मेरी जान-पहचान मोर्चे पर तब हुई थी जब दक्षिण मे औद्योगिक केन्द्रों की मुक्ति का संग्राम चल रहा था। उस समय उन्होंने धमन-भट्टियों और खुले चूल्हे की भट्टियो तथा रोलिंग कार्य-शाखाओं के पुनर्जन्म के बारे मे बात की थी। जब वह हमारी कर्मशाला में आये तो सुबह के निरीक्षण दौरों पर तो उन्हे होना ही था और उन्होंने उस समय पेश आने वाले सवालों पर उसी जगह विचार-विनिमय किया था। वह एक प्रथम श्रेणी के नेता थे जिन्हे अपने क्षेत्र की बहुत बारीक जानकारी थी और उन्हे बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

दिन तेज़ी से एक-पर-एक निकलते चले गये। निर्माण के प्रयास लगातार चलते रहे। लोग रात-दिन काम पर लगे हुए थे पर इसके बावजूद मुझे यहाँ तक याद है ये दिन बहुत जोशो-खरोश और उल्लास के दिन थे। जिस दिन क्रिवोय-रोग से खनिज लोहे की पहली ट्रेन लदी हुई पहुँची, वह दिन हमारे लिए एक विजय का दिन था। जिस दिन धमन-भट्टी को सुखाने का काम शुरू हुआ, वह खुशियाँ मनाने का एक दिन था। जब ताप व विद्युत केन्द्र की सुखाने वाली धौकनी

के उपकरण का परीक्षण आरंभ हुआ और पहली वार लदे हुए झूले, सरकते हुए ऊपर की ओर चलने लगे तो निर्माताओं के लिए यह बहुत महत्व की घटना थी।

इवान पावलोविच वार्दिन के नेतृत्व में मास्को से एक राजकीय आयोग पहुँचा। वार्दिन एक मशहूर धातु-विज्ञानी थे और सोवियत सघ की विज्ञान परिषद के उपाध्यक्ष थे। इससे पहले उनसे मेरी मुलाकात द्नीपरोजेरझिन्स्क में हुई थी। वार्दिन स्वभाव से सामान्यतः बहुत संयत थे पर, जापोरोझये लौह व इस्पात कार्यशाला को काम सौंपने के लिए तैयार किये गये दस्तावेज के पहले खंड मे उन्होंने जो वाक्य लिखा था वह इस प्रकार है : "निर्माताओं और निर्माण-कर्मियों ने जो काम कर दिखाया है, उसकी इससे पहले, काम की विशालता और प्रौद्योगिक प्रश्नों के समाधान दोनों ही दृष्टियों से, कोई मिसाल नही मिलती।"

अंततः वह दिन आ ही गया जिसकी लंबे समय से प्रतीक्षा थी। यह देखने के लिए कि हर चीज सही है या नही एक वार अंतिम जाँच की गयी और फिर आदेश मिला : "धमन-भट्टी चालू करो!" गैस की निगरानी करने वाले ने गर्म धौंकनी के दरवाजे का वाल्व खोल दिया। सीनियर फोरमैन ने लोहे के दांते में एक जलती हुई मशाल लगायी और भट्टी गरजती हुई चलने लगी। ताप और बिजली केन्द्र की मुख्य इमारत के हूटर ने जापोरोझये लौह व इस्पात कार्यशाला के पुनर्जन्म की घोषणा की। सायरन सुनकर सभी लोग बाहर सड़कों पर निकल आये। लोग एक-दूसरे से गले मिल रहे थे और उनकी आँखों मे आनन्द के आँसू छलक रहे थे। अगले दिन (30 जून 1947) को ढले लोहे का पहला पिंड निकला।

मुझे आज भी वह दिन इतनी अच्छी तरह याद है। भट्टी से लगातार निकलती रहने वाली भभक की आवाज के कारण किसी की वात सुनायी नही पड़ रही थी, पर यह आवाज ऐसी थी जिसके लौह व इस्पात के कर्मी आदी वन चुके थे। मैं भी इसे सुनकर खुश था, क्योंकि मैं भी अपने को लौह और इस्पात का एक कर्मी ही मानता था। ऑक्सीजन-कटर जलता हुआ लोहे के दाँतों से होकर गुजरता था और सफ़ेद-लाल धातु की एक धार-सी उमड़ती थी। यह धार चारों ओर चिनगारियाँ बिखेरती हुई पिघले हुए कच्चे लोहे की एक धारा में वदल जाती थी। उस लहराती हुई धारा से हम अपनी नजर नहीं हटा पाते थे और इसके बगल से चलते हुए यह देखने पहुँचते थे कि कलछा किस तरह भरता है। मुझे याद है कि वार्दिन ने मेरा हाथ दवाया था और मैंने उसका, और हम भट्टी के चालकों से जी भरकर गले मिले थे।

ठीक वहीं कारखाने के यार्ड मे सोलह हज़ार लोगों की एक सभा की गयी, जिसमे मैंने निर्माताओ, निर्माण-कर्मियो और भट्टी पर काम करने वाले लोगों को उनकी इस महान विजय पर बधाई दी और काम की दर को वनाये रखने तथा उस वर्ष की योजना को पूरा करने और पिसाई-घरों को देश की महान जयंती

अर्थात् महान समाजवादी अक्तूबर क्रांति की तीसवीं सालगिरह तक पूरा कर दिखाने का आह्वान किया था।

यह सब आज से तीस साल पहले की बातें है। जुलाई के उतार मे हमने सिल्ली बनाने वाली मिल से लोहे का पहला पिंड निकाला। 30 अगस्त को सरकारी आयोग ने हॉट रोलिंग शाप को काम सौपने का अनुमोदन कर दिया और अट्ठाइस सितम्बर को ठंडी चद्दर चिकनाने की कार्यशाला मे मुख्य काम आरंभ करने की सभा हुई। मंच के सामने फूलों से लदा हुआ एक भाप का इंजन खडा था और इसके साथ ही प्लेटफॉर्म कारें थी जो मास्को मोटर कारखाने को जाने वाले तैयार माल से लदी थी। उन कारो में से एक-पर-एक तख्ती लगी थी जिस पर लिखा था : "मातृभूमि ज़ापोरोझ्ये की इस्पात की इन चद्दरों को स्वीकार करो।"

ज़ापोरोझ्ये के कर्मचारियों ने अपना वादा पूरा कर दिखाया था, और देश-भर मे उनकी तारीफ की धूम मच गयी। 20 हजार कर्मचारियों को "लौह उद्योग उद्यमों के पुनर्निर्माण" का पदक प्रदान किया गया था और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के फैसले से अनेक प्रमुख कार्यदलों को उपाधियों से सम्मानित किया गया। ज़ापोरोझ्ये ट्रस्ट तथा ज़ापोरोझ्ये लौह व इस्पात कार्यशाला को 'ऑर्डर ऑफ लेनिन' का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसे भी इन अनेक कर्मचारियों, औद्योगिक नेताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं को दिया गया था। इनमें से कुछ नाम थे—आइ० ए० रूम्यान्त्सेव, एम० एन० चूडान, ए०वी०शेगल, एम० आई० नेडुज्को, वी० ई० दीमशित्स और ए० एन० कुज़मिन। मेरा नाम भी इस सूची में था। इस पुरस्कार का मेरे लिए कितना महत्व था! यह मेरा पहला 'ऑर्डर ऑफ लेनिन' था।

ज़ापोरोझ्ये कोक और रासायनिक संयंत्र को युद्ध के दौरान बरबाद कर दिया गया था, इसे फिर से बनाया गया और नवम्बर 1947 से यह काम करने लगा। इससे भट्टी के कर्मचारियो को कोक की नियमित सप्लाई होने लगी। बहरहाल, मैं इसके समारोह के अवसर पर उपस्थित नही रह सका क्योंकि पार्टी की द्नीपरोपेत्रोवस्क समिति ने क्षेत्र मे भेज दिया था।

ज़ापोरोझ्ये छोड़ते समय मुझे इस बात का संतोष था कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। ज़ापोरोझ्ये मे कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की क्षेत्रीय समिति के उन्नीसवें पूर्ण अधिवेशन, जिसमे मैंने भाग लिया था, के अवसर पर जो टिप्पणियाँ की गयी थी, वे इस प्रकार थीं। मैंने वहाँ जो कुछ किया, उसके संबंध मे तारीफ के काफ़ी शब्द कहे गये और तब मंच क्षेत्रीय समिति के कृषि संबंधी प्रश्नों के प्रधान सचिव प्योत्र साबेलिएविच रेज़निक को सौंपा गया। अपनी आँखों को ऊपर चढ़ाकर और चेहरे पर एक चालाकी भरी मुसकराहट लाकर उन्होंने जो

कुछ कहा, वह शब्दशः इस प्रकार है :

"कामरेड रेजनिक : खैर, अब हम कामरेड ग्रेभनेव से होड लेने जा रहे है। हमारा क्षेत्र संयोग से काफी अच्छी प्रगति कर रहा है और इसका खासा मजबूत आधार तैयार किया जा चुका है। इस साल हमने 6,00,000 हेक्टर जमीन में बुवाई की है जबकि पहले सिर्फ 5,00,000 मे ही बुवाई हो पाती थी। सर्दियों की फ़सलें काफी अच्छी हैं। हमने शरद की जुताई पूरी कर ली है और राजकीय योजना को पूरा करके अब लक्ष्य से आगे बढ रहे है। कामरेड ग्रेभनेव को द्नीपरोपेत्रोव्स्क मे इसकी गति उसी प्रकार जारी रखनी होगी जैसे उन्होंने जापोरोभये में किया है और मैं आपको यह भी इत्मीनान दिला दूं कि उन्हे वहां खूब डट कर काम करना होगा।" (हँसी)

"कामरेड ग्रेभनेव : आपको द्नीपरोपेत्रोव्स्क क्षेत्र के उम्दा बोल्शेविकों को भी अपने ध्यान मे रखना होगा।"

"कामरेड रेजनिक : लेकिन यह भी याद रखिये कि वहां के हालात यहां जैसे अच्छे नही है।" (हँसी)

"कामरेड ग्रेभनेव : साथियो धन्यवाद ! जहां तक होड का सवाल है, यह स्वस्थ भी रहेगी और इसकी प्रकृति बोल्शेविक भी रहेगी।"

□ □

इस तरह मैंने अपनी नयी जिम्मेदारी पर काम करना शुरू कर दिया।

इसमे संदेह नही कि जहां मैं पैदा हुआ था और जहां मेरा पालन-पोषण हुआ था, देश के उस अंचल से मेरा सपर्क कभी नही टूटा था। जापोरोभये में काम करते समय मैं हर मौका निकाल कर अपनी मां और अन्य रिश्तेदारों को देखने और उस फैक्टरी पर मिलने-जुलने चला जाया करता था और काम पडने पर अपने पडोसी अचल के केन्द्र को भी जाता रहता था। यहीं पर मैंने क्षेत्रीय पार्टी समिति में पिछले सहकर्मियो को बुलाया था और उनसे मुलाकात की थी और अब मैं फिर अपने घर वापस आ गया था और वापस भी एक लंबे अर्से के लिए आया था। क्षेत्रीय पार्टी समिति का प्रथम सचिव चुने जाने पर अब अपने साथियों के साथ विताये गये पिछले दिनों को ही नही याद करता था बलिक भावी प्रश्नों को भी उठाता था।

युद्ध से पहले यह क्षेत्र अपने लौह-उद्योग के लिए अपनी दर्जनों लोहे और

मैंगनीज़ की खानों, गेहूँ और बाजरे की अच्छी पैदावार और अपनी बहुत ही दुधारी नस्ल के पशुओं के लिए मशहूर था। यह उक्रइन के कृषि और उद्योग की दृष्टि से आगे बढ़े हुए क्षेत्रों मे से था और मुझे युद्ध के पहले इस क्षेत्र का खासा अच्छा ज्ञान था। अब मुझे नये सिरे से और बहुत तेजी से इसका अध्ययन करना था ताकि मैं सही जमीन पा सकूँ, यहाँ की कठिनाइयों और तात्कालिक कार्यों का अन्दाज़ा लगा सकूँ और भावी सम्भावनाओं की रूपरेखा तैयार कर सकूँ।

यहाँ भी बरबादी बहुत बड़े पैमाने पर हुई थी। फासिस्टो ने 657 बड़ी इमारतो और 28 अस्पतालों को या तो उड़ा दिया था या धराशायी कर दिया था। उन्होने जर्मनी को 68 किलोमीटर ट्राम पटरियाँ और 100 कि० मी० तांबे के ट्राली तार भेज दिये थे। ऑपेरा और बैले थिएटर, कला संग्रहालय, विश्व-विद्यालय और लगभग सारे-के-सारे स्कूल और संस्थान, रेलवे स्टेशन और रेलवे पुल बर्बाद कर दिये थे। उन्होंने धातु-विज्ञानियो के खूबसूरत प्रासाद को अस्तबल के रूप मे इस्तेमाल किया था। इसके विशाल हॉल को उन्होने स्टालो में बांट रखा था और लकडी के फर्श से घोडे की लीद की तीखी बदबू आ रही थी।

फासिस्टों ने एक बार फिर यहाँ धातु का उत्पादन शुरू करने की कोशिश की थी। जर्मनी की "स्टालवेरके-ब्राउनश्ब्वाइग", "बौस", "वेराइनिग्ते-अल्मूनियमवेर्के" और "युकर्स" जैसी कम्पनियों ने अपने लोगों को इस इरादे से भेजा था कि वे ज़ापोरोझ्ये के अल्मूनियम संयंत्र को नीपरोस्पेनेत्स्ताल और ज़ापोरोझ्ये लौह व इस्पात कार्यशाला को फिर से चालू कर सके परन्तु, हमारे छिपे संगठनों की कार्यवाईयों और मजदूरों के प्रतिरोध के कारण उनकी चालें बेकार हो गयी थी। यह सच है कि आक्रमणकारियों ने द्नीपरोपेत्रोवस्क मे एक उद्यम को चालू कर लिया था, पर उन्होने धमन-भट्टी और खुले चूल्हे की भट्टी को चालू करने की बहुतेरी कोशिशे करने और उनमें असफल रहने के बाद वे पेत्रोवस्की लौह व इस्पात कार्यशाला को ही खोल पाने में सफल हुए जो फूट जैली की एक कैन्डी फैक्ट्री से जरा भी कम या अधिक नही थी।

मुझे वह उल्लासमय दिवस आज भी याद है जब मेरे जन्म-स्थान के नगरो द्नीपरोपेत्रोवस्क और नीपरोत्जरझिन्स्क की मुक्ति का समाचार मिला था। उस *समय हमारे मुख्यालय त्यूमेन प्रायद्वीप पर स्थित थे और हम एक पुराने राजकीय* पशुपालन फार्म पर ठहराये गये थे। उसकी इमारतो मे हमारे रहने-सहने का इंतजाम था। 25 अक्तूबर 1943 की रात को जनरल ज़ारेलुआ दौड़ते हुए मेरे कमरे में आये और मुझे जगाकर कहा: "कितनी शानदार खबर है। द्नीपरोपेत्रो-वस्क आज़ाद हो गया। हमारी सेनाओं ने द्नीपरोपेत्रोवस्क और नीपरोत्जरझिन्स्क दोनों को आज़ाद करा लिया! मास्को तोप की सलामी देने जा रहा है!"

उस समय तक हम तोपखाने के विजय अभिवादनों के आदी हो चुके थे, पर

यह अवसर हमारे लिए विशेष महत्व का था।

जब मैं अभी युद्ध के मोर्चे पर था तभी नाजियों के भगाये जाने के बाद द्नीपरोपेत्रोवस्क के बारे में खबरें पाने के लिए हमेशा उत्सुक रहता था। अपनी मुक्ति के बाद तीसरे दिन (28 अक्तूबर 1943), पेत्रोवस्की के मजदूरों ने ताप और बिजली केन्द्र के एक टरबाइन को चालू कर दिया और इस तरह नगर को बिजली मिलने लगी। 1944 की गर्मियों में पहली खुले चूल्हे की भट्टी में काम करना शुरू किया। मेरे जन्मस्थान नीपरोत्जरझिन्स्क की कर्मशाला में फैक्टरी के फाटक के पास बागीचे में जो साधारण-सा स्मारक बना था, उसे देखकर मेरी आँखों मे आँसू आ गये. उसकी वेदी पर एक इस्पात का पिंड खड़ा था और उसके नीचे परिचय लेख मे लिखा था : 'नीपरोत्जरझिन्स्क से जर्मन आक्रमणकारियों के निकाल भगाने के 26 दिन बाद 21 नवम्बर 1943 को खुली चूल्हे की भट्टी नं० 5 से इस्पात का पहला पिंड निकला। कास्ट नं० 5-1 गलाने वाले—एफ० आई० मकल्स और जी० ए० पांक्रातेन्को।"

मुझे बताया गया कि फ्रांस आयोसिफोविच मैकल्स और बोर्देई आन्तिपोविच पांक्रातेन्को ने पहले इस्पात पिंड को सिर्फ गलाया ही नहीं था बल्कि उन्होंने फरनेस के महराव और दीवारों को उखाड़ा था,उस सालामादर को बाहर निकाला था और खुद ही भट्टी को सही हालत मे लाये थे। ये दोनों बुजुर्ग किस्म के बहुत ही दिलेर आदमी थे जिन्होंने गृहयुद्ध मे एक बख्तरबन्द ट्रेन पर जिसकी पत्तरों की जुडाई 1919 मे हमारी कर्मशाला में की गयी थी, तोपचियों के रूप मे मोर्चा संभाल रखा था। ये उन मजदूरों के प्रतीक थे जिनके विषय मे 1919 मे लेनिन ने अपने खास अन्दाज में कहा था, "समूची मानवता की बुनियादी उत्पादक शक्ति कुल मिलाकर मजदूर और कामगार लोग ही है। अगर वे जिन्दा है तो हम हर चीज को बचा लेंगे और सही हालत में ला देंगे।"

इस विचार की पूरी तरह से पुष्टि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद हुई थी। इस विषय मे मैं नीचे लिखे खयाल जाहिर करना चाहूँगा : दुनिया में आज दो प्रकार की समाज-व्यवस्थाएँ होड़ ले रही है। यह होड़ लेनिन के जीवन-काल मे शुरू हुई थी और यह आज भी चल रही है। दोनों के बीच तुलना अवश्यंभावी है अर्थात् प्रत्येक पक्ष ने जितना इस्पात, तेल, बिजली, अनाज व रुई पैदा की है उसके बीच तुलना। हम इस प्रकार की गणना करते है और हमारे वैचारिक शत्रु भी ऐसा ही करते हैं। उदाहरण के लिए, चूंकि वे यह मानने के लिए बाध्य है कि सोवियत संघ ने कई क्षेत्रों मे अमरीका की समकक्षता प्राप्त कर ली है और अनेक प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में उसे बहुत पीछे छोड दिया है, इसलिए ये जो हमारी विचारधारा के शत्रु है वे उन आर्थिक पहलुओं पर ज्यादा जोर देते हैं जिसमे इस सबसे बड़े पूंजीवादी राज्य ने अपनी श्रेष्ठता नहीं छोड़ी है।

इस मामने में वे दोनों पक्षों की ऐतिहासिक परिस्थितियों का जिक्र ही नही करते और अपनी जनता से इसे छुपाये रहते हैं। फिर भी इस प्रतियोगिता में जिसे वे ईमानदारी-पूर्ण वताते है, एक पक्ष तो विदेशी हमलों से महासागर द्वारा सुरक्षित है, और युद्ध पर अमादा है जवकि दूसरे को लगातार उकसाया जाता रहता है, उसे युद्ध और विनाश के भारी वोझ ढोने पडे है और जिसे अनेक क्षेत्रो में जैसा कि जापोरोझ्ये क्षेत्र और द्नीपरोपेत्रोवस्क के मामले में हुआ था (यह एक ऐसी चीज़ है जिसे मैंने अपनी आंखो से देखा है) उन्हे विलकुल नीव से शुरू करना पड़ा है। समूचे देश मे यही हालत थी। दूसरे विश्वयुद्ध ने हमारी राष्ट्रीय संपत्ति के एक तिहाई का सत्यानाश कर दिया था।

कोई यह सोच भी नही सकता कि यदि हमारी प्रगति मे वाधा नही पड़ गयी होती, यदि हमारी गाड़ी के आगे आडा नही बना दिया गया होता, यदि हमारे शातिपूर्ण श्रम को विचलित नहीं कर दिया गया होता और यदि हथियारो की होड मे अपने देश के वहुत सारे श्रम व धन को खर्च न करना पड़ता तो हमारे सामाजिक व आर्थिक विकास ने कितनी अधिक प्रगति की होती और यदि इन सारी वाधाओं व रुकावटों के वावजूद हमने अर्थव्यवस्था, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र मे इतना असाधारण ऊँचा स्तर प्राप्त किया है, जिससे हमने अपनी महान अक्तूबर सामाजिक क्रांति की 60वी जयन्ती का स्वागत किया है तो फिर हमारी सोवियत प्रणाली और हमारी जनता की अपनी निजी शक्ति कितनी अथाह है।

जापोरोझ्ये मे मेरा काम सिर्फ एक साल तीन महीने तक ही चला था, लेकिन द्नीपरोपेत्रोवस्क को तवादला होने तक मैंने इसी बीच खासा अनुभव अर्जित कर लिया था। वहाँ पहुँचकर मैंने फैक्ट्रियों और सामूहिक फार्मों पर जाना शुरू कर दिया। निर्माण-स्थलो पर भी अक्सर मैं हाज़िर हो जाया करता, खानों मे जाता और लोगों से संपर्क करने के जितने भी मौके मिल सकते थे, उनसे मिलने की कोशिश करता था। पार्टी के काम की प्रकृति तो बहुतों को मालूम ही है। मैं यहाँ किसी और ही चीज़ अर्थात इस तरह के काम की शैली की वात करूँगा। उस समय तक काम के अनुभव, युद्ध, मानव संपर्क, अध्ययन और चिंतन ने निश्चय ही मेरे काम करने और जीने की शैली निर्धारित कर दी थी। सिद्धांततः हमारे सभी नेताओं की एक ही कार्यशैली होनी चाहिए और वह है पार्टी-भावना मे लेनिनवादी शैली। मोटे तौर पर स्थिति यही है, पर इसके भीतर हर आदमी के अपने कुछ लक्षण हो सकते है। कार्यो में, कर्तव्यों के दायरे में और क्षेत्रीय पार्टी समिति के प्रथम सचिव की जिम्मेदारियों की मात्रा के मामले में इन सामान्य लक्षणो के वावजूद मानवीय तत्व की अपनी झलक पडने से नहीं रह सकती।

द्नीपरोपेत्रोवस्क मे मैंने एक ऐसे व्यक्ति से कार्यभार संभाला था जिससे मेरा परिचय युद्ध से पहले के दिनो मे हुआ था; उनका नाम था पी० ए० नायद्योनोव

और उन दिनों वह क्षेत्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष थे। युद्ध में मँजकर वह एक सक्रिय और ओजस्वी नेता बने थे। वह अत्यंत सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे और मेरे बहुत अच्छे साथी थे। मेरे मन में उनकी बहुत सुन्दर याद बनी हुई है। खैर, उनके काम में कुछ खामियां भी थीं और उस क्षेत्र के हालात बहुत अच्छे नहीं थे जिसका नतीजा यह हुआ कि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केन्द्रीय समिति में नेतृत्व परिवर्तन का सवाल उठा दिया गया था।

द्नीपरोपेत्रोवस्क में मेरे जीवन के अनुभव भी उपयोगी सिद्ध हुए। मुझे सबसे बड़ी फैक्ट्रियों के प्रबंधकों के साथ अपनी पहली मुलाकात की याद है। कटाई का काम पूरे जोर पर था और मैंने क्षेत्रीय पार्टी समिति के कृषि विभाग के अध्यक्ष एफ० येo गान्ज़िन से पूछा कि मोटर परिवहन की हालत कैसी है। जवाब वही था जिसकी मुझे उम्मीद थी : हालत खराब थी। जब मैंने सवाल किया कि क्या नगर से हमें मोटर ट्रकों की सहायता मिल सकती है तो उन्होंने जवाब दिया कि विभिन्न फ़ैक्ट्रियों को अस्थायी तौर पर कितनी मशीनें दी जानी चाहिए, इसके विषय में हिदायतें भेजी जा चुकी है, पर फैक्ट्री प्रबन्धक कार्रवाई करने में सुस्त है और यहाँ तक कि वे धोखाधड़ी से भी काम लेते है। यदि वे काम के लिए मोटर-ट्रकें भेजते भी हैं तो निहायत रद्दी।

इस मामले मे काम की पद्धति बिलकुल गलत थी। शीर्ष पदो पर ऐसे व्यक्ति थे जो मनमाने ढंग से छाँट लिये गये थे और नीचे के लोग टालू ढंग से कार्रवाई करते थे। इनकी अपनी फैक्ट्री योजनाएँ थीं जिनकी ओर वे ध्यान दिया करते थे। ऐसी हालत में जो लोग ट्रकों की माँग करते थे, और वे जो इनकी व्यवस्था करते थे, दोनो ही अच्छी तरह जानते थे कि यदि चालीस ट्रकों का वायदा किया गया था तो 20 ट्रकों से अधिक की उम्मीद नहीं की जा सकती। यही हालत साल-दर-साल चली आ रही थी। मैं टेलीफ़ोन पर बैठ गया और मैंने निकोपोल ट्यूब और पाइप फ़ैक्ट्री के एन० ए० तिखोनोव से टेलीफ़ोन मिलाने को कहा। मैंने उनसे हैलो किया, अपना परिचय दिया और फिर बोला :

"निकोलाई अलेक्सान्द्रोविच, मैं आपकी फैक्ट्री में तो जरूर आऊँगा, पर बाद में। और इस समय मैं आपसे चाहूँगा कि आप मेरी मदद करें। बहुत अच्छी फ़सल पक कर तैयार खड़ी है। मुझे मालूम है कि आप एक दक्ष प्रबन्धक है और यह कि आप एक प्रथम श्रेणी की फ़ैक्ट्री के इंचार्ज हैं। यदि आप फसल की कटाई में हमारी मदद करें तो हमें बहुत खुशी होगी। मुझे सिर्फ़ इतना चाहिए कि आप हमें सबसे अच्छे ड्राइवर दे और ऐसी ट्रकें दें जो काम करने की दृष्टि से अच्छी हालत में हों।"

कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने कहा, "मैं आपको 15 ट्रकें दे सकता हूँ।"

"इस मामले पर सोचिए और अपने आदमियों से सलाह-मशविरा कीजिए।

एक भी दाना बेकार गया तो बड़े अफसोस की बात होगी।"

दूसरे कारखाने के मैनेजरों से भी मैंने बहुत कुछ इसी लहजे में बात की। मैंने जितनी ट्रकों की मांग की थी यद्यपि वे सभी तो नहीं मिल पाईं, पर जो मिली वे सभी सचमुच बहुत अच्छी हालत में थी और इनकी संख्या पिछले सालो से लगभग दुगनी थी और यह सारा कुछ सिर्फ शान्त और दोस्ताना लहज़े में बात करने के फलस्वरूप हो गया।

उस समय तक मैंने यह पूरी तरह समझ लिया था कि यदि सिद्धांत के भी मतभेद पैदा हो तो भी किसी को दूसरे व्यक्ति को झाड़ बताने या अपमानित करने से परहेज़ रखना चाहिए। आप कह सकते है कि 'आप बकवास कर रहे है" लेकिन दूसरी ओर यदि आपत्ति पूरी ईमानदारी से की गयी हो तो भी आप यह भी तो कह सकते हैं कि "आपकी सलाह के लिए धन्यवाद। हम इस पर विचार करेंगे लेकिन, मान लीजिए हम इस पर इस तरह से कोशिश करें तो...?" मैंने महसूस किया कि व्यक्ति की भावनाओं पर कड़ी लगाम लगाने की जरूरत है। पार्टी ने आपको कोई पद सौंप रखा है पर इससे आपको नासमझी-भरे शब्दों का इस्तेमाल करने का अधिकार तो नही मिल जाता। मैं जब कभी किसी सभा में जाता तो मैंने यह एक नियम-सा बना रखा था कि दूसरों से सचमुच सलाह-मशविरा लूं। मैं सभी को अपने विचार प्रकट करने का अवसर देता था और कभी अपने विचार जल्दबाजी मे जाहिर नही करता। कुछ कामरेड ऐसे होते है जो हमेशा ठकुरसुहाती कहना ही पसन्द करते है।

नेता हमेशा जनता की नजर मे होता है। इसी कारण उसे कभी यह प्रकट नही होने देना चाहिए कि वह असमंजस में है या उसे कोई कमजोरी नही जाहिर करनी चाहिए। उसके दिल मे चाहे जो भी क्यों न हो, उसे शान्त और स्थिर-चित्त बना रहना चाहिए। उसे प्रसन्न दिखना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा अनुभव कराना चाहिए। कभी-कभी हम परिहास के महत्व को नजरअंदाज कर जाते है। फिर भी कभी-कभी एक अच्छे मजाक से ही अवसर काम बन जाता है।

कृषि की उन्नति और अच्छी पैदावार सुनिश्चित करने की दृष्टि से सामूहिक फार्मों को उद्योग द्वारा दी जाने वाली मदद को हम बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। ढके हुए कैसिंग-फ़्लोरों की बहुत सख्त जरूरत थी। बेशक इसके लिए हम अनिवार्य कोटो, फरमाइशों व झिड़कियो का सहारा ले सकते थे परन्तु, मैंने एक दूसरा ही तरीका अपनाने का निश्चय किया। एक मौके पर जब फैक्टरी प्रबंधक एफ० एन० यालाकिन, एन० पी० पोपोव, आई० आई० कोरोबोव, पी० वी० साबकिन तथा दूसरे अनेक लोग क्षेत्रीय पार्टी समिति में उत्पादन से संबंधित मसलों पर विचार-विमर्श करने के लिए एकत्र हुए तो मैंने अकस्मात कहा :

"मैंने सुना है कि प्योत्र वसिलिएविच साबकिन ने कहा है कि वह बीस ढके

हुए मड़ाई फ्लोरों को साज-सामान से सज्जित करेंगे।"

लेनिन कार्यशाला के प्रबंधक और समाजवादी श्रम के भावी हीरो सावकिन को यह बात कुछ चुभ गयी। "लियोनिद इल्यीच, मुझे डर है कि मैं बीस का इन्तजाम तो नही कर पाऊँगा लेकिन लगभग नौ तो कर ही लूँगा।"

"ठीक है, सौदा पक्का रहा और इल्या इवानोविच का क्या खयाल है ?"

बाद मे हम इस बात को लेकर काफ़ी हँसते रहे, लेकिन बात काम कर गयी। एक दूसरे मौके पर जब गर्मी अपने पूरे जोर पर थी मैंने क्षेत्रीय योजना बोर्ड के अध्यक्ष और एक दूसरे साथी से जो कि क्षेत्रीय पार्टी समिति के सदस्य थे और स्थानीय उद्योग के इंचार्ज थे, मौका मिलते ही मिलने को कहा। हम कुछ नेमी किस्म के सवालों पर चर्चा कर रहे थे कि तभी मैंने बड़े चालू अंदाज में कहा: "क्वास का एक दौर चले तो कुछ ख़ास बुरा नही रहेगा, क्यों ?"

"बिलकुल नही रहेगा।" दोनों सहमत हो गये।

"क्या यह यहीं तैयार होता है।"

"नही...अभी तक तो नही।"

मैंने एक बटन दबाया और जैसा कि हमने पहले से ही इन्तजाम कर रखा था, हमारे स्टाफ की एक महिला सदस्य अपने घर की बनी हुई क्वास का एक मग लेकर भीतर घुसी।

"अब ख़ुद डालिये और पीजिये...।"

जी० एम० द्रयुचेन्को, जो क्षेत्रीय योजना बोर्ड के अध्यक्ष थे, मेरे पुराने मित्रों मे से थे। बरसों पहले बैकाल क्षेत्र मे हम दोनों ने एक ही टैंक कम्पनी में सेवा की थी। उन्होने मेरा इरादा तुरत भाँप लिया।

"अच्छा ग्रिगोरी, तुमको क्वास कैसा लगा ?" मैंने उनसे पूछा।

"हम अब काम की ही बात करें। आज ही मैं इसके लिए उपयुक्त व्यक्तियों को बुलाऊँगा।" उन्होने जवाब दिया।

मैंने कहा: "तुम्हे अपने पर शर्म आनी चाहिए यदि यहाँ इतनी गर्मी पड़ रही है तो सोचो खुले चूल्हे और धमन-भट्टी-घरों की क्या हालत होगी। मजदूर अपनी प्यास कैसे बुझाएँगे ? क्या यह क्षेत्रीय योजना बोर्ड और स्थानीय उद्योग की सीधी जिम्मेदारी नही है ? तुम इसका इंतज़ाम कब करोगे...कितनी जल्द ?"

काम बन गया। क्वास उसी ग्रीष्म में वहाँ मिलने लगी।

सभी किस्म के लोग होते हैं और उन्हे विभिन्न रीति से संभालना चाहिए। कभी-कभी ख़ामोशी बडी बोलती है। मुझे पेत्रोवस्की कारखाने की एक नाजुक हालत याद आती है: अनेक कामों के पूरे होने की प्रतीक्षा के कारण और डिजाइनरों, निर्माण-कार्यकर्ताओं और उपठेकेदारों मे मतभेदों के कारण रेल-ढाँचे

की मिल को समय पर चालू करने का समय खतरे में था। मुझे क्षेत्रीय पार्टी कमेटी का एक विशेष सम्मेलन बुलाना पड़ा जहाँ तर्क-वितर्क अनन्त रूप से चलता रहा। अधिकांश उपस्थित लोग कार्यशाला के अधिकारियों को दोष दे रहे थे कि वे उसको चालू करने के लिए स्वीकार नहीं कर रहे हैं। अन्ततः सम्बन्धित कार्यशाला के सुपरिंटेंडेंट मंच पर आये और उन कमियों को अपनी उंगलियों पर गिनाने लगे जिनके कारण देरी हो रही थी : ढीले नट, मशीनों पुर्जों का गलत जगह रखा जाना, बिजली व्यवस्था मे कमज़ोरियाँ, आदि। संक्षेप में, उन्होंने स्वीकृति के दस्तावेज पर दस्तखत करने से इनकार कर दिया; आखिरकार मिल तो उन्हें ही चलानी थी।

जब सब अपनी बात कह चुके तो वे सभी प्रथम सचिव से आशा करते थे कि वे सदा की तरह निष्कर्ष पेश करेंगे और शायद फटकार तक देंगे।

मगर मैंने सिर्फ इतना ही पूछा :

"साथियो, आपको क्या करना है, क्या यह आपके सामने स्पष्ट है ?"

"स्पष्ट है," जवाब मिला।

"तो उठिये और उसे कर डालिये !"

निष्कर्ष में मैंने इतना ही कहा : मैंने देखा कि सम्मेलन के लिए तैयारी करते समय उन्होंने अपने मतभेद समझ लिये थे और अपनी जिम्मेदारियाँ समझ ली थीं। महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें सचेत बनाया जाये कि क्षेत्रीय पार्टी कमेटी उस महत्वपूर्ण परियोजना पर नज़र रख रही थी, और मुझे विश्वास था कि वे अपनी जिम्मेदारी संभालने लायक सिद्ध होंगे—जो उन्होंने सिद्ध कर दिखाया।

□ □

पार्टी की द्नीपरोपेत्रोवस्क क्षेत्रीय कमेटी मे कर्मचारियों के चयन, नियुक्ति और शिक्षा पर काफी ध्यान दिया गया। समस्या उस समय बड़ी संगीन थी : मोर्चे पर, छापामार युद्ध मे और भूमिगत आंदोलन मे हज़ारों पार्टी सदस्य और सरकारी कर्मचारी खेत रहे थे। उनकी जगह जो लोग काम कर रहे थे, उनमें अनुभव और ज्ञान की कमी थी। "नेतृत्व का प्रश्न कर्मचारियो का प्रश्न है," यह हमारे काम का पथ-प्रदर्शक सिद्धांत था। क्षेत्रीय पार्टी कमेटी की ब्यूरो की बैठक में प्रमुख पदो के लिए कम्युनिस्टों के राजनीतिक और व्यावहारिक गुणों पर अक्सर विचार किया जाता था, और पहल तथा क्षमता वाले लोगो को साहसपूर्वक पदोन्नति देने

का आह्वान दिया जाता था। वक़्त ने दिखाया कि इस मामले में हम कोई गलत नहीं थे।

निश्चय ही सुस्त लोग थे, ऐसे नेता थे जो "जंग लगी" या "दीमक खायी आत्मा" वाले बन गये थे (उस समय की रिपोर्ट के शब्द), और ऐसे लोगों की ओर हम समझौताहीन थे। दिसंबर 1947 में देश मे मुद्रा-सुधार किया गया और कुछ ऐसे चतुर लोग थे जिन्होने सरकारी पद तथा विनिमय की दर के पूर्व-ज्ञान का लाभ उठाकर अपना पैसा जल्दी से बचत-बैंकों में जमा कर दिया ताकि मुनाफे कमाये जा सकें। मैंने ऐसे लोगो को पार्टी से निकालने पर ज़ोर दिया। इसी प्रकार उन लोगों को उच्च पदों से (और किसी अन्य महत्वपूर्ण पद पर स्थानांतरित किये बिना) हटाये जाने की माँग की जिन्होंने अयोग्यता और असगत रुख के कारण काम में गड़बडी की। निश्चय ही, उनमें से कुछ के लिए दुख महसूस होता था, मगर राज्य को क्षति पहुँच रही हो तो उदार नहीं होना चाहिए।

मगर जो लोग काम मे अपनी योग्यता सिद्ध कर चुके थे और विश्वसनीय थे उन्हे क्षेत्रीय पार्टी कमेटी को यह महसूस कराना था कि उन पर भरोसा किया जाता है। क्षेत्रीय पार्टी कमेटी के सामान्य विभाग के प्रधान थे आई० एन० मालीरेवस्की, जिन्हें मैं युद्ध से पहले जानता था, और बाद में उनसे अनेक अवसरों पर मोर्चे पर मिल चुका था। द्नीपरोपेत्रोवस्क मे आने के बाद मैंने उन्हें बताया कि उन्हे जब भी मेरी सहायता की आवश्यकता हो, वे मुझसे अनुरोध कर सकते है। सचमुच ही, मैं अक्सर ही उनकी बात सुनता, उन्हे अपना समर्थन देता और जहाँ कही आवश्यकता होती, उन्हें सलाह देता। मैंने देखा कि वे अपने क्षेत्र के जानकार है और उन्हे जो काम दिया जाता है, उसके संचालन मे उनको पहलकदमी करने दी जानी चाहिए।

अपने साथी कार्यकर्ताओं को यह बताकर कि मैं उन पर भरोसा करता हूँ और अनेक सामयिक प्रश्नों पर फ़ैसले करने का भार उन्हें सौंपकर, मैं स्थिति का विश्लेषण करने, भावी समस्याओं का अध्ययन करने और सिद्धांत सबंधी कर्तव्य उठाने के लिए समय पा लेता था। ज़ापोरोझये तक मे मैंने इन कर्तव्यों में से प्रथम के विषय मे सुदृढ समझ हासिल कर ली थी : संगठनात्मक और पार्टी संबंधी राजनीतिक काम में यथार्थ प्रगति उपलब्ध की जानी चाहिए। फ़रवरी 1948 में क्षेत्रीय पार्टी सम्मेलन मे इस प्रश्न पर जो कुछ कहा गया था, वह इस प्रकार था :

"पार्टी के काम और आर्थिक प्रबंध मे सही रीति से संयोग स्थापित करना हमारा कर्तव्य है। यह एक कला है और इसे पार्टी काम के दौरान सीखना चाहिए...।"

मैं यह भी बता दूँ कि मुझे भी सदा सीखते रहना होता था। निश्चय ही, यह

एक ऐसा काम है जो सबके लिए परमावश्यक है : परिस्थिति हर समय बदलती रहती है और ताज़ी समस्याएँ पैदा होती रहती है। अगर पार्टी नेता पीछे नही पडना चाहता तो उसे सारे जीवन सीखते रहना पड़ेगा।

मैं जब द्नीपरोपेत्रोवस्क पहुँचा तो पुनर्वास के काम में नया दौर शुरू हो गया था · फैक्टरियाँ फिर चलने लगी थी। इन कारखानों की अनेक शाखें अभी खंडहर पड़ी थी और अनेक खानों मे पानी भरा था, उद्योग गति पकड़ रहे थे। आवास-निर्माण, सांस्कृतिक कार्य और रोजमर्रा की आवश्यकताओं पर ध्यान देने का समय आ गया था। यह समस्या कितनी संगीन थी, इसको समझने के लिए मैं नीपरोत्जरझिन्स्क के 10वें नगर सम्मेलन मे दिये गये भाषण का यह अंश पेश करना चाहता हूँ :

"मैं इस सदन मे अपने अनेक मित्रो, भूतपूर्व साथी छात्रों को देख रहा हूँ जो अब शाप सुपरिंटेंडेंट और शिफ्टों के प्रधान हैं जैसे कामरेड लेविनोव, ओलेइनिक और ग्रेचकिन। उनसे तथा आप सबसे मैं बिलकुल साफ कहना चाहता हूँ कि क्षेत्रीय और शहर पार्टी कमेटियों ने आवास समस्या पर काफी ध्यान नही दिया है। स्थिति कहाँ तक पहुँच गयी है इसको इस सम्मेलन में पेश की गयी मेरी रिपोर्ट से देखा जा सकता है जिसमें कहा गया है कि आवास-लक्ष्य सिर्फ 11 प्रतिशत पूरा हुआ है।"

श्रोताओं में से एक आवाज़ : "सात प्रतिशत ही।"

"सात प्रतिशत भी। यह शर्मनाक है ! हम मजदूरों को यहाँ काम पर टिके रहने की आवश्यकता की बात करते है और फिर भी हम इस तरह की स्थिति सहन करते है। नव-निर्वाचित शहर और क्षेत्रीय पार्टी कमेटियों को ऐसी बातों का खात्मा करना चाहिए। लोगों ने युद्ध-काल मे काफी सहा और हमारी विजय की खातिर काफी तकलीफे बर्दाश्त की, और उन्हें हक है कि वे रहन-सहन की बेहतर परिस्थितियो की माँग करें। हम बोल्शेविको ने मेहनतकश जनता से उच्चतर भौतिक और सांस्कृतिक स्तरो का वायदा किया था। हमे ये वायदे निभाने चाहिए !"

स्थिति जिस बात से उलझ गयी थी, वह यह थी कि स्थानीय सोवियतों के पास धन की कमी थी और उन पर अधिकांशत. वर्क्स मैनेजरो का नियंत्रण था, जो शहर-निर्माण मे भाग लेने से इनकार करते थे। द्नीपरोपेत्रोवस्क मे शहर के केंद्रीय भाग का लगभग अस्तित्व नही था; कार्ल मार्क्स मार्ग अभी खंडहर पडा था और आस-पास मज़दूरों की आदिम बस्तियाँ उभर रही थी। एक यह सिद्धांत सामने लाया जा रहा था कि धमन-भट्टियों, इस्पात गलाने और रोलिंग मिल शापों के प्रधानों को कारखाने में ही रहना चाहिए। अभी टेलीफोन या ट्राम सेवा नहीं थी और न मोटर-गाड़ियाँ थी; बहुत हुआ तो घोड़ा-गाड़ियाँ सुलभ थी। (मुझे एक

अफ़सर का स्मरण आता है जिससे जब पूछा गया कि वह मीटिंग मे देर से क्यों आया तो उसने धीमे से जवाब दिया, "मेरे पास कार नही है और मेरे घोड़े की मरम्मत हो रही है")।

वर्क्स मैनेजर लोगों के लिए कानूनी सस्ते काम-चलाऊ मकान नही, आधुनिक सुविधा-संपन्न मकान बनाने होते है और वह भी शहर के बाहरी भाग मे नही, केंद्र मे होने चाहिए। वर्क्स मैनेजरों से अपनी व्यक्तिगत बातचीत में मैं उन्हे यह तथ्य समझाने का प्रयत्न करता कि उनकी संकुचित मकान निर्माण-नीति की किफायतशारी एक भ्रम है। क्षेत्रीय पार्टी कमेटी के ब्यूरो में इन प्रश्न को अधिकृत रूप से लिया जा रहा था, इस बात पर बल देते हुए कि शहर की मुख्य सड़कों पर आधुनिक मकान बनाये जायें जहाँ चोटी के मजदूर, अपंग भूतपूर्व सिपाही और युद्ध में शहीद हुए लोगों के परिवार बसाये जाये—उन्हे यह महसूस हो कि पार्टी और सरकार उनके जीवन सुधारने में दिलचस्पी लेते है। मगर चीजें धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं।

मई 1948 के अंतिम दिनों मे मैंने निकोपोल, पावलोग्राव, क्रिवोयरोग, नोवोमास्कोवस्क और मार्गनेतस जाकर पूरे क्षेत्र का दौरा किया। मैंने ऐसा बहुत कुछ देखा जिससे मेरे इरादे सही साबित होते हैं। तब मैंने इन प्रमुख विभागो (वर्क्स) के मैनेजरों की बैठक बुलायी और उन्हे साफ बताया कि क्षेत्रीय पार्टी कमेटी अब कोई संकुचित और खंड-खंड नीति-रीति सहन नही करेगी और समय आ गया है जब शहर के बाहरी क्षेत्र पर भी ध्यान दिया जाये। मैनेजरों ने सावधानी से प्रतिक्रिया प्रकट की : वे इस नीति-रीति के समर्थक थे, मगर उन्होंने कहा कि इसके लिए धन अभी सुलभ नही है। और न अच्छे डिजायन सुलभ थे तथा निर्माण सुविधाओं की स्थिति भी बुरी थी। अन्य बाते वही कही गयी जो ऐसे अवसरों पर कही जाती है।

"मेरा एक सुझाव है," मैंने अंत मे कहा, "हम सब लोग चलें और कोई उच्च गति वाली सुसंगठित निर्माण परियोजना देखें। तब हम यह फैसला कर सकते हैं कि कौन-सी विधि का अनुसरण किया जा सकता है। हमें कोई बहुत दूर यात्रा नही करनी पड़ेगी। क्या आप सहमत है ?"

"हम सहमत हैं," उन्होने जवाब दिया।

'तो फिर, हम लोग मामले को टालेंगे नही। हम लोग कल सुबह 7 बजे क्षेत्रीय पार्टी कमेटी के बाहर मिलेंगे।"

सात बजे सुबह हम सब—मैनेजर लोग, निर्माण कारपोरेशनो के प्रधान, शहर पार्टी कमेटी और शहर कार्यकारिणी समिति के अधिकारी—कई कारो में रवाना हुए। जहाँ तक मुझे याद है, बड़ी उदास सुबह थी। हम लोग एक ढलान के किनारे बनी झोपडियों की बस्ती, मांद्रीकोवका, के बीच से गुजरे और ऊबड़-

खाबड सड़क से दक्षिण की ओर बढ़े। लगभग सारी सड़क वीरान थी : हमें न कोई राहगीर दिखायी दिया और न एक भी कार। सड़क के किनारे के पेड जले खड़े थे और खेतों मे टेढी-मेढी खाइयाँ बनी हुई थीं। यहाँ-वहाँ एकाध ट्रैक्टर और कब्जे में आये ट्रक-ट्रेलर दिखायी दे जाते थे। हम लगभग दो घंटे तक चलते रहे और फिर एक चढाव पर चढे। नीचे नीपर जल-विद्युत केंद्र के बाँध का दृश्य दिखायी दे रहा था और उसके पार एक निचले स्थान पर एक बडा सफेद शहर फैला था। उसी क्षण सूरज बादलों से बाहर निकला, उसकी किरणें खिड़कियों से प्रतिबिंबित हो रही थी, जिससे इमारतें ऊँची और चमकदार लग रही थी।...मेरे हृदय पर मधुर भाव छा गया : मैं पडोसी क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में जापोरोझये आ गया था और फिर भी यह वह जगह थी जो मेरी थी।

ठीक ही कहा जाता है कि किसी चीज़ के बारे में सौ बार सुनने के बजाय उसको एक बार देखना बेहतर है। अनेक साथियों ने एस्फाल्ट कंक्रीट देखी जिसके बारे मे मैंने उनसे कई बार चर्चा की थी, और स्थानीय निर्माण मजदूरों द्वारा जो केबिल क्रेनें इस्तेमाल की जा रही थी, उनमे और विशेषकर जिस तरह "पीयसिंग मेथड" से (ज़मीन मे मशीनों के बल प्रवेश कराकर) पानी की पाइप-लाइनें डाली जा रही थी, उसमे उन्होने गहरी दिलचस्पी दिखायी।

800 मि०मी० के पाइपों को हाइड्रौलिक जैकों से मिट्टी में नीचे धँसाया जा रहा था : शहर के एक ब्लॉक की पूरी लंबाई हमारे सामने थी। निश्चय ही बहुत-से प्रश्न पूछे गये : कार्यक्रम के बारे मे, लागत, श्रम उत्पादकता और इमारती सामानों के बारे में। बाद मे हम लोगो ने मज़दूरों की एक कैंटीन मे भोजन किया और रात देर से घर लौटे। वापसी में ऐसा लगा कि बावुश्किन और लीवकनेख्त वर्क्स के मैनेजर-गण ज़ापोरोझये की ऊँची उठ रही इमारतों से बड़े प्रभावित हुए थे और उनके डिजाइन का उपयोग करने की समझ तक पहुँच गये थे।...आधे वर्ष बाद हमारे शहर की मुख्य सड़क भी उसी तरह के भवनों पर गर्व करने लायक हो गयी और शहर केंद्र का पुनर्निर्माण तेज हो गया। चीजें निश्चय ही चल पडी थी।

इस मामले मे मेरा खयाल है, सबसे अधिक विशिष्ट है वह जो बाँध के किनारे के साथ हुआ। आज वह शहर मे सबसे सुंदरतम स्थल है, किंतु उन दिनों फासिस्ट उसको खंडहर बनाकर छोड गये थे। मैं अपने दिमाग में देख सकता था कि जब उसका पुनर्निर्माण हो जायेगा तो वह कैसा नज़र आयेगा मगर हमारे मैनेजर-अधिकारी मेरे द्वारा प्रस्तुत उज्ज्वल परिप्रेक्ष्य पर सिर्फ़ सिर हिलाते रहते थे : "ऐसे सौंदर्य को देखने के लिए कौन जीवित रह जायेगा?" मगर वे सभी इन दिनों को देखने के लिए जीवित रहे। शीघ्र ही लोगों ने समझ लिया कि नीपर का तट रिहाइश के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थल होगा (वास्तव मे, नीपर को इस विषय पर बहुत

कुछ कहना है !) और वहाँ प्लाट पाने के लिए प्रार्थना-पत्र भेजने लगे, मगर उन्हें पता चला कि शहर सोवियत ने लगभग सारी भूमि को आवास परियोजनाओं के लिए आवंटित कर दिया है।

निश्चय ही कठिन युद्धोत्तर काल में हमारे देश ने उपलब्ध साधनों का काफ़ी बड़ा भाग कृषि और उद्योग के पुनर्जन्म पर लगाया—जो उस समय एकमात्र सही और विवेकसंगत काम था। मगर इस सही नारे को कभी-कभी काम में ढील, कुप्रबंध और अच्छी रीति से काम करने में मात्र असमर्थता को छिपाने के लिए काम में लाया जाता था।

इस बीच पिछड़ी हुई आवास व्यवस्था, यातायात सेवाओं और सांस्कृतिक सुविधाओं के कारण अनिवार्यतः श्रम उत्पादकता पर और फलतः उत्पादन के विकास पर कुप्रभाव पड़ा।

क्षेत्रीय पार्टी कमेटी ने माँग की कि पार्टी कार्यकर्त्ता, सरकारी अफ़सर और आर्थिक मैनेजर अपने काम में पहलकदमी दिखायें।

मैंने एक बार उक्रइन की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की द्नीपरोपेत्रोवस्क नगर कमेटी के सचिव के०के० तारासोव और पी० एफ० ख्रायुनोव और शहर कार्यकारिणी के अध्यक्ष एन० वाई० गावरीलेंको से कहा, "एक बड़ा झोला लो और मास्को जाओ। मंत्रियों से भेंट आश्वस्त कर लो। उन्हें विनाश के बारे में बताओ और फोटोग्राफ दिखाओ। उन्हें हिस्से के आधार पर एक वाटर-टावर, एक ट्राम-व्यवस्था, किंडरगार्टेन और मकान बनाने के लिए धन देने को प्रेरित करो। बताओ कि आपके स्वयं के मजदूरों को इसकी आवश्यकता है। संकल्पपूर्वक उनके दफ़्तर में घुसो और अपनी माँगें दृढ़ता में पेश करो: आप कम्युनिस्ट हैं और एक कम्युनिस्ट को साहसी होना चाहिए।"

ऐसी कार्यवाही आवश्यक थी और उसके अच्छे नतीजे हुए। फैक्टरियाँ सार्वजनिक बाग-बगीचों के लोहे की रेलिंगें और बिजली के खंभे बना रही थी और ट्राम के लिए तारों के खंभे खड़े होने लगे। फैक्टरियों और आफिसों के हजारों मजदूर-कर्मचारी रविवार को स्वयंसेवी काम कर रहे थे, मलबे साफ करते हुए और पेड़-पौधे रोपते हुए। तभी शहर के सुंदर चकालोव और शेवचेंको पार्क बनाये गये। बच्चों की एक रेल शुरू हुई—जो बड़े मनोरंजन का साधन थी। बाद में ट्रेड यूनियनों की अखिल-यूनियन केंद्रीय-परिषद ने कैथेराइन के काल के महल का पुनरुद्धार करने के लिए धन दिया। वह विद्यार्थियों को दिया गया, इसलिए उनमें से प्रत्येक ने निर्माण-स्थल पर 50 घंटे मुफ़्त काम कर योगदान किया। विद्यार्थियों का सांस्कृतिक सदन इस तरह बना, जो स्थापत्य कला का शानदार नमूना है और द्नीपरोपेत्रोवस्क का अत्यंत लोकप्रिय युवा क्लब है।

मगर यहाँ हमें निम्नलिखित बात जोड़ना है : जनता से पहलकदमी की माँग

करते हुए पार्टी नेता को अग्नि-परीक्षा के क्षणों में उनकी सहायता करनी चाहिए और जिम्मेदारी उठानी चाहिए। निकोपोल पाइप वर्क्स के मैनेजर, एन० ए० तिखोनोव, एक उदाहरण हैं। उन्होंने शायद अन्य लोगों की तुलना में अपने मजदूरों के कल्याण की भली-भाँति देख-रेख की और उनका कारखाना सुचारु रूप से चल रहा था। (और यह स्वाभाविक भी था: जहाँ लोगो की चिंता न की जाये, वहाँ आप अच्छे काम की आशा भी नही कर सकते)। क्षेत्रीय पार्टी कमेटी की नीतियों के अनुसार तिखोनोव ने मजदूरो के लिए एक अस्पताल खोला और अच्छी कैंटीन भी; फासिस्ट आक्रमणकारियो द्वारा नष्ट-भ्रष्ट सडक की मरम्मत शुरू करायी और क्षेत्र मे वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने फैक्टरी क्लब की मरम्मत करायी। किंतु मुझे याद है कि उन्होने इस काम के लिए निश्चित सात लाख रूबल की रकम से तीन-चौथाई और अधिक खर्च किया। इस समय हमारे यहाँ तेवोस्यान आये हुए थे और जब हम तीनों साथ-साथ कार मे जा रहे थे, तब इवान फ्योदोरोविच तेवोस्यान ने मैनेजर की आलोचना की:

"आप क्या राकफेलर है? क्या आपको पैसा इसलिए मिला था?"

इस बीच कार रुक गयी और हम एक प्रभावशाली आकार की एक क्लब बिल्डिंग के सामने उत्तरे।

"हाँ," मैंने कहा, मानो मैं मंत्री महोदय का समर्थन कर रहा हूँ। "इसने अपने इस्तेमाल के लिए एक 'डाचा' (बंगला) बना डाला है।"

"हूँह," तेवोस्यान ने कहा। गाड़ी आगे बढी और एक नयी सड़क पर मुड़ गयी। यहाँ वे फिर बरस पड़े।

"मैं आपका क्या करूँ?" वह मैनेजर से मुखातिब हुए। "मुझे वित्त मंत्रालय से फ़ोन मिल चुका है; वे इस सडक के बारे में जानते हैं।"

"क्षेत्रीय-कमेटी भी इस बात को जानती है," मैंने जोड़ा। "बिना इस सड़क के, रातपाली असंभव होती। यह काम इन्होने मात्र अपने लिए नही किया है, इवान फ्योदोरोविच, न अपनी जेब भरने के लिए। अगर आप चाहे तो हम यह सड़क जनता के स्वेच्छित निर्माण-कार्य के रूप मे पूरा कर सकते हैं।"

और यही हमने किया और इस प्रकार एक अच्छे वर्क्स मैनेजर पर बिजली गिरने से बचा ली। क्षेत्रीय लोगो को इस बात की खबर लगी, क्योंकि ऐसी बातें बड़ी तेजी से उडती हैं, और यह निश्चय ही उपयोगी भी होता है और इसका अन्यत्र भी प्रभाव पड़ता है।

□□

व्यक्ति जिस प्रकार काम करता है, वह उसके सच्चे मूल्य का मापदंड है। जो अपना काम नहीं जानता या ऐसे पद पर बैठा होता है जिसको निभा नहीं सकता, वह देर-सवेर अपनी कमियों को छल-फरेब से या अन्य साधनों से पूरा करने की कोशिश करता है। जैसाकि रूसी परी-कथा-लेखक ने कहा है, "खुशामदी आदमी दूसरे के दिल में कोई कोमल जगह पा ही लेता है?"

"काम की बात करो," मैं ऐसे लोगों से कहता। "यहाँ तारीफ़ करने, नाक रगड़ने और मक्खन लगाने की कोई जरूरत नहीं है। क्षेत्रीय कमेटी में आपको इसके लिए नहीं बुलाया गया है।"

और अंत में : जब काम की शैली और दूसरे लोगों से संबंधों का प्रश्न आता है, तो मैंने महसूस किया कि दूसरे लोगों को अपनी रुचि के अनुसार ढालने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। अनिवार्यतः इससे कोई लाभ नहीं होता। पार्टी-नेता को अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं को, जैसा वह है वैसे ही, स्वीकार करना चाहिए और आश्वस्त कर लेना चाहिए कि वह उसके कमजोर पहलुओं को समझ लें, फिर भी उसे उनके सद्‌गुण भी देखना चाहिए। और उनका उत्तम उपयोग करना चाहिए। मुझे निम्नलिखित घटना याद आती है।

द्नीपरोपेत्रोवस्क में क्षेत्र के सबसे बड़े कारखाने, पेत्रोवस्की लौह-इस्पात कारखाने के मैनेजर इलया इवानोविच कोरोबोव से शुरू मे मेरी नहीं बनी। कोरोबोव कई पीढ़ियों पुराने सुप्रसिद्ध मजदूर-वर्गीय परिवार में जन्मे थे। उनके पिता माकेयेवका में सीनियर फ़ोरमैन थे और उनके भाई धमन-भट्टी-चालक थे; मेरा खयाल है, उसके बेटे और अब नाती-पोते भी इसी काम मे लगे होंगे। स्तालिन कोबोरोव-परिवार से परिचित थे और उनकी ख्याति राष्ट्रव्यापी थी। सब कुछ बढ़िया जमा होता, अगर कहीं—इस बात को बहुत सख्त शब्दों में न रखा जाये तो—कभी-कभी वे यथार्थ-बोध न खो बैठते, गुस्ताख न बनते।

उनके साथ मैंने अपनी रीति बरती और सदा ही नम्र आचरण बरतता। मैं अक्सर कारखाने जाया करता था, मजदूरों के साथ बातचीत और बैठकें करता था और कारखाने के स्टील स्मेल्टर नेवचास और सोत्स्को तथा हार्थमैन त्रोफिमोव जैसे मजदूरों की पहलकदमी का समर्थन किया करता था। मुझे कोबोरोव के सद्‌गुणों का भी पता था : वह सचमुच प्रथम श्रेणी के धमन-भट्टी-चालक थे।

और हालाँकि—मैं इस बात को छिपाऊँगा नही—उनके रोवदाव से काम लेने का ढंग थोड़ा खिझाने वाला था, फिर भी उनको नज़रंदाज़ करना पडता था क्योंकि वे काम अच्छा करते थे और यही तो सर्वस्व था।

1949 के अंतिम दिनों में उक्रइन में ईंधन-ऊर्जा की कमी थी। अन्य अनेक उद्योगों की तरह पेत्रोवस्की कारखाने को भी थोड़े राशन से काम चलाना पडता था और योजना का पूरा होना खतरे में था। इसलिए औद्योगिक मैनेजर जहाँ स्वयं अपने स्रोतों से सहायता पाने की कोशिश कर रहे थे, वहाँ हम क्षेत्रीय कमेटी के सदस्य स्थिति का विश्लेषण कर रहे थे और हमें पता चला कि बहुत सारा ईंधन धमन-भट्टी की गैस के रूप में हवा में चला जाता है। यह बात सभी जानते थे, फिर भी निश्चित आँकडा आश्चर्यजनक था : क्षति 5 लाख टन कोयले के बराबर हो रही थी। मैंने मैनेजरों को बुलाया और कठिनाइयों से पार पाने का रास्ता बताया। प्रयत्न जुटाने थे, और धातु प्राप्त करना तथा उनमें पाइप तैयार करना था (रद्दी, निम्नस्तरीय स्टाक और कोटे से अधिक उपज का उपयोग कर) और गैस-पाइप डालनी थी। मैं इकबाल करूँगा कि इस विचार को सबसे पहले कोबोरोव ने हाथ में लिया और उस पर अमल करने के लिए बड़ा प्रयत्न किया जिसके कारण जल्दी ही अमली नतीजे सामने आ गये।

बाद में, कोबोरोव के गुस्सैल स्वभाव से उनके गुण दबने लगे और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केंद्रीय समिति के पास कारखाने से शिकायतें आने लगी। उनको बर्खास्त करने का प्रश्न पैदा हो गया। मैं इस कदम के सख्त खिलाफ था, हालाँकि मैं दोहरा दूँ, कि हमारे व्यक्तिगत संबंधों के सुधार में बडी कमियाँ थीं।

"मेरा खयाल है कि कामरेड कोबोरोव एक मैनेजर के रूप में हमारे लिए बेकाम नहीं हो गये है," मैंने क्षेत्रीय कमेटी के ब्यूरो की बैठक मे कहा, "यह सच है कि उन्होंने गलतियाँ की है और ढुलमुल रहे है जिनके बारे में उन्हें ठीक ही ढंग से बता दिया गया है, मगर मुझे विश्वास है कि गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं।"

हम लोग भर्त्सना से आगे नहीं गये और इसका सुपरिणाम निकला। इलया कोबोरोव ने कई वर्ष और कारख़ाने की प्रधानता की, देश-भर में धमन-भट्टी उत्पादन के विकास में उल्लेखनीय योगदान किया, टेक्नोलोजी के डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की, लेनिन पुरस्कार जीता और समाजवादी श्रम वीर का खिताब हासिल किया। मैंने उनका समर्थन कर ठीक ही किया।

कुछ इसी तरह की घटना जापोरोझये में हुई। नीपर जल-विद्युत केन्द्र के पुनर्निर्माण के प्रधान थे फ्योदोर ज्यार्जियेविच लोगीनोव, जो इस क्षेत्र के सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ थे। वे बड़े प्रतिभाशाली थे। ग्यारह वर्ष की आयु में वे फैक्टरी मजदूर बन गये थे, फिर उन्होंने कोलचक और देनिकिन की सेनाओं के खिलाफ लड़ाई

लड़ी और अभी युवक ही थे कि उन्हें रेजिमेंट की कमान मे दूसरे नम्बर का ओहदा मिल गया। ग्रेजुएट होने के बाद उन्होंने नीपर जल-विद्युत केन्द्र के निर्माण स्थल पर फोरमैन का काम किया और फिर वोक्साना में और वोल्गा के मध्य-वर्ती भाग के जल-विद्युत केन्द्रों मे सुपरिटेंडेंट के पद पर काम किया तथा बाद में चिरपिक में निर्माण-कार्य के मैनेजर का पद संभाला। अत्यंत लंबे कदवाले, दृढ-संकल्प और आत्मप्रेरित व्यक्ति के रूप में उनका व्यक्तित्व बड़ा रंगीन था। वह बड़े रोबदाब से काम लेते और हर किसी की आलोचना सहन नहीं कर पाते।

ऐसे विराट-काल निर्माण-स्थल पर काम करने के प्रधान का सिद्धांत उपयोगी और अपरिहार्य तक होता है, मगर जब "एक-व्यक्तीय-मैनेजर" आलोचना सुनना बंद कर देता है तो बुरा होता है। लोगीनोव कभी-कभी लोगों के साथ दुर्व्यवहार कर बैठते, धैर्य खो बैठते और गरम हो उठते। इस कमजोरी को समझते हुए उन्होंने एक माला तक ले ली थी। उन्होंने मुझे बताया, "मैं इसकी एक-एक गुरिया गिनने लगता हूँ और इससे मेरा गुस्सा शांत हो जाता है।" हमारे बीच कई झपटें हुई और मैं उस समय अभी ही क्षेत्रीय कमेटी के सचिव पद पर नियुक्त होने के कारण, उनसे निपटने में मैं उनको कोई आसान व्यक्ति नहीं पा रहा था।

नीपर जल-विद्युत केन्द्र का पहला बिजली पैदा करने वाला संयंत्र चालू हो चुका था मगर शेप संयंत्रों का चालन रुका हुआ था जिसके फलस्वरूप उक्रइन की कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की केन्द्रीय कमेटी काम में कमियों के बारे में एक प्रस्ताव पास किया। अपनी छपी हुई और भाषणों के रूप में सराहना देखने के आदी लोगीनोव ने केन्द्रीय कमेटी को तार भेजकर पूर्ण असहमति प्रकट की। 1 नवम्बर 1947 को निर्माण-स्थल पर पार्टी की सभा हुई जिसमे मुझे रिपोर्ट देनी थी।

और एक बार फिर जब मैं कमजोरियों के बारे मे बोल चुका और श्रोताओं को विश्वास दिला चुका कि गलतियाँ बिलकुल वास्तविक हैं और काल्पनिक नही है, मैंने उस व्यक्ति का मान गिराने से बचाना ठीक समझा; इसके विपरीत मैंने उन्हें स्थिति से निकलने का सम्मानजनक मार्ग सुझाया। मैंने इस बात पर जोर देने का ध्यान रखा कि क्षेत्रीय पार्टी कमेटी एक कार्यकर्ता के रूप में लोगीनोव को मूल्यवान मानती है और यह परमाश्यक समझती है कि वे इस विराट निर्माण परियोजना के प्रधान बने रहें। मैंने विश्वास प्रकट किया कि लोगीनोव आलोचना पर उचित गौर करके विद्युत केन्द्र का शीघ्र पूरी क्षमता से चालू किया जाना आश्वस्त बनायेंगे। मैंने इस व्यक्ति के सशक्त गुणों को, उनकी विस्तृत जानकारी, को, विराट अनुभव को, सुदृढ संकल्प को और लक्ष्य के प्रति वफादारी को देखा और सराहा।

मैंने अंत में कहा, "लोगीनोव के पद और पार्टी तथा काम के रिकार्ड का

पूर्ण सम्मान करते हुए और हालांकि मैनेजर के रूप में उनकी सत्ता को स्पष्ट ही कायम रखना है और हम उन्हें समर्थन देने को तैयार है, मेरा खयाल है कि हमें उनको न तो परियोजना के निर्माण-कार्य के प्रधान के रूप मे और न एक कम्युनिस्ट के रूप में किसी प्रकार बख्शते हुए, उनकी कमजोरियों की निर्ममतापूर्वक और सर्वागत आलोचना करनी चाहिए। इस प्रकार हम निर्माण परियोजना और स्वय लोगीनोव, दोनों की सहायता कर सकेंगे। इस प्रश्न को किसी और प्रकार से संभालना सम्भव नही है और हमें अन्य किसी हल को ठुकरा देना चाहिए।"

अगर कोई व्यक्ति अपना काम जानता है, लक्ष्य के प्रति वफादार है और सबके फायदे के लिए काम करता है तो उसका समर्थन करने मे कमी नहीं करनी चाहिए। यहाँ एक ही लक्ष्य है : समय पर प्रेरित करना, सही करना और शिक्षित करना, मगर व्यक्ति को टूटने न देना। मुख्य वस्तु है कि उसके सद्गुणों को प्रकट करना और उनका उपयोग करना।

आलोचना और आत्मालोचना की समस्या इतनी गंभीर है कि मेरा खयाल है कि इसका विशेष उल्लेख उपयोगी होगा। यह कोई आकस्मिक नहीं है कि हमारे नये संविधान ने धारा 49 में सोवियत संघ के हर नागरिक के इस अधिकार को स्वीकार किया है कि वह राजकीय और सार्वजनिक संगठनों की कार्यविधि सुधारने के लिए सुझाव भेज सकता है और उनके काम की कमजोरियों की आलोचना कर सकता है। और, उसमे जोर दिया गया है कि आलोचना के कारण किसी को सताने पर पाबंदी है।

मूल कानून की इस धारा को मैं सिद्धाततः महत्वपूर्ण मानता हूँ। अगर हम उच्च संगठन के लिए और मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि सर्वोच्च संगठन उपलब्ध करने के लिए काम कर रहे हैं और सभी स्तरो पर अनुशासन सुदृढ करना चाहते है—श्रम मे, टैक्नोलोजी मे, और योजना में अनुशासन—तो हमे काम का प्रतिबद्ध, बेलौस और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। इससे हमें आवश्यक सामाजिक-राजनीतिक वातावरण उपलब्ध करने में सहायता मिलेगी—ऐसा वातावरण जिसमे बेहतर रीति से, और सक्रिय रूप से और कुशलतापूर्वक काम करने की आकांक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा और काम में ढील-ढाल और गैर-हाजिरी को तथा उपेक्षा और कुप्रबंध, दिखावे और छलपूर्ण आचरण को सहन न करने का वातावरण बनेगा।

किसी अधिकारी को आलोचना से बचाना वास्तव मे उसको हानि पहुँचाना है। जो व्यक्ति आलोचना पर गौर करने योग्य नही रह जाता, वह अच्छा काम करने के योग्य नही होता। अगर उन वर्षों की कार्यकर्ताओं की बैठकों, सम्मेलनों और पूर्णाधिवेशनों की शब्दशः रिपोर्टें पढ़ें तो ऐसी कोई रिपोर्ट नही मिलेगी

जिसमें आलोचना न हो। मेरी इस बात को कई उदाहरणों से देखा जा सकता है :

1947 में उक्रइन की कम्युनिस्ट पार्टी (बो०) की जापोरोझ्ये क्षेत्रीय कमेटी के 16वें पूर्णाधिवेशन में निम्नलिखित विचार-विनिमय हुआ। बहस के दौरान किरोव वर्क्स के पार्टी सचिव, ए० एम० झलीलो, ने भाषण शुरू किया और इतने बढ़ गये कि मुझे हस्तक्षेप करना पड़ा।

कामरेड झलीलो : दुर्भाग्य से हमारे वर्क्स में ऐसे लोग है जो आलोचना मे अत्यधिक जुटे रहते हैं। उदाहरण के लिए, कामरेड जैंत्सोव जो मिकैनिकल विभाग के प्रधान हैं...।

कामरेड ब्रेझनेव : क्या आप आलोचना का मुंह बंद करने का प्रयत्न कर रहे हैं ?

का० झलीलो : नहीं। मगर उन्हे अपनी भी आलोचना करना चाहिए।

का० ब्रेझनेव : तो आप चाहते हैं कि लोग अपनी ही आलोचना कर, आपकी नहीं। (श्रोताओं में शोरगुल)

का० झलीलो : आलोचना और आत्मालोचना, निस्संदेह, वड़ी उपयोगी चीजें, हैं, मगर आलोचना इस तरह नही करनी चाहिए कि जिससे मैनेजर की प्रतिष्ठा कम हो।

का० ब्रेझनेव : इस मामले मे आप बहुत साफ़ नहीं, कुछ अस्पष्ट है, आप जानते ही है...।

का० झलीलो : मेरा अर्थ है कि कुछ साथी पार्टी अनुशासन और पार्टी-नतिकता को ठीक-ठीक समझते नहीं हैं। काम करना चाहिए, फ़साद नही खड़ा करना चाहिए।

का० ब्रेझनेव : तो अगर कुछ फ़साद खडा करने वाले लोग है तो क्या उस मामले को पूर्णाधिवेशन के सामने लाना चाहिए ? ऐसे लोग हर जगह मिलते है और आपका कारखाना कोई अपवाद नही है (श्रोताओं में हँसी)।

का० झलीलो : "फसाद खडा करना हमारे कारखाने मे सबसे बड़ा रोग है।"

का० ब्रेझनेव : "मेरे विचार से, आलोचना की कमी ही खास रोग है। मगर आलोचना से डरने की कोई आवश्यकता नही है, चूंकि इसका अर्थ है मनुष्य का सम्मान करना।"

जो लोग आलोचना को दबाते है, उनके प्रति क्षेत्रीय कमेटी का रुख बिलकुल निश्चित था और साफ शब्दों मे व्यक्त किया गया था। दूसरी ओर, उन रिकार्डो को देखते हुए मैंने नोटिस किया कि मंच से किसी खास व्यक्ति की आलोचना करते समय मैं यह जोड़ना और ज़ोर देना आवश्यक महसूस करता था कि एक कार्यकर्ता के रूप मे मैं उसको मूल्यवान समझता हूँ। कभी-कभी यह कहना आवश्यक होता है।

ज्यार्जी पेत्रोविच कुरगोव द्नेप्रोपेत्रोवस्क में सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्र के लेनिन जिले की जिला पार्टी कमेटी के प्रथम सचिव थे। पहले वे पेत्रोवस्की वर्क्स में इस्पात इंजीनियर थे, अत्यन्त उत्साहपूर्ण और कुशल, मगर शहर पार्टी कमेटी के पूर्णाधिवेशन में, जहाँ उन्होंने रिपोर्ट दी थी, मुझे उनकी सख्त आलोचना करनी पड़ी।

"मैं कामरेड कुरगोव की रिपोर्ट पर कुछ बोलना चाहता हूँ," मैंने कहा। "कामरेड कुरगोव, मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहता, फिर भी मैं शहर पार्टी कमेटी के पूर्णाधिवेशन के सामने अपनी राय प्रकट करना चाहता हूँ। मैं आपकी रिपोर्ट को अत्यन्त हानिरहित समझता हूँ। आपने किसी की आलोचना नहीं की, जिला पार्टी कमेटी के काम में कोई कमी नहीं दिखायी और किसी वर्क्स मैनेजर या पार्टी सेक्रेटरी का नाम नहीं लिया, बल्कि इसके बजाय मनोरंजन और वाचनालय की सुविधाओं पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया है। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि आप यहाँ ऐसे मामलों तक कैसे सीमित रहते हैं। जब मैं केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में बुलाया जाता हूँ, फिर चाहे वह औद्योगिक समस्या पर हो या कृषि समस्या पर या पार्टी के आम जनता में काम पर, मैं शहर और क्षेत्र की स्थिति को यथासम्भव गहरी समझ पाने के लिए कई-कई दिन लगाता हूँ। केंद्रीय कमेटी को दिलचस्पी यह है कि क्षेत्रीय कमेटी का ब्यूरो स्थिति का क्या मूल्यांकन करता है। फिर भी यहाँ पर कामरेड कुरगोव जैसे कसौटी पर खरे उतरे और कुशल कार्यकर्ता, जो सबसे बड़े औद्योगिक जिले की पार्टी कमेटी के मंत्री है, इसके लिए पूरी तरह तैयारी किये बिना शहर पार्टी कमेटी के पूर्णाधिवेशन में चले आ रहे है।"

ऐसे मामलों में जैसा अक्सर होता है, बैठक के अंतराल में कुरगोव अपने आप में सिमटे अकेले खड़े थे; वे रुष्ट और उदास थे। यह देखकर मैं उनके पास गया और बोला :

"क्या मैंने आपको बुरी तरह आड़े हाथों लिया ?"

"आपने सचमुच यही किया।... मैं नहीं चाहूँगा कि किसी के साथ ऐसी बीते।"

"मगर मैंने आपका समर्थन भी तो किया।"

मुझे याद नहीं कि हमने और क्या बातें कीं, मगर दूसरों को यह जताना महत्त्वपूर्ण था कि हमारे संबंध अपरिवर्तित हैं. हाँ, आलोचना में शब्द तीखे थे, मगर फिर भी, वहाँ हम लोग साथ खड़े थे, मित्रतापूर्वक बात कर रहे थे—हम अच्छे साथी बने रहे।

□ □

उन वर्षों के अपने काम का स्मरण करते हुए और जिन अनेक लोगों से मैं मिला, उनको मानस-पटल पर उतारते हुए मैं देखता हूँ कि मैंने उनमें सबसे अधिक मूल्यवान समझा तो वे थी उनकी लगन, स्वतंत्र विचार-शक्ति, कुशलता, नवीनता का गहरा बोध और आम जनता की पहलकदमी और रचनात्मक क्षमता को नोट करने तथा समय पर उसका समर्थन करने की क्षमता। मैं मत प्रकट करना चाहूँगा कि आज भी ये गुण, आप कहना चाहे तो कहें, काम की यह शैली, ही वे चीजें हैं जिनकी हमें सर्वाधिक आवश्यकता है। आर्थिक प्रबंध-व्यवस्था में से जिन चीजों का उन्मूलन करना है वे हैं अत्यधिक सावधानी और लाल फीताशाही, महत्वहीन मामलों में भी उच्चतर अधिकारियों से अनावश्यक अपीलें, और जिम्मेदारी से बचने या उसको दूसरों के कंधे पर डाल देने की प्रवृत्ति। दुर्भाग्य से ऐसी बातें होती रहती हैं।

अपने अमल में मैंने चिंतनशील, साहसी और अगुआ लोगों को समर्थन देने का प्रयत्न किया। मैं जानता था कि इसके सदा स्वयं अपने से सौगुने अच्छे परिणाम होंगे। उदाहरण के लिए, एक समय नीपर के सारे क्षेत्र में धमन-भट्टियों में बाधा थी, रिफरेक्टरी लाईनिंग की कमी की। यह पता लगाने पर कि आई० एफ० कार्पाचोव की अगुआई मे रिफरेक्टरी ईंटे लगाने का काम करने वाली एक टीम सदा निश्चित प्रतिमान से अधिक काम करती है, मैं उनसे मिलने गया और मैंने उन्हे एक भट्टी की तली में काम करते पाया। हम लोग तम्बाकू पीने बैठ गये और बातों में लग गये।

"हम हर तरह की भट्टियाँ तैयार करते हैं," कार्पाचोव ने शुरू किया। "खुले मुंह वाली, गरम करने वाली, तपाने वाली, पकाने वाली भट्टियाँ। उद्योग में अनेक प्रकार की भट्टियाँ हैं। उनमें मे लगभग सभी की अस्तरबंदी (लाइनिंग) करनी पडती है। जिनका मैंने उल्लेख किया है, वे इस मामले मे सबसे कठिन नहीं हैं।"

"इवान फ्योदोरोविच, आपने कितनी धमन-भट्टियों की अस्तरबंदी की होगी ?"

उन्हे गिनती के लिए उँगलियो का सहारा लेना पड़ा : कुशवा, निभनी तागिल, कुजनेत्स्क और जोपोरोभये में...। यहाँ मैं यह भी बता दूँ कि ऐसी बातचीत जल्दबाजी में नही होनी चाहिए और कभी भटपट नही मचानी चाहिए; दूसरे व्यक्ति को यह महसूस नही होना चाहिए कि आपके पास उसके लिए समय नहीं

है और उसे जल्दी आगे बढ़ना चाहिए। तथा मूल मुद्दे तक बात सीमित रखना चाहिए। अगर मैं मजदूरों या सामूहिक खेतिहरों के साथ समान भाषा पाने में अक्सर कामयाब हो जाता था, तो स्पष्ट ही, इस कारण कि वे देखते थे कि उनके मामलों में मेरी दिलचस्पी कोरा दिखावा नहीं है। मैं ऐसे सम्पर्कों को सचमुच पसंद करता था।

इसी तरह ब्यौरेवार तरीके से कार्पाचोव ने मजदूरों के संगठन, उनके द्वारा अपनायी गयी क्रमागत बोनस व्यवस्था और टीम की कमाई की चर्चा की (जो स्वभावत: कीमतों के पुराने पैमाने के अनुसार थी)।

"उदाहरण के लिए कल," उन्होंने कहा, "मैंने अपनी पाली में 154 रूबल कमाये। काम का प्रतिमान है 69 ईंटें और मैंने 204 ईंटें लगायीं।"

"प्रतिमान से तीन गुना अधिक!"

"लगभग," टीम के नेता ने सिर हिलाया। "मगर यह और अधिक हो सकता था। हमारी टीम के तिखोनोव ने 350 प्रतिशत काम किया।"

"मगर काम की किस्म कैसी रही?" मैंने पूछा, "क्योंकि इन भट्टियों में लाइनिंग करने के तकाज़े बड़े ही सख़्त होते हैं।"

मज़दूरों ने एक-दूसरे से आँखों-ही-आँखों में बात की: वे समझ गये कि वे किसी अनाड़ी आदमी से बात नहीं कर रहे हैं। अच्छी तरह अस्तरबंदी का काम न सिर्फ बड़ा श्रमसाध्य समझा जाता है, बल्कि बड़ी नफासत का भी। ईंटों के बीच की दरार आधे मिलीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। रिफरेक्टरी ईंटों की हर तह के बाद चैकर का काम होता है जो एक विशेष औज़ार से उसकी जाँच करता है क्योंकि यहीं पिघली हुई धातु जमा होती है।

"गारे को ठीक मिकदार में लगाना," कार्पाचोव ने कहा, "यही ख़ास रा है। हम पतला गारा इस्तेमाल करते हैं जिसको कन्नी से लगाया नहीं जा सकता। हर ईंट को तीन तरफ से भिगोया जाता है। अनेक कारीगर तीन-तीन बार पानी में डुबोते हैं: हमने इसको एक ही बार में करना सीख लिया है।"

स्वभावत., ऐसी कुशल उपलब्धि पर अधिकार प्राप्त करने के बाद मैंने उनके "राज़" को आम तौर पर स्वीकृत कराने का प्रयत्न किया। मेरे अनुरोध पर सोयूज़तेप्लोस्त्रोल के इंजीनियरों ने आई० एफ० कार्पाचोव को अपनी कार्यपद्धति को स्पष्ट करने में सहायता दी जिसको ज़ापोरोझ्ये और द्नीपरोपेत्रोवस्क क्षेत्रों में अनेक वर्क्स टीमों ने अपनाया।

ऐसे सम्पर्क अनगिनत थे। जब कभी मैं किसी फैक्टरी में या निर्माण-स्थल पर जाता था, मैं वहाँ रुका रहता और लोगों से किसी जल्दबाज़ी बिना बातचीत करता था। मुझे स्मरण आता है कि मैं "गिगान्त" खान में ओवरआल पहन कर नीचे गया, खुदाई के क्षेत्र में चलता चला। और वक़्त का होश खोकर वहाँ मैंने

खान मज़दूरों के साथ पांच-छह घंटे बिताये। इससे मेरे लिए जनता के मनोभाव, उनकी माँगें और आकांक्षाओं को समझना और आसान हो जाता था।

मैं क्षेत्र के सबसे बड़े कारखाने, पेत्रोवस्की वर्क्स, में अक्सर ही जाया करता था। कभी-कभी वर्क्स के प्रबंधक क्षेत्रीय कमेटी के प्रथम सचिव के आने की आशा करते थे तो उचित तैयारियाँ भी करते थे। मगर मुझे जहाँ निमंत्रित किया जाता था, और जहाँ शायद सड़कें तक झाड़-बुहार कर रख दी जाती थीं, मैं वहाँ नही जाता था; मैं वहाँ जाता था, मसलन भट्टियो के पीछे से हिस्से मे, जहाँ चीज़ें कम साफ-सुथरी होती थीं। धातुविशेषज्ञ के रूप में मेरा अनुभव उपयोगी सिद्ध हुआ: अपनी युवा अवस्था में मैं ऐसे ही कारखानों मे स्टोकर-मज़दूर से लेकर इंजीनियर तक, एक-एक सीढी चढ़ा हूँ।

इससे मज़दूरों से मेरे सबंधों की स्थापना मे भी सहायता मिली। मैं एक टीम से बात करता, फिर दूसरी से करता, भट्टीचालकों, धातु गलाने वालों और ढालने वालों से भेंट करता और वर्क्स की कैंटीन में उनके साथ खाना खाता। जो बातें रस्मी वातावरण मे कभी बोली नही जातीं, वे वहाँ दिल से प्रकट होतीं। इसके बाद मैं घंटे-आध घंटे अपने को दफ्तर मे बंद रखता, थीसिसें लिखता और उसी शाम मैं पार्टी के कार्यकर्ता समूह की बैठक मे न सिर्फ सामान्य कामों को पेश करने के लिए, बल्कि उनको उस कारखाने विशेष की ठोस परिस्थितियों से संबद्ध कर लेता:

"साथियो, हम साफ-साफ़ बोलें। मैं जो कुछ सोचता हूँ, वह सभी कुछ मैंने कह दिया है और अब आपकी बारी है कि आप भी सीधे-सीधे मज़दूरो के तरीके से अपनी बात कहें। हम मामलों को कैसे सुधार सकते हैं? बाधा क्या है? आपकी सुरक्षित शक्ति कहाँ है?"

ऐसे मामलों में आलोचना निराधार नही होती थी, बल्कि बड़े ही प्रधान मुद्दे पर केंद्रित और परिणामत: रचनात्मक होती थी।

पाठक पूछ सकते हैं: दूसरों को सिखाना आसान है, मगर स्वयं लेखक ने आलोचना को कैसे झेला? मैं इस प्रश्न का ईमानदारी से जवाब दूंगा: सहन करना आसान नही था; ऐसा हो भी नही सकता था। आलोचना कोई चाकलेट तो है नही कि जिसको पसंद किया जाये। कोई गैर-ज़िम्मेदार और उथले दिमाग वाला व्यक्ति ही निश्चित भाव से शिकायतें सुनेगा, हँस कर टालेगा और तुरंत उनको दूसरे कान से बाहर कर देगा। मुझे एक बार द्नीपरोपेत्रोवस्क में तरुण कम्युनिस्ट लीग के एक क्षेत्रीय सम्मेलन में (फरवरी 1948) इस मामले का विशेष हवाला देना पड़ा। मैंने वहाँ कहा, "मैं जानता हूँ कि हमारे बीच ऐसा कोई व्यक्ति नही है जो यह कह सके: "मुझे जब तक आलोचना की एक खूराक नहीं मिलेगी तब तक मैं नाश्ता करने नही बैठ सकता। मगर सच्चे बोल्शेविकों में आलोचना से उत्साह और स्फूर्ति पैदा होती है और असंतोष से बेहतर काम करने

की आकांक्षा पुष्ट होती है।"

अपने जीवन-काल मे मुझे विभिन्न प्रकार की टीका-टिप्पणियाँ सुननी पड़ी है, और वे कभी-कभी कितनी ही सख्त क्यों न रही हों, मैंने उनके विवेकसंगत केंद्र-बिंदु को ग्रहण करने और गंभीर निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया जिससे अंततः मेरी अपनी भलाई हुई और मेरे काम को लाभ पहुँचा। किंतु ऊपर से की गयी आलोचना को सामान्यतः स्वीकार किया जाता है, मगर जब आलोचना नीचे से आती है तो मामला उलझ जाता है। कभी-कभी किसी क्रुद्ध वक्ता की बातें सुनकर मेरे मन मे उसके विरुद्ध दुर्भावना पैदा हुई: "कैसा मनहूस आदमी है कि इतनी सख्त चोट कर रहा है!" किंतु, मैं पूरी ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे ऐसे शब्द सुनाये जाने के बाद किसी एक भी व्यक्ति के प्रति अपना रुख बदला हो, इसका उदाहरण नही मिलेगा। ऐसी बातों से कोई रुख प्रभावित नहीं हुआ।

मुझे विशेष रूप से याद है कि ओक्तीयाब्रस्की जिला पार्टी कमेटी के सचिव निकोलाइ रोमानोविच मिरनोव ने द्नीपरोपेत्रोवस्क में कैसे आलोचनापूर्ण भाषण दिये थे। वे बडे मौलिक और साहसी व्यक्ति थे जिन्होने विश्वविद्यालय में पाँचवें वर्ष मे पढते समय भी मोर्चे पर जाने की इच्छा प्रकट की, बहादुरी दिखायी, बुरी तरह घायल हुए, मगर फिर भी प्रसन्नचित्त और बढिया खिलाडी बने रहे। उनका बडा विश्वविद्यालयी जिला था और विद्यार्थी सदन का पुनरुद्धार करने का विचार उन्ही का था। हमारे सम्मेलनो मे मिरनोव के भाषण स्पष्ट वक्तृता और समस्याओं की सही स्थापनाओं के लिए उल्लेखनीय हुआ करते थे। जब वे शहर या क्षेत्रीय पार्टी के काम की कमजोरियों के बारे मे बोलते थे, तब वे कूटनीति नही बरतते थे; वे कोई सुहावनी भाषा नही बोलते थे, बल्कि मेरे नाम समेत सभी के निश्चित नाम भी लेते थे।

तो क्या कहा जाता? जब मैंने ऐसे भाषण सुने, तब मुझे कुल मिलाकर न्यायसंगत नही लगे, क्योकि मैं ऐसे प्रश्न शुरू से ही उठाता रहा था और वक्ताओं द्वारा पेश किये गये कामों को पूरा कराने का प्रयत्न कर रहा था। किंतु, मैंने सोचा, अगर वे तब भी इन बातों को उठा रहे हैं तो मेरा उद्देश्य अभी उपलब्ध नही हुआ है। अन्य लोग इन बातों को और अधिक वस्तुगत रीति से देख सकते हैं। इसके अलावा मेरे सामने यह स्पष्ट था कि मिरनोव समस्या सुलझाने में सहायता करना चाहते है और उन्हें काम की चिंता थी—उनकी आलोचना और किसी बात से प्रेरित नहीं थी। इसीलिए उनके प्रति मेरा रुख न केवल अच्छा बना रहा, बल्कि, मैं कहूँगा, मैत्रीपूर्ण भी बना रहा—द्नीपरोपेत्रोवस्क मे और बाद मे मास्को मे भी जहाँ उन्होंने एक हवाई दुर्घटना मे दुखद मृत्यु तक सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय कमेटी के स्टाफ़ मे काम किया।

उदाहरणार्थ, 1948 मे एक क्षेत्रीय पार्टी सम्मेलन मे आलोचना के बारे मे मैंने

जो कुछ कहा, उसको मैं यहाँ (शब्दशः रिकार्ड से) उद्धृत करना चाहूँगा।

कामरेड ख्रेशनेव : "मैंने सभी भाषण बड़े ध्यान से सुने और मैं यह कहते हुए गलती नहीं करूँगा कि जो आलोचना की गयी, उससे हमारे क्षेत्रीय पार्टी संगठन के विभिन्न पदाधिकारियों और विभिन्न लोगों में कुछ हद तक बदमज़गी पैदा हुई है। मैं कहूँगा कि अनेक मामले में मैंने आलोचना को अपने पर लागू होते स्वीकार किया है और मेरा मन खिन्न हुआ है। मगर हमें इस आलोचना से अपने लिए आवश्यक निष्कर्ष निकालने चाहिए। हम बोल्शेविकों में, इस असंतोष, इस आंतरिक चिंता-भाव से, बदले में, पहलक़दमी पैदा होनी चाहिए, अपने काम में उत्साह जगना चाहिए और यथासंभव शीघ्र उन गलतियों को सुधारने की आकांक्षा उत्पन्न होनी चाहिए जिनकी यहाँ आलोचना की गयी है। मैंने अपने लिए यही निष्कर्ष निकाला है।"

यह नहीं सोचना चाहिए कि आलोचनात्मक टीका की इफ़रात होने का अर्थ है कि स्थिति बुरी है। अनुपात उलट होता है : जितनी अधिक आलोचना खुले में की जायेगी, स्थिति उतनी ही बेहतर बनेगी। द्नीपरोपेत्रोवस्क क्षेत्र के मज़दूरों ने राष्ट्रीय अर्थतंत्र के पुनर्वास और विकास की चौथी पंचवर्षीय योजना सफलता-पूर्वक पूरी की। हमारे क्षेत्र में खेती का क्षेत्रफल युद्ध के पहले के आँकड़ों से अधिक बढ़ गया। पेत्रोवस्की, ज़ेरझिन्स्की तथा अन्य अनेक कारखानों ने युद्ध के पहले के उत्पादन को मात कर दिया। क्रिवोयरोग और निकोपोल की खानें फिर खुल गयीं और देश के दक्षिण और मध्यवर्ती भाग में लौह-इस्पात उद्योग को कच्चा लोहा सप्लाई कर रही थीं। नीपर क्षेत्र पर क्रूरतम युद्ध ने जो घाव किये थे, वे भर गये थे।

कहा जा सकता था कि 1950 तक राष्ट्रीय अर्थतंत्र के पुनर्जन्म का चरण पूरा हो गया था। क्षेत्रीय कमेटी के प्रथम सचिव को जिन समस्याओं पर ध्यान देना था, उनकी सूची कतई समाप्त नहीं हुई थी, मगर नये और दिलचस्प प्रश्न उभरते चले आ रहे थे। मुझे याद आता है कि शेवचेंको थियेटर के अभिनेता मेरे निवास पर दो बजे सुबह तक रहे, यह स्पष्ट करते हुए कि उनके रोमांचीय कार्य-क्रम में शास्त्रीय नाटक क्यों नहीं है और यह शिकायत करते रहे कि उनके पास रंगमंच की साज-सज्जा और वेष-भूषा की सामग्री की कमी है। मुझे ऐसे सारे मामलों से निपटना पड़ता था और सहायता देनी होती थी। 1949 में हमारा क्षेत्र अखिल-सोवियत संघ जल-क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का केन्द्र बना और उनके लिए भी बड़े प्रयत्नों की आवश्यकता पड़ी, मगर मुझे कहना पड़ेगा कि ऐसे प्रयत्न बोझ नहीं बने, बल्कि उसके विपरीत, अत्यंत संतोषप्रद हुए। इसका अर्थ था कि ऐसे कामों का समय आ गया था और लोगों को संस्कृति और कला की आवश्यकता थी—और यह भी पुनर्जन्म का चिह्न था। जब मुझे वक़्त मिलता, मैं स्टेडियम जाता और वहाँ पुराने प्रतिद्वंद्वियों, जापोरोझ्ये और द्नीपरोपेत्रोवस्क

की क्रमशः मेटलर्ज और स्टाल फुटवाल टीमों के खेल विशेष दिलचस्पी से देखता और साफ कहूँ, मैं दोनों के लिए तालियाँ बजाता।

मेरे दफ्तर में अब अधिकाधिक रूप से अपनी परियोजना का नक्शा लेकर स्थापत्यकार, अपने रेखाचित्रों के साथ कलाकार, गैरपेशावर कला-निर्माता संस्थानों और विश्वविद्यालयों के प्रधान, खेलकूद के उस्ताद, वैज्ञानिक, अध्यापक और डॉक्टर आने लगे। मैं यहाँ यह भी सूचना दे दूँ कि मैं कभी-कभी चेकोस्लोवाकिया के प्रमुख कम्युनिस्ट नेता, क्लीमेंट गोटवाल्ड, से भी भेंट करता था—हम मैत्रीपूर्ण बातचीत में घंटों बिताते; उन्होंने मुझे समाजवादी चेकोस्लोवाकिया के विकास की योजनाएँ बतायीं; मैं दोनों देशों के जनगण के बीच घनिष्ठ मैत्रीसंबंधों की बात करता और याद करता कि मैंने प्राग के मुक्ति-युद्ध में भाग लिया था।

आज समाजवादी देशों के मित्रों, विकासशील देशों के अतिथियों और पूँजीवादी राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ क्षेत्रीय पार्टी कमेटियों के नेताओं का भेंट करना अधिकाधिक रूप से अमली काम बनता जा रहा है और वे नेता स्वयं भी अक्सर ही विदेश जाया करते हैं। इससे पार्टी और देश के लिए उनके काम को अतिरिक्त महत्व प्राप्त होता है। मैंने अपने अनुभव से यह समझा है कि क्षेत्रीय कमेटी के प्रथम सचिव पर काम कितना निर्भर करता है और कितना जटिल तथा कठिन होता है, और मैं कहूँगा कि हमारी पार्टी में वह पद बहुत ही महत्वपूर्ण है।

जिस रास्ते को मैं पार कर आया हूँ, उस पर पीछे मुड़कर देखने और पूर्णतया नीपर क्षेत्र में लगाये गये वर्षों को याद करने के बाद, मैं कह सकता हूँ कि सशक्त उद्योगों और समृद्ध खेतों की चमत्कारी भूमि के साथ मुझे एक बार फिर अपने संबंध नये होते महसूस हो रहे है। उस सुन्दर प्रदेश के मजदूरों, सामूहिक खेतिहरों, निर्माताओं, इंजीनियरों, कृषि-विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों के साथ काम करके मुझे हर्ष हो रहा है।

एक रूसी कहावत है कि, "जहाँ पैदा हुए, तुम उसी के हुए।" यह बात आज पुरानी पड़ गयी हो सकती है। लाखों-करोड़ों सोवियत देशभक्त, पार्टी के आह्वान पर, देश के रूपांतरण और कम्युनिज्म के निर्माण में सक्रिय भूमिका अदा करने के लिए अपना प्रदेश छोड़ देते हैं। और वे नये प्रदेश जहाँ वे आ बसते है, जहाँ वे कठिनाइयाँ और जीतें दोनों ही भोगते है, जहाँ वे काम करते हैं और अडिग रूप से प्रयत्न लगाते हैं उनको विशेष रूप से प्यारे हो जाते हैं।

और मैं भी जब कभी अपने जन्म-प्रदेश में जा पाता हूँ, तो न केवल नीपर तट के सौन्दर्य की सराहना करता हूँ, बल्कि याद भी करता हूँ कि जब मैं वहाँ था तभी सांस्कृतिक प्रासाद बना था और उन फैक्टरियों, विद्युत केन्द्रों, खानों और शहर की सड़कों तथा सामूहिक खेतिहर ग्रामों—सभी में मेरे काम, मेरे विचार, मेरे मनोभावों और निद्राहीन रातों का कोई-न-कोई हिस्सा है...।